

भ्रावत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो यहचाने, वी परम को याये

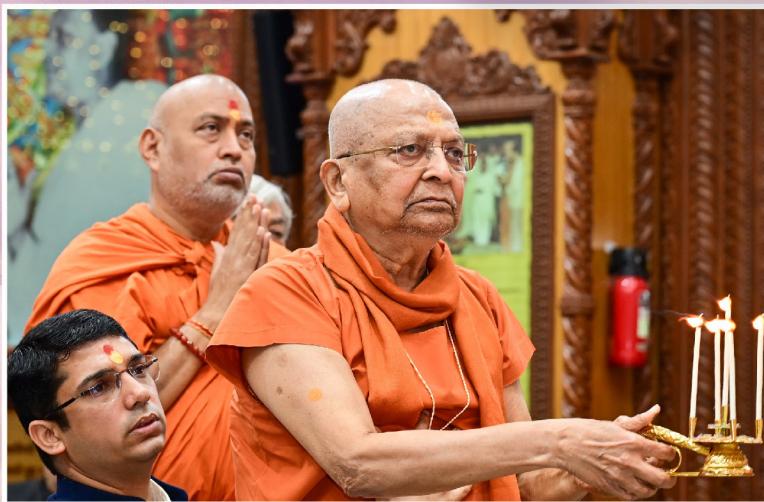
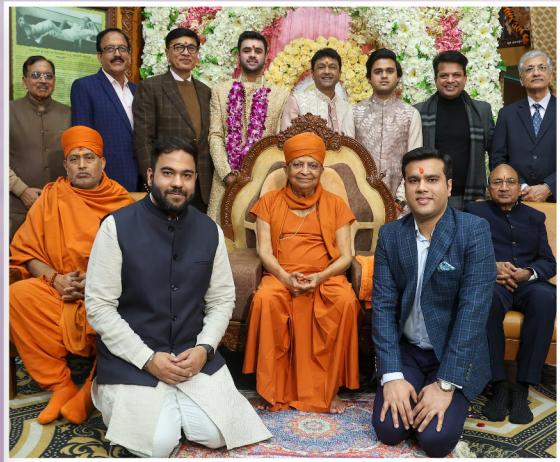


श्रीराम जन्मभूमि मंदिर, अयोध्या

निष्पात्मानं धृतरूपं देहन्ययिन्द्रक्षणम् । विभाष्य तेन कर्तव्या श्रीजी भक्तस्तु सर्वदा ॥
महाप्रभु श्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

3 फरवरी – पाटोत्सव निमित्त पूजन विधि...





आरती एवं अन्नकूट थाल





3 फरवरी 2024—गुरुहरि काकाजी महाराज के साक्षात्कार की 72वीं जयंती एवं दिल्ली-अशोकविहार मंदिर का 30वाँ पाटोत्सव

जंग खेल के बापा ने एक योजना नई गढ़ी थी, जिसमें निज सर्वस्व की आदृति ‘काका’ तुमने दी... काका तेरी कुर्बानी शब्दों में न समाये, इतिहास गुणातीत समाज का तुम बिन लिखा न जाये...

सन् 1997 की 3 फरवरी को गुणातीत स्वरूपों की हाजिरी में, दिल्ली मंदिर के कल्पवृक्ष हॉल में जब पाटोत्सव विधि दौरान उपरोक्त भजन गाया गया, तब गुरुहरि काकाजी महाराज द्वारा गुणातीत समाज के लिये दिये गये बलिदान की स्मृति करके हर एक की आँख में आसूँ थे और... आज गुरुहरि काकाजी महाराज, गुरुहरि पप्पाजी महाराज और ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्यामीजी के ही संकल्प से गुणातीत समाज में सुहृदभाव-एकत्वभाव दृष्टिगोचर है।

सो, हे प्रभु! हम आपके नादान बालक हैं, हम कहीं अपनी सोच, मान्यताओं, वृत्तिओं के आवेग में आपके दिखाये मार्ग से भटक न जायें, इसलिये आप सदैव ‘हम’ से हमारी रक्षा करना। ऐसी भावना के साथ 3 फरवरी 2024, शनिवार को प.पू. गुरुजी की निशा में गुरुहरि काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन एवं मंदिर का पाटोत्सव मनाने के लिये सुबह करीब 10 बजे कल्पवृक्ष हॉल में सेवक पू. अभिषेक ने महापूजा आरंभ की। पूजनविधि के समय संतों और सेवकों ने श्री ठाकुरजी एवं गुणातीत स्वरूपों की मूर्तियों के भाल एवं चरणारविंद का चंदन से पूजन करके फूलों के हार अर्पण किये तथा प.पू. गुरुजी में विराजमान प्रत्यक्ष प्रभु का भी पूजन किया। तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी ने भी संतों, सेवकों एवं कई हरिभक्तों को भी चंदन का ठीका लगाया।

दिल्ली मंदिर के आत्मीय सत्यंगीबंधु पू. अनुज-पू. अनिता दुरेजाजी की सुपुत्री सौ. श्रेया एवं पू. मनीष-पू. सुचित्रा साबूजी के सुपुत्र चि. श्रेय का 14 फरवरी को चंडीगढ़ में विवाह संपन्न होना था, सो श्री ठाकुरजी के आशीर्वाद दिलवाने हेतु उन्हें महापूजा में बिठाया गया। श्री ठाकुरजी को नैवेद्य अर्पण करने के बाद सेवक पू. अभिषेक ने निम्न संकल्प करके धुन कराई—
हे महाराज, हे स्वामी, हे काकाजी महाराज, हे गुणातीत स्वरूपों...

आज गुरुहरि काकाजी महाराज के साक्षात्कार की 72वीं वर्षगांठ तथा दिल्ली मंदिर के पाटोत्सव के मंगल अवसर पर परम पूज्य गुरुजी की निशा में विशिष्ट महापूजा कर रहे हैं। साथ ही आगामी 14 फरवरी को पूज्य मनीष साबूजी के सुपुत्र चि. श्रेय का विवाह समारोह पूज्य अनुज दुरेजाजी की सुपुत्री आयु. श्रेया के साथ चंडीगढ़ में आयोजित है। वहाँ सभी भक्तगण नहीं जा पाएंगे, अतः आज श्री ठाकुरजी व गुणातीत स्वरूपों की दिव्य हाजिरी में, परम पूज्य गुरुजी व दिव्य भक्त समाज के समक्ष वे मंगल फेरे लेंगे। दोनों परिवारों ने मिलकर, आज भक्त समाज के लिए विशेष प्रसाद का भी आयोजन किया है। इनका विवाह समारोह 14 फरवरी को आनंदमय और सुगमता से हो जाये और नव दंपति परम पूज्य गुरुजी व परम पूज्य दीदी से संबंध दृढ़ करके तन, मन, धन और आत्मा से सदा सर्वथा सुखी, संपन्न और समृद्ध रहे यह प्रार्थना करते हैं।



गुरुहरि काकाजी महाराज ने आशीर्वाद बरसाये हैं कि सारे गुणातीत समाज में दिल्ली मंदिर अनोखा होगा! तो, आपके बल से गुरुहरि काकाजी महाराज के सिखाये संप, सुहृदभाव और एकता के सूत्र को जीवन में उतार कर, सर्वदेशीयता के राजमार्ग पर चलकर उनके आशीर्वाद को साकार करने हम निमित्त बनें...

धुन के बाद गुरुहरि काकाजी महाराज के साक्षात्कार दिन निमित्त उन्हीं के स्वरूप प.पू. गुरुजी को सभी की ओर से पू. श्रेय ने हार अर्पण किया और प.पू. दीदी को पू. श्रेया ने हार अर्पण किया। तत्पश्चात् पू. श्रेय-पू. श्रेया ने एक-दूजे को वरमाला पहना कर, महापूजा के सात फेरे लिये-सात प्रदक्षिणा तथा आरती करी।

3 फरवरी की सभा जारी रखते हुए पू. राकेशभाई एवं सेवक पू. विश्वास ने ‘योगीबापा को करोड़ों धन्यवाद, काकाजी हमें भेंट दिये...’ भजन प्रस्तुत किया। गुरुहरि काकाजी महाराज के समय से मंदिर के आत्मीय सत्संगी, सेवक पू. अभिषेक के पूर्वाश्रम के पिता पू. बच्छराजजी के छोटे बेटे पू. हृदय का जन्मदिन था, सो प.पू. गुरुजी ने उसे स्मृति भेंट दी और फिर सबको आशीर्वाद देते हुए कहा— काकाजी का साक्षात्कार दिन, बड़ा मंगलकारी दिन! इसी मंगलकारी दिन एक मंगल कार्य संपन्न हुआ... आज काकाजी का साक्षात्कार दिन, पण्डित इसे गुणातीत समाज का स्थापना दिन कहते थे। क्योंकि तब registered रूप में एक समाज की स्थापना हुई, ये समाज recognize हुआ। तब ये समाज के members भी बढ़ते गये और आज दिल्ली के केन्द्र के भगत लोग भी इकट्ठे हुए बज़र आते हैं। तो, आज के दिन मेरी ये भावना है कि ये समाज की शोभा किस तरह बढ़े, जन समाज के अंदर recognize-बढ़िया समाज के रूप में कैसे बने, उसके लिये हम सब का ऐसा वर्तन, व्यवहार और विचार होना चाहिये। इसमें आप सबके सहयोग की में अपेक्षा रखता हूँ। अभी 3 फरवरी के अन्नकूट दर्शन और थाल-भोग लगा कर, फिर हम प्रसाद लेने जायेंगे। अन्नकूट में व्यजनों का भोग तो लगेगा ही, लेकिन जैसे हर बार कहते हैं कि हमारे हठ, हमारा मान, हमारी ईर्ष्या, हमारी क्षुल्लक वृत्तियों का हम भोग ही लगा दें, प्रभु को समर्पित कर दें और pure होकर जायें, यही सच्चा अन्नकूट कहा जाये। इसके लिये हम मानसिक रूप से sincerely prepared हैं, अपने आपको तैयार रखें, ये मेरी अरज हैं...

प.पू. गुरुजी के आशीर्वाद के बाद, पू. राकेशभाई, पू. हृदय वर्मा, पू. चिराग मोन्डे, पू. सेवक विश्वास एवं पू. पुण्यम् ने थाल गाकर अन्नकूट का भोग लगाया। तत्पश्चात् मंदिर के पीछे के प्रांगण में प्रसाद लेने गये। इस प्रकार 3 फरवरी का उत्सव पूरा हुआ।

इस बार प.पू. गुरुजी अपने आशीर्वचन में बहुत ही कम शब्दों में बहुत कुछ कह गये, मानो हमें सतर्क कर गये! इतने वर्षों में उन्होंने कभी भी किसी से ‘अपेक्षा’ रखने जैसी बात नहीं की। गुरु रथान पर होते हुए भी हमेशा एक सेवक की अदा से ‘प्रार्थना’ करी है। लेकिन, अब उनकी हम पर ये अतिशय कृपा कही जायें कि वे हमसे कोई ‘अपेक्षा’ रख रहे हैं। तो, उनकी सभी ‘अपेक्षाओं’ पर हम खरे उतर पायें, ऐसी भगवान खामिनारायण एवं सभी गुणातीत स्वरूपों के श्रीचरणों में नमस्तक होकर प्रार्थना करते हैं...

22 जनवरी—य.पू. गुरुजी की निशा में श्रीराम मंदिर मूर्ति ग्रतिष्ठा उत्सव...



बजाओ ढोल स्वागत में, अबध में राम आये हैं...





500 वर्ष के बनवास उपरांत भगवान श्री राम जन्मभूमि पर उनकी मूर्ति की ग्राण प्रतिष्ठा का सुअवसर

गंगा बड़ी न गोदावरी, तीरथ बड़ा न प्रयाग।

सबसे बड़ी अयोध्या नगरी, जहाँ राम लिये अवतार॥

भावार्थ: गंगा व गोदावरी एवं तीर्थों के राजा प्रयाग का अपना महत्व है, किन्तु सबसे पुण्यकारी है वह अयोध्या नगरी, जहाँ श्रीहरि विष्णु ने श्री राम के रूप में अवतार लिया...

भगवान श्री राम की जन्मभूमि अयोध्या उत्तर प्रदेश राज्य की सबसे प्रसिद्ध नगरी है। मथुरा-हरिद्वार, काशी, उज्जैन, कांची और द्वारका की तरह अयोध्या को भी हिंदुओं के प्राचीन सात पवित्र स्थलों यानी सप्तपुरियों में से एक माना गया है। अर्थर्वेद में अयोध्या को ईश्वर की नगरी कहा गया है, जिसकी तुलना स्वर्ग से की गई है। ऐसा माना जाता है कि यह शहर त्रेता युग से अस्तित्व में है, जो हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान के अनुसार एक प्राचीन युग है।

धार्मिक ग्रंथ रामायण के अनुसार अयोध्या की स्थापना मनु ने की थी, जो कई वर्षों तक रघुवंशी राजाओं की राजधानी भी रही। सरयू नदी के पूर्वी तट पर बसे अयोध्या नगरी का प्राचीन नाम साकेत है। ऐसा भी माना जाता है कि देवताओं ने खुद इस शहर की रचना की थी। स्कंद पुराण के अनुसार अयोध्या नगरी भगवान विष्णु के सुदर्शन चक्र पर बसी हुई है। धार्मिक कथाओं के अनुसार भगवान विष्णु ने ब्रह्मा, मनु, देव शिल्पी विश्वकर्मा और महर्षि वशिष्ठ को अपने रामावतार के लिए भूमि चयन करने के लिए भेजा था, जिसके बाद भगवान विश्वकर्मा ने इस नगर का निर्माण किया। इसे मोक्षदायिनी एवं हिन्दुओं की प्रमुख तीर्थस्थली के रूप में भी माना जाता है। अयोध्या पर राज करने वाले राजा दशरथ अयोध्या के 63वें शासक थे। मध्यकाल में अयोध्या नगरी मगध के मौर्यों से लेकर गुप्तों और कन्नौज के शासकों के अधीन रही। फिर महमूद गजनी के भांजे सैयद सालार ने तुर्क शासन की स्थापना की थी। तत्पश्चात् बाबर के सेनापति ने अयोध्या में आक्रमण किया और यहाँ मसिजद का निर्माण करवाया।

भगवान राम की जन्मभूमि अयोध्या में कई मंदिर हैं। इसी के निकट छपिया गाँव में सर्वोपरि भगवान स्वामिनारायण का भी जन्म हुआ। कुछ समय के पश्चात् उनका परिवार अयोध्या रहने आया। तब घनश्याम के रूप में भगवान स्वामिनारायण हनुमान गढ़ी, कनक भवन इत्यादि में श्री रामजी की कथा सुनने जाते थे। सो, भगवान स्वामिनारायण के आश्रित भक्तों के लिये भी उनका यह प्रासादिक स्थल अत्यंत महत्वपूर्ण है और वे अयोध्या-छपिया के दर्शन करने जाते हैं।

1992 के अक्तुबर महीने में ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी, हरिधाम के संतों एवं मुक्तों के साथ तथा प.पू. गुरुजी भी दिल्ली के संतों व मुक्तों के साथ अयोध्या-छपिया गये थे। तब टेन्ट में विराजमान श्री रामलला की मूर्ति के समक्ष उन्होंने संकल्प करके धुन कराई थी कि जल्द ही यहाँ राम मंदिर



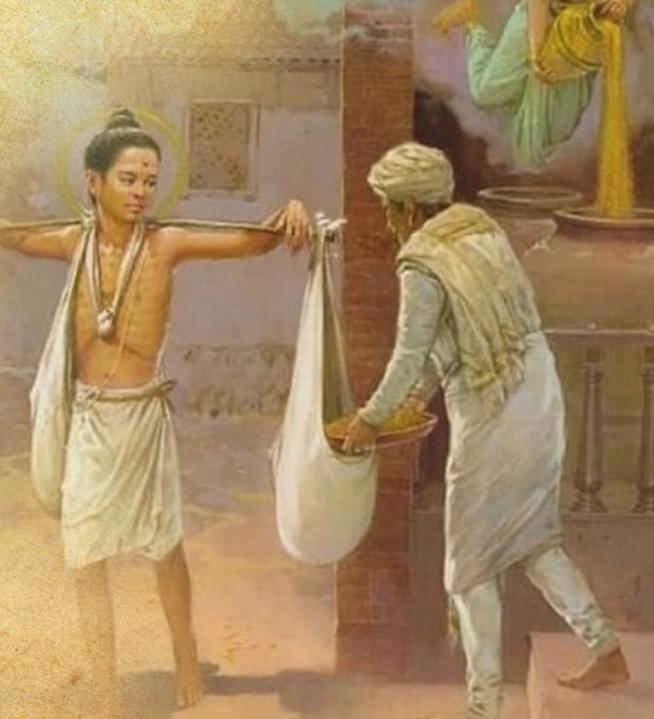
बन जाये। जैसे कि गुरुहरि काकाजी महाराज अकसर कहते – गुणातीत का संकल्प यानि महाकाल! तो, संतों-मुक्तों की शुद्ध भावना को पंख लगे...

दरअसल, श्री राम हर भारतीय के तन, मन, दैनिक क्रिया कलापों, सांसों में ऐसे रचे बसे हैं कि उनके प्रति सबको काफ़ी विश्वास और श्रद्धा है। घर की सुबह में, शिष्टाचार भेंट में, गलती या अफसोस में उनका नाम लिया जाता है, उनकी महिमा अपरंपार है। इसलिये अयोध्या में राम मंदिर के लिए लगभग पांच शताब्दियों से हजारों श्रद्धालुओं के बलिदान का जो संघर्ष चल रहा था, उस जन्मभूमि पर 9 नवंबर 2019 को supreme court की मोहर लगी और 5 अगस्त 2020 को राम मंदिर के निर्माणारंभ हेतु भूमि पूजन हुआ और वो शुभ दिन भी आ गया जब अयोध्या में संतों, भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्रभाई मोदी एवं गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति में सोमवार, दिनांक 22 जनवरी 2024 - पौष शुक्ल द्वादशी विक्रम संवत् 2080 को प्रभु श्री राम के बाल रूप की प्राण-प्रतिष्ठा भावपूर्ण और दिव्यता से संपन्न हुई। पूरे देश में इसका हर्षोल्लास था। प.पू. गुरुजी की आझा से मंदिर के प्रांगण में भी इस मंगल अवसर पर अयोध्या मंदिर के प्रारूप के साथ राजा श्री राम और वनवासी श्री राम की चित्र प्रतिमा की कलात्मक झाँकी सजाई थी। जिसमें ‘अक्षत कलश’ भी जनमानस के दर्शनार्थ रखा हुआ था। सारा वातावरण श्री राम के भजनों से गूँज रहा। करीब एक सप्ताह से लगातार आ रहे भक्तों को पूजा के लिए पवित्र अक्षत, प्रसाद, ‘जय श्री राम’ का बैज, कैलेंडर इत्यादि वितरित किये गये। पूरे मंदिर को विशेष प्रकाश व्यवस्था से सजाया गया था।

22 जनवरी की सुबह पू. मैत्रीशीलस्थामी ने प.पू. गुरुजी की नित्य पूजा को विशेष रूप से सजाते हुए, श्री रामजी की मूर्ति सहित उनके नवनिर्मित मंदिर का model रखा था। पूजा करने के उपरांत प.पू. गुरुजी कार्यालय में विराजमान हुए और उनके सान्निध्य में सभी ने LED Screen पर प्राण प्रतिष्ठा विधि का जीवंत प्रसारण देखा। शालों और रामायण में भगवान राम को श्याम वर्ण का बताया गया है। इसी कारण से राम मंदिर के गर्भगृह में पाँच वर्षीय श्री रामलला की श्याम रंग की मूर्ति को स्थापित किया गया। काले पत्थर से बनी इस मूर्ति में रामलला की छवि ऐसा आकर्षण है कि मानो साक्षात् भगवान राम के बाल अवतार के दर्शन हो रहे हों और प.पू. गुरुजी को भी इतना उत्साह था कि वे बार-बार ‘जय श्री राम’ का जयकारा लगाते और उनके पीछे-पीछे हरिभक्त जयकारा लगाते। प्राण प्रतिष्ठा संपन्न होने के बाद प्रसाद लेकर सबने प्रस्थान किया और उसी दौरान मंदिर के बाहर भी भंडारा किया गया। रात को भी समग्र मंदिर दीपमाला व रोशनी से जगमगा रहा था। इस अविरमणीय ऐतिहासिक दिन को मानो सच्ची दीवाली मानते हुए, प.पू. गुरुजी की निशा में भक्तों ने आतिशबाजी करके आनंद व्यक्त किया। सच, वर्तमान समय में जिन-जिन्होंने यह घटना घटित होते हुए देखी है, वे सभी इस इतिहास के साक्षी कहे जायेंगे और प्रगट के उपासक तो खूब भाग्यशाली कहे जायें कि खर्णाक्षरों से लिखित इन क्षणों का दिव्यानंद प्रभु के सान्निध्य से अविरमणीय हो गया...



14 जनवरी –
मकर संक्रांति पर्व...



नारायण हरे, सच्चिदानन्द प्रभो!



प्रगट प्रभु के दिव्य सान्निध्य में मकर संक्रांति उत्सव...

मकर संक्रांति एक हिंदू त्योहार है, जो भारत और नेपाल में मनाया जाता है। मकर संक्रांति के दिन ग्रहों के राजा सूर्य देव धनु राशि से निकल कर मकर राशि में प्रवेश करते हैं। यह प्रति वर्ष हिंदू लूनी-सौर कैलेंडर के अनुसार 14 या 15 जनवरी को होता है। पूरे वर्ष में कुल 12 संक्रान्तियाँ होती हैं, लेकिन मकर संक्रांति महत्वपूर्ण मानी जाती है। पौष मास में जब सूर्यदेव उत्तरायण होकर मकर राशि में प्रवेश करते हैं, तो इस अवसर को देश के अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग त्योहार के रूप में मनाया जाता है। जैसे मकर संक्रांति, ताङ पोंगल, उझावर तिरुनल, उत्तरायण, उत्तरैन, माघी संगरांद, शिशुर सेंक्रात, माघी, भोगाली बिहु, ख्रिचड़ी, पौष संक्रान्ति, मकर संक्रमण इत्यादि।

सामान्यतः भारतीय पंचांग की सभी तिथियाँ चंद्रमा की गति को आधार मानकर निर्धारित की जाती हैं, लेकिन मकर संक्रांति को सूर्य की गति से निर्धारित किया जाता है। मकर संक्रांति शीतकाल के अंत और लंबे दिनों की शुरुआत का संकेत करता है।

आज के दिन गंगाजी, राजा भगीरथ के पीछे-पीछे चलती हुई सागर में समा गई थी। जहां यह मिलन हुआ उस स्थान को ‘गंगासागर’ के नाम से जाना जाता है। गंगा ही एक ऐसी नदी है जो सागर में समा जाने के बाद भी अपना नाम नहीं छोती... आज ही के दिन ‘दानवीर कर्ण’ ने भी अपना कवच-कुंडल यानि अपना सर्वस्व दान कर दिया था। सो, इस दिन जप, तप, दान, स्नान, श्राद्ध, तर्पण आदि धार्मिक क्रियाकलापों का विशेष महत्व है। ऐसी धारणा है कि इस अवसर पर दिया गया दान सौ गुना बढ़कर पुनः प्राप्त होता है। कई क्षेत्रों में लोग पतंग उड़ाते हैं, पवित्र नदियों में स्नान करते हैं और सूर्य देव को प्रार्थनाएँ अर्पित करते हैं। यह परिवार के संगठन, गुड़, तिल और विभिन्न अनाजों से बने परंपरागत मिठाइयों का भोजन करने और उपहारों का आदान-प्रदान करने का समय भी होता है। साथ ही मकर संक्रांति के दिन ही धनुर्मास का समापन होता है और एक मास से जिन शुभ कार्यों पर रोक लगी होती है, वो फिर से शुरू हो जाते हैं। यह त्योहार अंधेरे से प्रकाश की ओर चलने की प्रेरणा देता है और atmosphere में नई चेतना लाता है।

मकर संक्रांति का स्वामिनारायण संप्रदाय में भी विशेष महत्व है। मकर संक्रांति से पूर्व धनुर्मास वह महीना है, जब भगवान् स्वामिनारायण ने बाल घनश्याम के रूप में अपने पिता धर्मदेव से वेदों, अठारह पुराणों और कई अन्य हिंदू धर्मग्रंथों का अध्ययन किया था। भगवान् कृष्ण ने बलरामजी के साथ धनुर्मास में ही सांदीपनि ऋषि के संरक्षण में अध्ययन किया था। उन्होंने सांदीपनि के गुरुकुल



में 64 दिनों तक अध्ययन किया और भगवान् कृष्ण ने कुल 64 विद्याएँ सीखीं। हालाँकि स्वयं पूर्ण पुरुषोत्तम होने के नाते न तो भगवान् श्री स्वामिनारायण और न ही भगवान् श्री कृष्ण को अध्ययन करने की आवश्यकता थी, लेकिन उन्होंने यह अध्ययन मनुष्य को सिखाने के लिए किया कि कितने भी महान्, बुद्धिमान्, देवता कोटि के या भगवान् बन कर पूजे जायें, लेकिन न्यून बन कर अपनी आखिरी सांस तक किसी से भी, किसी भी प्रकार का ज्ञान प्राप्त करना नहीं छोड़ना चाहिए।

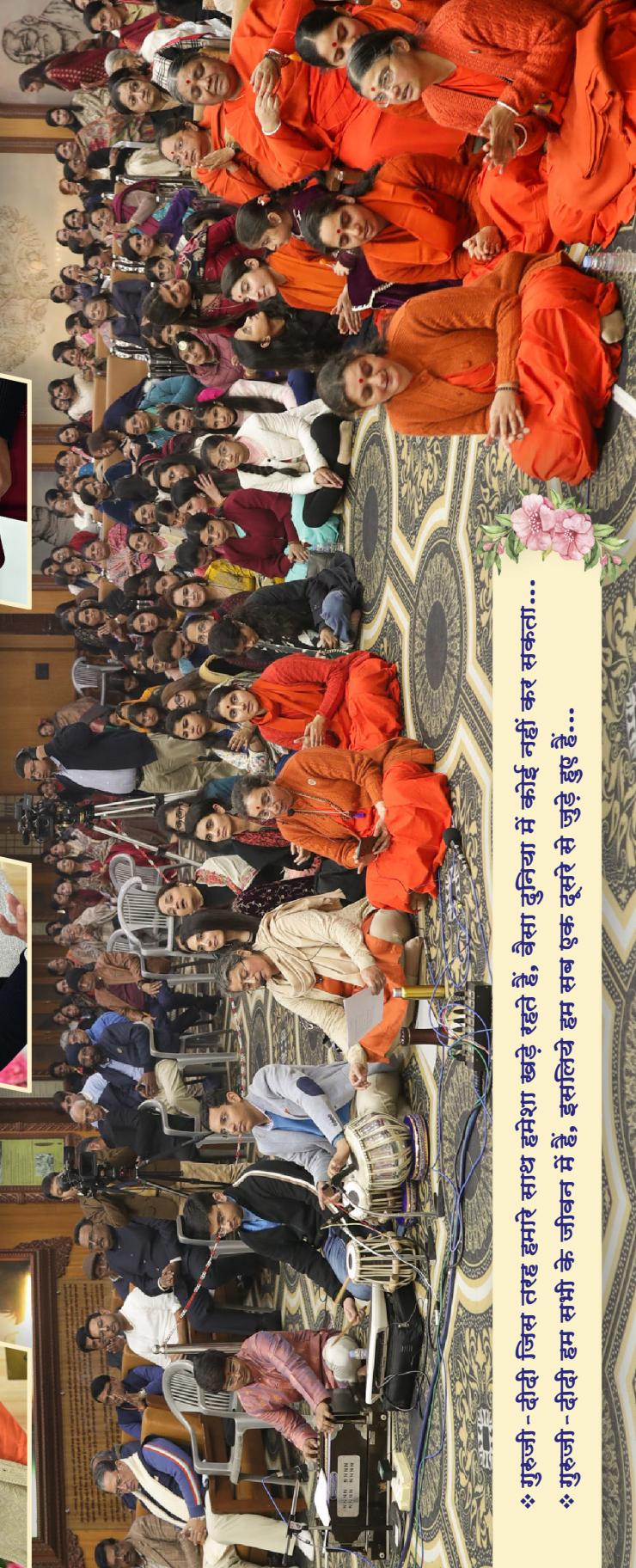
इसी प्रकार, भगवान् स्वामिनारायण ने नीलकंठ वर्ण के रूप में ‘नारायण हरे सच्चिदानन्द प्रभो’ की अलख जगा कर स्वयं घर-घर जाकर भिक्षा माँग कर, त्यागाश्रम के मार्ग पर चलते अपने संतों को मार्गदर्शन दिया - आज्ञा दी कि भले ही मंदिरों, आश्रमों या संस्थाओं में कितनी ही आमदनी या समृद्धि क्यों न हो जाये, परंतु साधु यह कभी न भूले कि उसे भिक्षा पर ही निर्वाह करना है। श्रीजी महाराज के इस सिद्धांत पर चलते हुए स्वामिनारायण संप्रदाय के संत मकर संक्रांति के दिन अवश्य भिक्षा माँगने के लिये जाते ही हैं।

पिछले कई वर्षों से प.पू. गुरुजी के साथ पू. सुहृदस्वामीजी एवं संतगण भिक्षा के लिये जाते हैं। इस बार भी मौज में सबका श्रेय करने सुबह करीब 9:30 बजे प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकर अंकल, पू. अश्विनभाई, संतों एवं स्थानीय तथा पंजाब के हरिभक्तों के साथ अशोक विहार फेस-3 एवं सत्यवती कॉलोनी में घर-घर भिक्षा लेने गये। मंदिर के सेवकों ने एक पारदर्शी गाड़ी ‘स्वाति’ तैयार की थी, ताकि आयु के कारण प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकर अंकल को बैठने में सुविधा रहे और साथ ही सबको उनके दर्शन भी हो सकें। ‘नारायण हरे, सच्चिदानन्द प्रभो...’ की अलख एवं भजनों की गूंज से कॉलोनी का वातावरण दिव्यता से भर गया। हर वर्ष की तरह थोड़ी देर पू. प्रणव दालिया के घर पर सबने अल्पाहार लिया। करीब 80 मुक्तों का समूह स्वरूपों के साथ की इन अलौकिक क्षणों को संजोते हुए आनंद कर रहा था। घरों के द्वार पर लोग यथाशक्ति से दान दे रहे थे और भिक्षा लेने वाले सेवक उन्हें प्रसाद रूप नये साल का कैलेन्डर दे रहे थे। सामान्य भाषा में कहें तो जो लोग घरों के द्वार पर नहीं आये, तो वे अपने घर की बालकनी या छत से ये सारा दृश्य देख रहे थे। पर, इस बात से अंजान थे कि भले ही नजारा देखने वे खड़े थे, लेकिन प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकर अंकल, पू. अश्विनभाई एवं संतों को यूँ ही निहार कर भी वे कल्याण के अधिकारी बने थे। दोपहर 4:30 बजे तक लगातार भिक्षा का यह कार्यक्रम चला। फिर मंदिर आकर सबने कढ़ी - खिचड़ी का प्रसाद लिया। स्थानिक मुक्त अपने घर और पंजाब से पथारे मुक्त भी लुधियाना, जगरांव, मोगा के लिये रवाना हुए। मंदिर के अन्य संतगण भिक्षा हेतु स्थानीय हरिभक्तों के घर भी गये। इस प्रकार अनूठी स्मृतियों के साथ मकर संक्रांति का उत्सव संपन्न हुआ।

13 जनवरी – प.पू. आनंदी दीदी के 63वें ग्राकृत्य दिन की मंगल बेला...



❖ गुरुजी - दीदी जिस तरह हमारे साथ हमेशा छढ़ते रहते हैं, वैसा हनिया में कोई नहीं कर सकता...
❖ गुरुजी - दीदी हम सभी के जीवन में हैं, इसलिये हम सब एक दूसरे से जुड़े हुए हैं...



हमारे गुणातीत स्वरूपों का कोई शर्ती Love नहीं है...

— य.पू. दिनकर अंकल





गुरुभक्ति की मिसाल प.पू. आनंदी दीदी का 63वाँ प्राकट्य पर्व

उत्तरभारत की बहनों का श्रेय करने के लिये गुरुहरि काकाजी महाराज द्वारा पसंद किये गये बेमिसाल पात्र प.पू. आनंदी दीदी के प्राकट्य पर्व की सभी बहनें व भाभियाँ आतुरता से प्रतीक्षा करती हैं। उसका कारण यह है कि एक सेवक की अदा से जीने वाली प.पू. दीदी को मन में हमेशा ऐसा रहता है कि प.पू. गुरुजी सबको भरपूर गुणातीत ज्ञान देते हैं, सो अलग से बहनों की सभा करके वे और क्या ज्ञान देंगी? पर हाँ, गुणातीत स्वरूपों एवं प.पू. गुरुजी के माहात्म्य का सिंचन करना वे अपनी भक्ति समझती हैं। सो, पूरे वर्ष में 13 जनवरी प.पू. दीदी का प्राकट्य दिन ही एक ऐसा दिन होता है कि जब बहनों की सभा होती है। जिसमें प.पू. दिनकर अंकल कई वर्षों से आशीर्वाद देने के लिये खास पथारते ही हैं। सो, अबकी बार भी 12 जनवरी 2024 की सायं मुंबई से प.पू. दिनकर अंकल, पू. अश्विनभाई, पू. किशोरभाई मास्टर तथा पू. एंजी बहन के साथ दिल्ली मंदिर आये।

अगले दिन 13 जनवरी की सायं 6:00 बजे श्री ठाकुरजी की आरती से प.पू. दीदी के 63वें प्राकट्य दिन के समारोह का शुभारंभ हुआ। श्री ठाकुरजी ने बहुत ही सुंदर गुलाबी पोशाक धारण की थी। एक ओर प.पू. दिनकर अंकल के सोफे की पृष्ठभूमि पर गुरुहरि काकाजी की माला फेरती मनमोहक मूर्ति का दर्शन हो रहा था। तो, दूसरी ओर प.पू. दीदी के सोफे की पृष्ठभूमि पर एक tape recorder का चित्र लगाया था। उसके आस-पास Cassettes के भी चित्र लगाये थे, जिन पर काकाजी-गुरुजी लिखा था और सबसे ऊपर प.पू. गुरुजी के वचन लिखे थे –

She is just my tape recorder...

उसमें से मेरी जो आवाज़ होगी, वो ही कैसेट बोलेगी।

प्रारंभ में पू. नित्या दीदी, पू. बाती दीदी और पू. नेहा अग्रवालजी ने धुन के बाद, निर्वाज प्रेम करने वाली प.पू. दीदी का भजन ‘निर्मल ममता से भरी मूर्ति...’ गाकर सभा की मंगल शुल्कात करी। प्रारंभिक उद्बोधन की श्रृंखला में सर्वप्रथम मंदिर के बिलकुल सामने के मकान में रहतीं, पू. इंदु नरलाजी जो कि 27 साल से मंदिर से जुड़ी हैं, उन्होंने अपने अनुभव बताये कि धुन करने से, प.पू. गुरुजी व प.पू. दीदी के वचन पर चलने से किस प्रकार उनके परिवार में सुख-शांति है। तत्पश्चात् निष्ठावान पू. सविता भंडारीजी ने स्वानुभव बताते हुए अंतर से धन्यवाद किया कि किस प्रकार प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी अपने आशीष से भक्तों के परिवारों की रक्षा करते हैं!

तदोपरांत पू. बंसरी दीदी ने पृष्ठभूमि का रहस्य निम्न प्रकार उजागर करते हुए प्रार्थना की – आज की *Decoration* में हम एक *Tape recorder* देख रहे हैं और आप विचार भी कर रहे होंगे कि इसका क्या रहस्य है?



तो, 24 दिसंबर 1997 को मुंबई के लीलावती अस्पताल में बायपास सर्जरी कराने के बाद, गुरुहरि पण्डित की आझ्ञा से प.पू. गुरुजी अनुपम मिशन-मोगरी में आराम हेतु रहे थे। **1 फरवरी 1998** को बसंतपंचमी, शिक्षापत्री जयंती-गुरुवर्य शाढ़ीजी महाराज के प्राकट्य दिन के महामंगलकारी दिन वे दिल्ली मंदिर लौटे थे। पहली बार ऐसा हुआ था कि करीब सवा महीना गुरुजी मंदिर से-दिल्ली के मुक्तों से स्थूल रूप से दूर रहे थे। सो, मुक्तों को तो गुरुजी के दर्शन पाने की खूब ललक थी ही, पर जैसे कि खासी की बातों में लिखा है कि सत्युरुष को मुक्तों से कहीं अधिक प्रीति होती है, इसका दर्शन उस दिन गुरुजी के चेहरे की खुशी से होता था। तब आशीर्वाद देते हुए गुरुजी ने प.पू. दीदी के बारे में कहा था—

She is just my tape recorder... उसमें से मेरी जो आवाज़ होगी, वो ही कैसेट बोलेगी।

गुरुजी के ऐसे आशीर्वाद की स्मृति इस *Decoration* द्वारा की है, क्योंकि दीदी की पल-पल की क्रिया केवल और केवल काकाजी, गुरुजी के आदेश से उनके संबंध गलों को राज़ी करने हेतु ही है। जिन्होंने *Tape recorder* का इस्तेमाल किया है, वे जानते हैं कि

- * कैसेट में जो रिकार्ड किया गया हो, वैसे का वैसा ही बजता है। *Tape recorder* उसमें कुछ अपना जोड़ता या बदलता नहीं है। इसी प्रकार, दीदी ने काकाजी-गुरुजी से जो गुणातीत ज्ञान पाया है, वैसा का वैसा ही वे हमें परोस रही हैं।
- * जब भी मन हो, तब *Tape recorder* को बजा सकते हैं। वैसे ही दीदी मुक्तों के लिये जब वो चाहें तब उपलब्ध रहती हैं। दिन या रात देखे बिना अपनेपन से उन्हें समाधान देती हैं।
- * अपनी ऊचि-पसंद के अनुसार व्यक्ति *Tape recorder* की volume, tone, echo इत्यादि को set करके सुनता है। दीदी के समक्ष भी मुक्त अपने व्यवहार, मन-स्वभावों इत्यादि की व्यथा अपने ढंग से बताते हैं। इन्हें तसल्ली से सुन कर, दीदी हर एक मुक्त की ऊचि के अनुसार उसी के अनुरूप वर्तती हैं।
- * शुरुआत में *Tape recorder* बड़े और महंगे होते थे। समय के साथ वे छोटे और सस्ते होते गये। ऐसे ही दीदी खूब बड़ी हैं, लेकिन मुक्तों के पास सर्ती बन कर रहती हैं। सो, हम इन्हें साधारण मानने की ग़लती न करें।

आज लोहड़ी 13 जनवरी 2024, शनिवार को प.पू. दिनकर अंकल की निशा में प.पू. दीदी का 63वां प्राकट्य दिन मनाने के लिये हम सब एकत्र हुए हैं, तो भगवान् खामिनारायण एवं सभी गुणातीत स्वरूपों के श्रीचरणों में प्रार्थना है कि वे ऐसा बुद्धियोग दें कि हमें मिले प्रगट स्वरूपों को तत्त्व से पहचानें, उनके परिश्रम का मोल समझें। हमेशा पाँजीटिव एप्रोच रखें और संत को विवश न करें—ऐसी प्रार्थना।

उपरोक्त प्रार्थना के दौरान, 1998 में प.पू. दीदी को प.पू. गुरुजी ने जो आशीर्वाद दिये थे, उसकी audio clip सुन कर सब धन्य हुए। इसके बाद, पू. नक्षत्र के school के Ex-principal पू. डेविड



સર કી બેટી પૂ. ડોરા ને દક્ષિણ ભારતીય ઈસાઈ હોને કે બાવજૂદ અપની મધુર આવાજ મેં ગુજરાતી ભજન – ‘જીવું છું રસીલા તારા મુખડાંને જોતી’ પ્રસ્તુત કિયા। ઉસકે ભાવ સે રાજી હોકર પ.પૂ ગુરજી ને એક Pen કે રૂપ મેં અપના આશીર્વાદ ભિજવાયા।

પુનઃ પ્રાસાંગિક ઉદ્બોધન કી શ્રુંખલા મેં પૂ. નિત્યા દીદી ને અપને વક્તવ્ય મેં ભાવુક હૃદય સે પ્રાર્થના કી – હમ સભી 36 કે આંકડે જૈસે ન રહેં, બલિક મિલજુલ કર 63 કે આંકડે કી તરહ રહેં... જિસ તરહ રામ મંદિર નિર્મિત હોકર ઉસમેં રામલલા વિરાજમાન હોંગે, એસે હી હમારે હૃદય મેં ભી પ્રભુ એક પવિત્ર મંદિર બના દેં, જિસમેં હમારે મુકુંદલલા અખંડ વિરાજમાન હોં ઔર એસા શુદ્ધ વ પવિત્ર સ્થાન બન જાય, જહાઁ ગુરજી કા બૈરે રહુને કા મન કરે।

જૈસે કિ પ.પૂ. ગુરજી અકસર કહતે હોય કે પૂર્વ કે મુક્ત હી ઇસ મંદિર મેં આ સકતે હોયાં યું સાલોં સે જુડે કર્ઝ હરિભક્તોને ઘરોં મેં બધુઓને કે રૂપ મેં જો બેટિયાં આતી હોયાં, વે ભી સત્યસંગ મેં જલ કી ભાઁતિ ઐસી ઘુલમિલ જાતી હોયાં કે એહસાસ હો જાતા હૈ કે પૂર્વ કે સંબંધ કે બિના એસા સંભવ હી નહીં હૈ। પૂ. વિજયપાલજી – શશિ યાદવજી કી બડી પુત્રવધૂ પૂ. ડૉ. શૈરી ભી કમ સમય મેં એસે હી અપનેપન સે જુડી હોયાં। ઉન્હોંને પ.પૂ. ગુરજી વ પ.પૂ. દીદી સે પ્રાપ્ત સ્મૃતિયોનો કો યાદ કરતે હુએ કહા – **ગુરજી-દીદી હમ સભી કે જીવન મેં હોયાં, ઇસાલિયે હમ સબ એક દૂસરે સે જુડે હુએ હોયાં**। હમ ઉનસે હર રોજ યા કિતની ભી બાર બાત કરેં, પર હમેશા ઉતના હી પ્યાર હમેં મિલશે। પ.પૂ. ગુરજી ભગવાન સે મિલવાને કા આધાર હોયાં...

સચ, યહ બાત હમ સભી કો સમજાને જૈસી હૈ કે અખંડ પ્રભુધારક ઐસી વિભૂતિ કા માર્ગદર્શન હમેં ભગવાન કે પ્રતિ અધિક સમર્પિત ઔર સંવેદનશીલ બનાતા હૈ। વે ભગવાન કે સાથ એક સંબંધ સ્થાપિત કરને મેં હમારી મદદ કરાતે હોયાં ઔર ઉનકે દ્વારા દિખાયે ગયે માર્ગ પર ચલને કે લિયે પ્રેરિત કરતે હોયાં। ઇનકે માધ્યમ સે હમ ભગવાન કી પ્રાપ્તિ કે માર્ગ ઔર સચ્ચી આત્મિક સમૃદ્ધિ કી ઓર બઢ્યે હોયાં। સો, પૂ. ડૉ. શૈરી કે સંબોધન કે બાદ સભી કી ઓર સે સ્વરૂપોનો કો નમન કરતે હુએ ગુજરાતી ભજન – ‘મારા આત્મા ના આધાર...’ પૂ. નિત્યા દીદી વ પૂ. બંસરી દીદી ને ઔર પૂ. ડોરા ને હિન્દ્વી ભજન ‘જીવન તુમને દિયા હૈ સંભાલોગે તુમ...’ ગાકર સભી કી ઓર સે પ્રભુ કો પ્રાર્થના કી।

તદોપરાંત, પૂ. ગાર્ગી દીદી ને બહુત હી ખુલે મન સે જાહિર મેં અપની ખામિયાં ટલવાને કે લિયે પ્રાર્થના કી – ‘ગુરજી-દીદી ને હમ સભી કો બુહત કુછ દિયા હૈ, કહા જાયે તો અપને હાથોં પર રખા હૈ। વો જિસ તરહ હમારે સાથ હમેશા ખડે રહતે હોયાં, વેસા દુનિયા મેં કોર્ઝ નહીં કર સકતા। હમ જહાઁ જિસ level-status પર થે, વહાઁ સે કહીં ગુણા આગે ઉન્હોંને કૃપા કરકે પહુંચાયા હૈ। તો, અબ અભાવ-અવગુણ મેં ન પડેં ઔર સ્વરૂપોનું કા ઋણ કમી ન ભૂલોં।’

માહાત્મ્ય દર્શન કે પશ્ચાત્ પૂ. સમીરભાઈ દવે ને પ.પૂ. દિનકર અંકલ કો હાર અર્પણ કરકે સભી



की ओर से उनका अभिवादन किया। फिर पंजाब के भक्तों की ओर से लुधियाना की पू. रणजीत भाभी और पू. मंदीप भाभी ने प.पू. दीदी को हार अर्पण किया। प.पू. दीदी के प्राकट्य दिन के अवसर पर अधिकतर मुबर्ई की पू. डौली अग्रवालजी (जिन्हें सब ‘नानी’ कहते हैं) स्वयं हार बना कर लाती है। इस बार भी उन्होंने हार बनाया और आने वाली थीं। परंतु, उनके बेटे पू. दीपक की अस्वस्थता के कारण प.पू. दीदी के मना करने पर वे नहीं आई। पर, हार के रूप में अपनी भावनायें भेंजी। सो, उनके द्वारा बनाया हार मुंबर्ई के पू. मेहुल माणेक ने प.पू. गुरुजी को चिदाकाश हॉल में अर्पण किया। उसके बाद प्रसादी का यह हार पू. रंजना खन्नाजी और पू. पूजा जोशीजी ने दिल्ली के सभी मुक्तों की ओर से प.पू. दीदी को अर्पण किया और प.पू. गुरुजी द्वारा भिजवाई गई शॉल पू. दीक्षा दीदी ने प.पू. दीदी को अर्पण की। मुंबर्ई और शिकागो के मुक्तों की ओर से पू. एंजी बहन ने प.पू. दीदी को हार अर्पण किया। इसके बाद प.पू. दीदी के प्रागट्य दिन निमित्त पू. बसंती दीदी और पू. नेहा अग्रवालजी ने ‘दीदी की गुरुभक्ति है यही...’ भजन प्रस्तुत किया। गुरुहरि काकाजी महाराज के समय से निष्ठावान सत्संगी अक्षरनिवासी पू. दालिया-पू. नयना बहन के छोटे सुपुत्र पू. प्रणव दालिया के जन्मदिन की golden jubilee थी, सो प.पू. दिनकर अंकल की प्रसादी का हार पू. ओ.पी अग्रवालजी ने पू. प्रणव को पहना कर अभिनंदन किया। साथ ही प.पू. दिनकर अंकल ने उन्हें स्मृति भेंट दी।

हार विधि संपन्न होने के बाद मातृवत्सलता की प्रतीक प.पू. दीदी ने अपने निम्न मार्गदर्शन से सबको प्रेरित किया—

...सबसे पहले सभी को लोहड़ी व मकर संक्रांति की बहुत-बहुत बधाई और भावभरे जय खामिनारायण। दिनकर दादा को चरणस्पर्श और अंतर से जय खामिनारायण। बंसरी ने जैसे बताया कि प्रोग्राम में मेरे नाम के आगे लिखा था—आशीर्वाद। तो, मेरे मन में हमेशा से ये बात रही है कि 13 जनवरी मेरा जन्मदिन, 13 मार्च गुरुजी का प्रागट्य दिन, 12 जून गुरुहरि काकाजी का प्रागट्य दिन, गुरुपूर्णिमा और नया साल—ऐसे सभी दिन एक सेवक के लिये ख्रास प्रार्थना करने के दिन हैं। क्योंकि इन दिनों हम थोड़े अलग mood में होते हैं। अंदर से रुक्ख छोड़ता है कि मेरी आध्यात्मिक प्रगति इस कक्षा पर अटक गयी है, तो प्रार्थना करके आशीर्वाद मांगने का मौका मिल जाता है। मैं दिल से मानती हूँ कि आज तो प्रार्थना करने का दिन है।

* अभी 27 दिसंबर को प्रेमस्वामीजी के प्रागट्य दिन निमित्त हरिधाम गये थे। यहाँ से अगले दिन 28 तारीख को अमदावाद गये और दिलीप बापु की बहन की लड़की मनीषा-भाविन कुमार के घर एक रात ठहरना हुआ। 28 की शाम को सभा का वातावरण बन गया। ओ.पी. अग्रवालजी जो मेरे पापा हैं, उन्होंने एक बहुत अच्छी बात करी। वो मुझे खूब टच कर गयी।



बात यह थी कि एक बार 9 अंक का 8 अंक के साथ झगड़ा हो गया, तो 9 ने 8 अंक को थप्पड़ लगाया। 8 अंक ने पूछा कि इतनी-सी बात पर तुमने मुझे थप्पड़ क्यों लगाया? तो 9 अंक ने कहा कि मैं तुमसे बड़ा हूँ इसलिये। तो 8 अंक ने उसकी बात पकड़ कर 7 को थप्पड़ लगाया, 7 ने 6 को लगाया, 6 ने 5 को लगाया, 5 ने 4 को लगाया, 4 ने 3 को लगाया, 3 ने 2 को लगाया। लेकिन जब नं. 1 की बारी आयी, तो वो 0 के साथ जाकर खड़ा हो गया। उसने 0 को थप्पड़ नहीं लगाया। खुद खड़ा होकर 0 को 10 बना दिया। इस बात पर विचार आ रहा था कि हमारे जीवन में भी शायद ऐसा ही हुआ है। हम में तो कोई बरकत है नहीं। इतने सालों के बाद भी मन, स्वभाव, प्रकृति के चंगुल में आ ही जाते हैं। लेकिन ये सब गिने बिना काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, अक्षरविहारीस्वामीजी, साहेबजी, गुरुजी, प्रेमस्वामीजी, दिनकर दादा, भरतभाई, वशीभाई, बहनों में ज्योति बहन, तारा बहन, दीदी, देवी बहन, जसु बहन, पदु बहन और सारी बड़ी बहनें 1 नंबर की तरह हमारे साथ खड़े हो गये हैं। हमारी value किस तरह बढ़े, उसके लिये वो ही परिश्रम करते रहते हैं। हम में कुछ भी नहीं, तो भी हमारी प्रकृति छलक जाती है। दूसरी तरफ सभी गुणातीत स्वरूपों का जीवन देखें, तो वे छोटे से छोटे के पास भी झुक-झुक कर रहते हैं। मैंने योगीजी महाराज का एक प्रसंग सुना है कि डाकिया जब डाक लेकर आता था, तो योगीजी महाराज उसे टपाली साहेब कह कर बुलाते कि आओ-आओ टपाली साहेब! हम जैसे साथ बैठे हुए हँस कर कहते कि बापा ये तो इसकी duty है। पर, इस gesture से योगीजी महाराज सिखाते थे कि हमारी भाषा कैसी होनी चाहिये? हरेक से हमारे बोलने की रीत कैसी होनी चाहिये? उसमें तू-तड़क या ज्यादा कड़वी भाषा नहीं होनी चाहिये। हमें सामने वाले व्यक्ति को respect से बुलाना चाहिये। हमारी वाणी में खूब विनम्रता होनी चाहिये।

- * सौभाग्य से काकाजी का जीवन भी निहारने का मौका मुझे मिला था। उस समय इतनी समझ नहीं थी कि इतनी बड़ी विभूति, भगवानधारक विभूति के साथ रह रहे हैं। काकाजी की एक ही भावना निरंतर दिखाई पड़ती थी, जो आज गुरुजी में भी दिखाई पड़ती है कि बस संबंध में आने वालों को किस तरह सुखी कर दूँ! मुझे याद है मध्य प्रदेश-गुजरात के सुरेन्द्र वधवाजी अपनी पत्नी के साथ काकाजी के पास आये थे। उन दोनों को divorce लेना था, तो करीब रात 11 बजे से सुबह 4 बजे तक काकाजी उनके साथ बैठे और पति-पत्नी को समझाते रहे। बाहर हम लोग सोचते रहे कि शायद थोड़ी देर में काकाजी free हो जायेंगे, क्योंकि सुबह काकाजी की flight थी। जब सुबह के 4 बज गये, तो सीधा ट्नान करके काकाजी airport के लिये निकल गये। काकाजी का ऐसा परिश्रम देखा था। काकाजी की ऐसी भावना थी कि किसी



तरह ये सुखी हो जायें। अभी भी गुरुजी, दिनकर दादा, मरतभाई, वशीभाई काकाजी के उसी कार्य को कर रहे हैं। साथ ही साथ काकाजी अपने प्रगट होने की स्थूल प्रतीति भी कराते हैं। जैसे कि मैंने बताया कि अभी दिसंबर में गुजरात गये थे, तो अनुपम मिशन में काकाजी के समाधि स्थल पर गये थे। वहाँ काकाजी के चरणारविंद के पास हम खड़े थे, तो वहाँ की साधक भाविशा बहन ने काकाजी के चरणों में समर्पित करने के लिये थोड़े गुलाब मुँझे दिये। मैंने वो फूल काकाजी के चरणों में लगाने शुरू करे, तो वे कुल 7 फूल ही थे। काकाजी ने 7 मार्च को शरीर छोड़ा... मेरे साथ स्वाति दीदी वगैरह थे, तो मैंने कहा कि लो, काकाजी तो प्रगट ही हैं, 7 ही फूल हाथ में आये हैं। 7 नंबर symbolic बन गया है। गुरुजी से कोई किसी काम के लिये तारीख पूछने आता है, तो ले 7 तारीख ही बताते हैं। सो, मेरे दिमाग़ में 7 नंबर ही छाया रहता है और काकाजी ने भी प्रतीति कराई।

* दिनकर दादा भी कई साल से 12, 13 जनवरी के निमित्त आते हैं। जो मैंने बात करी ना कि 1 नंबर 0 के साथ खड़े होकर उसकी value बढ़ा देता है। ऐसे ही मैं पक्का मानती हूँ कि मेरी कोई लायकता नहीं है, लेकिन ये दिनकर दादा का बड़प्पन है। साथ में अश्विनभाई और किशोरभाई भी आये हैं। सो, मैं ज़ीरो बन सकूँ वो दिनकर दादा के पास प्रार्थना है। दिनकर दादा के लिये भजन बनाया था, उसकी एक लाइन मुँझे बहुत अच्छी लगती है।
सोचता हूँ कि तुम कितने ऊँचे हो पर, कितने सस्ते तुए हो हमारे लिये।
आज काकाजी हैं जिनमें प्रगट रहे, बन पहचान काकाजी की हैं जो जिये॥

गुणातीत स्थिति, पर सेवक की अदा,

गुणातीत अस्मिता से सुहृद सबके तुम, सहते कसनी हमारे भले के लिये।

दिनकर दादा का भी जीवन देखें, तो 11 से 21 दिसंबर हम सब दुबई गये थे। तब इस बीच 14 से 17 दिसंबर दिनकर दादा और मरतभाई दिल्ली में रहते सत्संगी वरुण धवन के विवाह समारोह के लिये आये थे। शादी से एक सप्ताह पहले उनका परिवार गुरुजी का दर्शन करने आया था। तब वरुण धवन के father बता रहे थे कि अमेरिका में जब वरुण का convocation था; मैं वहाँ नहीं पहुँच पाया। लेकिन 3 घंटे तक दिनकर दादा वहाँ बैठे रहे। यह सुन कर मैं सोच रही थी कि आजकल सच्चे संत के सिवा ऐसा निःस्वार्थ प्रेम कौन कर सकता है? मुंबई के हेमंतभाई मर्चेंट एक बार बता रहे थे कि उनका लड़का श्रेयस देख नहीं सकता है। लेकिन दिनकर दादा जब भी पवई आते हैं, तो वे सभा खत्म होने के बाद सबसे पीछे बैठे श्रेयस के पास आकर उससे ज़रूर मिलते हैं। उसका हाथ पकड़ कर हाल-चाल पूछेंगे कि श्रेयस कैसे हो? उसको तो इतना रुक्याल नहीं होगा कि दिनकर दादा कितना time उसके साथ spend



करते हैं। पर, हेमंतभाई कहते हैं कि भले श्रेयस को तो पता नहीं, पर मुझे तो पता है कि दादा का time कितना costly है? ये स्वरूप हमें हमारे जैसे दिखाई देते हैं कि हमारे जैसे बैठते-हंसते हैं। लेकिन, काकाजी जैसा कहते थे ना कि गोकुल गाँव का पिंडा व्यारा। तो, हम इन्हें साधारण न समझें।

- * गुरुजी के सान्निध्य में तो निरंतर रहने को मिला है। गुरुजी के रूप में तो ऐसा कहें कि काकाजी ने अपना दिल निकाल कर दिल्ली के मुकतों को दे दिया है। हम पर इतना ज्यादा महाराज और काकाजी का ऋण कहा जाये। लेकिन, वे इतने normal रहते हैं; हमारे लेवल पर आ जाते हैं। Jokes बैगैरह सुन कर भूल-भूलैया में ऐसा डालते हैं कि हम उन्हें अपने जैसा ही समझने लगते हैं। मुझे याद है 2010 में दुबई से अनुज भैया के रिलेटिव रजनीशजी और स्मृति आये थे। गुरुजी का दर्शन करके स्मृति बहुत रोने लगी। हमें लगा कि पता नहीं क्या बात हुई? मैंने उससे पूछा कि इतने में गुरुजी ने सेवक से कहलवाया कि मैं दुबई उनके यहाँ आऊँगा। मैं एकदम चौंक गई कि गुरुजी तो विदेश जाने के लिये कभी राजी नहीं होते, फिर ऐसे कैसे कहलवाया? फिर स्मृति ने मुझे बताया कि वो जिस गुरु को मानती थीं, उन्होंने स्मृति से कहा था कि मैं foreign tour पर जब निकलूँगा, तो सबसे पहले तुम्हारे घर दुबई आऊँगा और उन्होंने स्मृति का एड़ेस भी लिया था। अचानक गुरुदेव का heavy accident हो गया और उनकी half body damage हो गई। वे गुरु इतने समर्थ थे कि उन्होंने कहा कि ऐसे तो मुझे रहना नहीं है। सो, उन्होंने खुद ही शरीर छोड़ दिया। उनके सेवकों ने स्मृति को बताया कि जब उनका कृता उतारा, तो उसकी जेब में से स्मृति का एड़ेस निकला। यह सुन कर मुझे समझ में आया कि गुरुजी ने अचानक ही ऐसा क्यों कहा कि मैं दुबई आऊँगा और सिर्फ कहा ही नहीं 2010 में वहाँ गये।
- * कई प्रसंगों से गुरुजी के बहुत अलग स्वरूप का दर्शन होता है। पिछले साल मसूरी शिविर में सरयूस्वामी ने बताया कि 1990 में एक बार गुरुजी ताड़देव आये थे, तब कुसुम भाभी वहाँ गये होंगे और उन्हें मन में हुआ कि पूर्वश्रिम के संबंध से गुरुजी वैसे तो कोई बात करेंगे नहीं, तो उन्होंने बात करने के बहाने सहज ही सेवक से गुरुजी को कहलवाया कि आप मेरे लड़के को साधु बनाओगे? गुरुजी ने कहलवाया कि अभी नहीं, समय आने पर। तब तुम मना मत करना। 1990 में तो सरयूस्वामी काफी छोटे थे। अब 31 साल के बाद 2021 में उन्हें साधु की दीक्षा देकर अपना वचन पूरा किया। हमें भी पहली बार ये प्रसंग पता चला।
- * आनंदस्वामी के बारे में बात करें, तो उनके पूर्वश्रिम की माँ वृष्णि कुछ पुराने लेटर्स देख रही होगी, तो उसमें से 2015 का एक कागज़ निकला। तब आनंदस्वामी का नाम नंदिश था और



engineering कर रहा था। गुरुजी ने एक बार सपने में उसे दर्शन दिये और नंदिश के साथ फोटो खिंचवाई, गले लगाया और गुरुजी का प्यार देख कर नंदिश रोने लगा। तब गुरुजी ने उसे कहा कि मैं तेरी अहं ग्रंथि, ममत्व ग्रंथि, संशय ग्रंथि सब टाल दूँगा और तुझे गुणातीत बना दूँगा। उस समय तो साधु बनने की या मंदिर में रहने की कुछ भी बात नहीं हुई थी, लेकिन उससे पहले गुरुजी ने सपने में ऐसा दर्शन कराया। सुबह उठकर उसने तृप्ति को ये बात बताई, तो उसने उसी समय ये बात नोट कर ली। तृप्ति ने थोड़े दिन पहले ही ये बात मुझे बताई, तो मैंने कहा कि ऐसा तो गुणातीतानंदस्वामी ने प्रकरण 5 की 388वीं बात में कहा है कि अगर तुम मेरी तरफ देखते रहोगे, तो मैं तुम्हारी कर्मग्रंथि, संशयग्रंथि, ममत्वग्रंथि, इच्छाग्रंथि, अहंग्रंथि वगैरह सब टाल दूँगा। ये चीजें बताती हैं कि हमें शुद्ध गुणातीत परंपरा के साधु गुरुजी के लिये में भिन्न हैं। ये प्रसंग में इसलिये बता रही थी कि कहाँ 2015 और फिर उन्होंने 2021 में साधु की दीक्षा ली। मानो पहले से *divine plan* होगा। हम सोच रहे हैं कि अब हो रहा है, पर वो पहले से ही निश्चित होता है। लेकिन, गुरुजी का इतना दासभाव है कि जिसकी कभी कल्पना नहीं कर पाते हैं। रात को हम बैठे थे, तो गुरुजी को *try* कराने के लिये आशीष वह लाया कि वे एक बार बैठ कर देख लें कि *comfortable* है या नहीं। उनकी जगह हम हों, तो तुरंत बैठ जायें। लेकिन, गुरुजी बोले कि पहले महाराज, गुणातीतानंदस्वामी, गोपाळानंदस्वामी की मूर्तियों को सोफे पर रखो। वो मूर्तियाँ रख कर सोफा प्रसादी का किया, तो फिर बोले—नहीं, अभी काकाजी की मूर्ति यहाँ रखो। मूर्ति रखवाने के बाद धून करके फिर उस सोफे पर बैठे। काकाजी जब कहते थे, उस समय उनकी बात हमें समझ नहीं आती थी कि तुम मूर्ति भूल कर जीते हो, मूर्ति भूल कर *direct* किया करते हो। तो, गुरुजी के जीवन से दर्शन होता है कि वे हरेक पल भगवान में ही रहते हैं। मुझे बैठने के लिये कहा हो, तो मैं तुरंत देखने के लिये बैठ ही जाऊँ कि *comfortable* है कि नहीं। गुरुजी का जीवन सिखाता है कि वे कोई अलग तत्त्व हैं। पर, हमारी जीवदशा कैसी है? मैं खुद सोचती रहती हूँ कि हमें *doctor*, *pilot* या *driver* का भरोसा आता है, जिनका हमें अनुभव भी नहीं है कि सही सलाह देगा या *plane* और *car* सही चलायेगा। लेकिन, जिस साधु का हमें अनुभव है कि इसने भगवान अखंड रखे हैं, वे हमें कभी *misguide* नहीं करेंगे; कभी हमारा अहित नहीं करेंगे और उल्टा हमें जन्म-मरण के चक्कर से मुक्ति दिलायेंगे, उनका भरोसा हमें नहीं आता।

* एक बात पक्की है कि इतनी बड़ी दुनिया में हम जितने यहाँ बैठे हैं, वे सभी *chosen* पात्र हैं, उनके द्वारा चुने हुए हैं। इसका एक उदाहरण देती हूँ जिसे सुन कर शायद हँसी भी आये।



गुरुजी की पूजा में सेवक एक बड़ी कटोरी में पिस्ते का प्रसाद रखते हैं और एक खाली छोटी कटोरी साथ में रखते हैं। पूजा संपन्न होने के बाद, गुरुजी चुन-चुन कर 5-6 पिस्ते अपने लिये उस छोटी कटोरी में रखते हैं। कई बार तो पिस्ता उठा कर देखेंगे, फिर उसे वापिस रख कर दूसरा या तीसरा उठायेंगे। फिर बाकी सबको प्रसाद के लिये भेजते हैं। मैं सोचती हूँ कि पिस्ते तो छोटे या बड़े एक जैसे ही होते हैं, पर पिस्ते तो पिस्ते होते हैं। पर, मैं सोचती हूँ कि जो पिस्ते इतने चुन कर लेते हैं, तो उन्होंने हम सबको कितना चुन कर लिया होगा! लेकिन महिमा का कुछ अभाव कहो कि हमें कृतार्थभाव क्यों नहीं रहता है? थोड़े दिन से मैं अद्विष्टता की बहनों से भी बात करती हूँ कि कई लोग मिलने आते हैं, तो इतने *proud* व उत्साह से बताते हैं कि मेरे बेटे या बेटी को कनाडा का *PR* मिल गया या अमेरिका का *green card* मिल गया। पर, हमें बिना किसी साधन इतने अच्छे गुणातीत *top* संत का संबंध मिल गया; उन्होंने हमें अपनी गोद में बिठा लिया, उसका अहोभाव और उमंग नहीं रहता। इतना अच्छा सत्संग मिल गया; संत ने जिम्मेदारी ले ली, तब भी हमें उसका अहोभाव-महिमा क्यों नहीं रहता? इस बात पर मैं विचार करती रहती हूँ।

* महिमा की बात पर थोड़े दिन पहले मैं बहनों से बात कर रही थी कि थोड़े साल पहले गुरुजी ने एक *gesture* किया कि अपनी हाथ की माला के एक-एक मनके पर बंसरी को महिमा शब्द लिखने का कहलवाया। जब बंसरी लिख रही थी, तो मैं देख रही थी कि इतने छोटे मनकों पर वह लिखना आसान नहीं था। लेकिन, बंसरी को ऐसा कि गुरुजी की आङ्गना है, तो लिखना ही है। तो, कई मालाओं पर गुरुजी ने लिखवाया। फिर मैंने सोचा कि गुरुजी इस *gesture* से ये समझाना चाहते हैं कि महिमा शब्द की कितनी *depth* है, क्या *gravity* है! अगर जीव में महिमा शब्द बस जाये, तो बहुत बड़ा काम हो जायेगा, इसलिये लिखवा रहे होंगे। ऐसी बारीक बातें समझा लें, तो रास्ता सरल हो जाता है।

* सभी स्वरूप संग की बात करते हैं। अभी हम दुबई गये थे, हमारे साथ जो आये थे उन सबको रख्याल है कि किस तरह वहाँ के मुक्तों ने सेवा करी? परिमल-सुवास के संग से इतने भाव से सबने सेवा-आवभगत की कि ऐसा लग रहा था कि मानो दुबई में नहीं, अमदावाद में हैं। हम सबको रख्याल है कि गुरुजी मज़ाक-मज़ाक में भी सबको मूर्ति देते हैं। तो, 15 तारीख तक तो ज्यादा जने थे नहीं, लेकिन 16 तारीख से थोड़े और भक्त दिल्ली से आये। तो, नई *contact* में आई सुवास की *friend* पूर्वी को गुरुजी ने कहलवाया कि बस अब तो हमारे अपने सारे जने आ गये हैं, तो ऐसा करो कि 5 दिन सुबह से रात तक सबके भोजन का खर्च तुम देना। पूर्वी को भगवान का दिया हुआ सब कुछ है, तो वो कर भी सकते थे। लेकिन, मैं



देख रही थी कि गुरुजी जो भी उन सबको कहते, तो वे कहते – ‘हाँजी गुरुजी हो जायेगा’ दुबई जैसी जगह में 110 जनों का पूरे 5 दिनों का खाना करना आसान बात नहीं थी। पुराने जने गुरुजी को जानते हैं, तो उनकी बात अलग है या परिमल-सुवास की बात अलग है, नये जने के लिये ऐसा कहना, वो पूर्व का संबंध कहा जाये। फिर गुरुजी ने दूसरा gesture ये किया कि दुबई की भाषियाँ मुझे रेडियम की अच्छी घड़ी दिलवा दें। यह सुन कर सुवास की friends पूर्वी, हेमा, चक्की वगैरह ने कहलवाया – हाँजी, गुरुजी हो जायेगा। तब मुझे हुआ कि ये positive संग के कारण है। हम परिमल-सुवास के परिवार के कारण दुबई गये थे, इनका सबको जो positive संग हुआ, तो ही उन लोगों को ऐसा हुआ कि गुरुजी को हम ‘हाँ’ कर देंगे, तो हमारा बहुत बड़ा काम हो जायेगा। दरअसल, गुरुजी की हमेशा यही कोशिश रहती है कि किसी भी तरह हमारा संबंध प्रभु से हो जाये। गुरुजी ने भी स्वामी की बातों की प्रकरण 2 की पहली बात पढ़वाते हुए बताया था कि स्वामी ने इसमें 21 बार संग शब्द use किया है कि हमारा संग सत्संग में हमेशा positive-महिमा वाला रखना, जिससे वो हमें साधु से जोड़ता रहे। एक जगह ऐसा भी लिखा है कि तुम्हारी कसर शायद बहुत जन्मों में टलने वाली हो, लेकिन अगर तुम्हें अच्छा संग मिल जाये, तो इसी जन्म में टल जायेगी और शायद तुम्हारी इसी जन्म में कसर टलने वाली हो, पर यदि negative thought वाला संग मिल जाये, तो तुम्हें कसर टालने के लिये शायद कई जन्म भी लेने पड़ेंगे। सो, positive संग रखना। अपने सत्संग में महिमा-संग basic चीजें हैं, जहाँ अपनी गाड़ी लुढ़क जाती है। बाकी तो गुरुजी ने समय-समय पर बहुत चीजें समझाई हैं।

- * अभी कल्युग का समय है, लेकिन माँ-बाप अपने बच्चों के साथ ये साधु से जुड़े रहेंगे, तो सत्संग का एक जोग रहेगा ही रहेगा। नक्षु को सब जानते हैं। पीछे दीवाली से पहले अमेरिका के सुनीलभाई-दीप्ति भाभी का बेटा-बहु-समीर-धनि अपनी बेटी ग्रेसिया के साथ दिल्ली आये थे। 3-4 साल की ग्रेसिया बहुत बीमार हो गई और एकदम serious condition हो गई। तो, गुरुजी ने सबको आज्ञा करी कि उसके लिये 15 मिनट धून करना। एक दिन नक्षु रात को जल्दी सो गया, तो ग्रेसिया के लिये धून करनी रह गई होगी। तो, एकदम चौंक कर उठा और बोला—मम्मी, गुरुजी ने ग्रेसिया के लिये धून करने के लिये कहा था, आज धून करनी रह गई। नींद में से उठ कर 15 मिनिट धून करके फिर सो गया। उसकी मम्मी ने मुझे जब ये बात बताई, तो मैं इतनी खुश हो गई कि बस ये संकार अपने बच्चों में देने का काम माँ-बाप को करना है। हम जितना संत के साथ जुड़े होंगे, उतना अपने बच्चों को दे पायेंगे। लड़कियाँ चाहे कितना भी पढ़ लिख जायें, लेकिन उन्हें रसोई का काम, घर का काम ज़रूर



आना चाहिये। ताकि दूसरे घर में जाने पर लोगों को ख्याल आये कि हम सत्संग के परिवार से लड़की लाये हैं। गुरुजी ने इनको क्या शिक्षा दी है? वो हमारे वर्तन से पता चलेगा। तो अपने सत्संग की लड़कियों को रसोई का काम नहीं आता हो, तो अपनी मम्मी से सीख लेना, सफाई का खूब ध्यान रखना।

- * सबसे आस्त्रिर में याद कराना चाहूँगी कि गुरुजी ने इस साल का जो target हमें दिया है, वो आप सबको याद है? गुरुजी ने 10 नवंबर को धनतेरस के दिन कहा था—हमें साधु में मनुष्यभाव तो नहीं रहता, लेकिन मायिकभाव ज़रूर रहता है। मायिकभाव का अर्थ दिनकर दादा हमें समझायेंगे। भगवान ने इतना ठीक नहीं करा, प्रसंग पर हमें जो ये हो जाता है, वो इतने सालों के बाद अब ना हो—रोज़ ये प्रार्थना करें। जैसे कि भाभियाँ या बहनें कुछ अपने मन की बात या स्वभाव की बात गुरुजी को बिट्ठी लिख कर भिजवाती हैं। तो, गुरुजी एक ही जवाब देते हैं कि आप भी भजन करना; मैं भी भजन करूँगा, काकाजी सब set कर देंगे। अधिकतर गुरुजी ऐसा कहते हैं या कहेंगे कि काकाजी की समाधि की इतनी परिक्रमा कर लेना। हम सबके मन में ऐसा हो जाता है कि गुरुजी को कुछ भी कहेंगे-कुछ भी लिख कर देंगे, तो वे यही कहेंगे कि तुम भी भजन करना, मैं भी भजन करूँगा। लेकिन, इस बात पर विचार करें कि एक judge इतना कह देता है कि जाओ तुम्हें clean chit दी, हम कितना खुश हो जाते हैं कि अरे! मुझे बरी कर दिया। लेकिन, ये साधु ऐसा कहता है कि मैं तुम्हारे लिये भजन करूँगा, वो कितनी बड़ी बात है? लेकिन हमें जो ये हो जाता है कि जब भी गुरुजी से कहेंगे, तो वे ऐसा ही कहेंगे। तो, ये ही हमारा मायिकभाव है, जो मैं समझी हूँ।
- * गुरुजी ने महाराज का एक प्रसंग बताते हुए बात की थी कि महाराज किसी गरीब की झोपड़ी में गये, तो उसने टूटी-फूटी खाट पर एक फटी हुई रजाई बिछा दी। महाराज वो रजाई देखकर बोले—ये रजाई तो बहुत सुंदर है, मैं ले जाऊँ? देखो, दूर वाले तो फिर भी महिमा से देखते हैं। लेकिन, जो साथ में रहते हैं, वे तो मन में यही सोचते हैं कि महाराज तो इस्तेमाल तो करने वाले नहीं हैं, बस ये रजाई ले जाकर बेचारे उस गरीब का मन बहला रहे हैं। पर, वो गरीब ने अहोभाव से महाराज को रजाई देकर अपने प्रारब्ध टलवा लिये। महाराज और उसका संबंध तो जो भी था, लेकिन ऐसा सोचने वाले घाटे में चले गये कि महाराज तो इसे खाली बहला रहे हैं। ये महाराज के समय की बात है, लेकिन वर्तमान में भी ऐसा होता है। जनता फ्लैट्स में रहते सुरेन्द्र अरोड़ाजी की छोटी बेटी करिश्मा से रिश्ता पक्का करने लड़के वाले आये थे। सुरेन्द्रजी उन्हें मंदिर लेकर आये, तब गुरुजी पूजा कर रहे थे। पूजा में अभिषेक गुरुजी को चंदन का टीका लगाता है। करिश्मा के ससुराल वाले भी बैठे थे और मैं भी वहीं



थी। मैं जो बात कह रही हूँ न कि साधु के साथ मैं रहने वाले कैसे बाजी हार जाते हैं और उन शिष्यों की कितनी जिम्मेदारी होती है। अभिषेक ने टीका लगाया और फिर शीशे में देख कर गुरुजी ने कहा ठीक नहीं है और उसे पौँछवा दिया। इस प्रकार दो बार पौँछवा दिया और फिर चौथी बार मैं टीका ठीक से लगा। यह देख कर मुझे अंदर ही अंदर हंसी आ गई कि ये नये लोग जो बैठे हैं, वो सोच रहे होंगे कि साधु को तो माथे पर जैसा भी टीका लग जाये, उससे क्या फ़र्क पड़ता है? लेकिन साथ मैं रहने वाले हम ऐसा सोच रहे हैं। बाकी दूसरा व्यक्ति तो शायद ऐसा भी सोच कर गया हो कि जो साधु टीके में ऐसी कमी-बेशी नहीं चला सकता, वो शिष्यों के चैतन्य में कोई कमी नहीं रहने देगा? कसर टाल ही देगा। सो, मेरा बस इतना ही कहना है कि हम साथ मैं रहने वाले कोरे के कोरे न रह जायें, ये बाजी हम हार न जायें। ये तो हँसी-मज़ाक की बात है। पर, उसी समय मैंने अपने आपको तुरंत समझा लिया कि ये मेरी भूल है। गुरुजी ने ये *gesture* किया है, तो ज़रूर हमारे अंदर कोई कसर रहने ही नहीं देंगे। तो, अब ज़रूर गुरुजी के परिश्रम को समझें। इन छोटी-छोटी चीजों के लिये उन्हें हम अब विवश न करें। इस साल दीवाली पर गुरुजी ऐसा कहें कि मेरे शिष्य पके और उनका मायिकभाव टल गया। ऐसी रोज़ा प्रार्थना करते रहें, दिनकर दादा ऐसे आशीर्वाद दें...

तत्पश्चात् प.पू. दिनकर अंकल ने अपने प्राकृद्य के 80वें वर्ष के मंगल प्रारंभ पर आशिष वर्षा की—...आज जो ये बातें हुईं, उसमें मुझे ऐसा लगा कि इतने सालों तक मैं आता था, मुझे आनंद आता था। आज मेरे ही बारे में सब बोलने लगे, तो मुझे लगा कि अब तो आने की ज़रूरत नहीं रहती है। आप सब *promise* लो कि दीदी के बारे में ज्यादा बोलोगे, तो मैं आऊँगा। हमारी गार्गी दीदी की बात पर मैं सोच रहा था कि खुले मैं अपना सब बताया और गुरुजी के साथ का एक प्रसंग बताया। तो, मैं सोच रहा था कि इसमें कुछ रहस्य होगा। तो एक दो चीज़ जो मेरी समझ में जो आई, वो मैं बताता हूँ कि जब भी गार्गी दीदी चिदाकाश हॉल आते हैं, तो गुरुजी को दिव्यभाव से इस प्रकार देखते रहते हैं कि जैसे किसी भूत ने पकड़ा हो। भगवान बोलते हैं हम भी भूत हैं। भूत किसी को जल्दी छोड़ता नहीं है, तो हम तो भूत से भी बड़े भूत हैं। दूसरा भी एक विचार आया—गुणातीतानंदस्वामी और काकाजी भी कहते हैं कि हमारे जीव को कितने भूत चिपके हैं! सुना है 51 भूत! तो उसमें से 50 तो भाग गये हैं, अब एक ही भूत जो बाकी है वो भी गुरुजी हमारा निकाल देंगे। ये तो बहुत बड़ी बात हो गई। गुरुजी बहुत दयालु हैं और हमारे लिये जो भी कहते हैं, वो हमारे भले के लिये है। मगर तीसरा मैं ये सोच रहा था कि महेन्द्र बापु को काकाजी ने जितना डांटा है, उतना किसी ने किसी को नहीं डांटा होगा! मगर आज बापु काकाजी के होकर जीये, काकाजी के लिये जीये। सो आपको भी डांटा है, तो आप भाग नहीं गई, इसलिये आप भी उसी *category* में हो। आपको



હમારા પ્રણામ હૈ ઔર વો ભૂત આપકો પસંદ નહીં હૈ, તો હમેં દે દેના। હમ ગ્રહણ કર લેંગે, કોઈ ચિંતા નહીં હૈ। માર હરેક ભક્તોનું જો ભી પ્રાર્થના કા ભાવ, દિવ્યભાવ સુના વો બુહત-બુહત અચ્છા લગા। હરેક કી બાત કરને કો જાયેંગે, તો ઘડી કો રોકના પડેગા। માર આપ સબ જો ભી આયે, હમારે ડાંકટર શેરી ભી સોચતે રહતે હોયાં કિ short time મેં કિતના નજીદીક આ ગયે, વો એક ચમત્કાર હૈ। પર, સબકા એક રહસ્ય હૈ કિ unconditional love... હમારે ગુણાતીત સ્વરૂપોનું કા કોઈ શર્તી લવ નહીં હૈ। તો, વો લવ જાળું અસર કરતા હૈ, ઉસમેં કોઈ તકલીફ હોતી નહીં હૈ। સો, હમ ભી હમારે કુટુંબ કે અંદર, હમારે office મેં અપને colleague કે સાથ એસા unconditional love જાળું રહ્યેંગે, તો બુહત ફાયદા હોગા। યહોઁ તો application કે લિયે આતે હોયાં, લેકિન બાહુર જાકર ભી હમેં ઉસ પ્રકાર જીના હૈ। તો હમારી ભાવના જાળું પરિવર્તન લાયેગી। હમારે પ્રિસીપલ સાહેબ (ડેવિડ સર) કી બેટી ડોરા કા યે ભજન સુના, તો બુહત અચ્છા લગા। માર ફિર મેં એક બાત સોચ રહા થા ડોરા કિ આપ તો english બોલને વાલે હો, પણ-મમ્મી english બોલતે હોયાં, હિંદી દોસ્તોનું સે acquired હૈ, માર ગુજરાતી બોલના તો rare હૈ। યે ગુજરાતી ભજન કા એક શબ્દાર્થ હૈ, દૂસરા ભાવાર્થ હૈ, તીસરા રહસ્યાર્થ હૈ ઔર ચૌથા તાત્પર્યાર્થ હૈ। વો તાત્પર્યાર્થ સમજાને કે લિયે દીદી સે પ્રાર્થના કરના। મેં તો યે સોચ રહા થા કિ યે લડકી દીદી કો સંબોધિત કરકે ગા રહી થી કિ આપકી મૂર્તિ ઇતની પ્યારી લગતી હૈ, તો જાળું આગે બઢના। યહ બાત પણ કો ગુજરાતી સમજ્ઞા મેં નહીં આતી, તો આપ ટીવર બન કર પણ કો ટીચિંગ કરના... ધન્યવાદ હૈ હમારે નક્ષુ કો ઉસકે જરીયે સે ડેવિડ સર કા આના હુંઓ... ગુરુજી ને અપની પરાવાળી મેં કાંતિકાકા કા ‘જહોઁ આત્મીયતા ધન્ય બની’ પેજ નં. 142 કા જો પ્રસંગ બતાયા, વો ધનશ્યામભાઈ અમીન ને લિખા હૈ। ઉસકા રહસ્ય યે હૈ કિ ધનશ્યામભાઈ ને અપને પિતાજી કાંતિકાકા કા કાકાજી કે સાથ કા જો સંબંધ થા, વો દર્શન કરવાયા હૈ। ઉસમેં હમારી જો પવર્ઝી કી લૈંડ થી વો ઔર ઉસકે બાદ નાપા મેં જો છપ્પર બનાયા થા, ઉસકા પતરા ઔર સબ કુછ જો બેચને કી બાત થી, તો આખિર મેં જો ધનશ્યામભાઈ ને લિખા હૈ, ગુરુજી ને વો હમેં દિખાયા હૈ કિ કાકાજી જો બોલેં, વો હમેં સ્વીકાર હી હૈ। ઉસમેં ધનશ્યામભાઈ કો કોઈ ચિંતા કરને કી જાળત નહીં હૈ। કયોંકિ ધનશ્યામભાઈ રાતોંરાત કુછ પતરા લેકર ટ્રક મેં ચલે ગયે થે। કાંતિકાકા કા કાકાજી કે સાથ ઇતના transparent ઔર pure સંબંધ થા કિ કાકાજી જો કહેં વો સચ માનના હૈ, વો સચ મેં ટેપ રિકાર્ડર હૈ!

તો, આજ ગુરુજી કી હી વાણી મેં હમારી દીદી કા પ્રસંગ અચ્છી તરહ સે સુનાયા, તો મુજ્જે ઉસમેં એક ઔર ભાવ આયા કિ ગુરુજી કહતે હોયાં કિ દીદી ટેપ રિકાર્ડર હૈ। માર મેં યે કહતા હું કિ દીદી કાકાજી કા ભી tape recorder હૈ ઔર ગુરુજી ભી કાકાજી કી video હોયાં। કાકાજી કા દર્શન ગુરુજી કે દર્શન મેં આ જાતા હૈ ઔર યે બાત ઇસસે ભી આગે લે જાયેં કિ યે tape recorder આજ કા નહીં હૈ, 250 સાલ પુરાના હૈ। તબ સે લાલટેન લેકર હમેં રાસ્તા દિખાતે હોયાં। તો, આજ દીદી કે પ્રાગટ્ય



दिन पर हम सब जो मायिकभाव निकालने की बात करते हैं, उसका मैं एक *short and sweet* रस्ता जो मैं जानता हूँ वो बताऊंगा कि अहोहोभाव रखेंगे, तो मायिकभाव चला जायेगा। जो भी प्रसंग बनता है, उसमें अहोहोभाव रखना है बस... जो भी कुछ होता है वो परम दिव्य और *divine* मानना है।

संतों ने बापा से पूछा कि बड़ताल वाले अक्षरपुरुषोत्तम का प्रचार करने वालों के विरोधी थे और बिना कारण आपकी व संतों की पिटाई करते थे, तो आपको कैसा विचार आता था? बापा ने कितनी अच्छी बात बताई कि स्वामिनारायण भगवान ने खुद अपनी बनाई हुई हरिकृष्ण महाराज की बड़ताल में मूर्ति है, उस मूर्ति के नज़दीक हम नहीं जा सकते थे, दूर से दर्शन कर सकते थे और वे संत तो नज़दीक जाकर मूर्ति को स्नान करवाते-पाव चंपी करते, तो उनके हाथ कितने पवित्र हो गये होंगे। उन हाथों से धीरे से धब्बा मारें, तो अच्छा नहीं लगता है। सो, मुझे तो जोर से धब्बा अच्छा लगता है, क्योंकि वो जीव तक पहुँचता है। देखो, योगीबापा तो भगवानधारक संत गुणातीत सत्पुरुष-अक्षरपुरुषोत्तम का स्वरूप, मगर हमें सिखाने के लिये ये सीख देते हैं कि जो भी प्रसंग बनता है, उसमें आप *positive* लेना चाहें तो ले सकते हैं। लेकिन, हमारा *mind* कभी-कभी *shake up* हो जाता है, वो महिमा और अहोहोभाव नहीं है इसलिये, वर्ना अहोहोभाव होगा तो योगीजी महाराज के उसी गुण का हमारे अंदर प्रवेश हो जायेगा...

प.पू. दीदी के प्राकट्योत्सव की इस विशिष्ट सभा के समापन से पहले प.पू. दिनकर अंकल और प.पू. दीदी ने प.पू. गुरुजी के साथ बैठे पू. दालिया साहेब, पू. प्रणव दालिया और उनके बेटे पू. रुहान की photo frame पू. प्रणव दालिया के परिवार को स्मृति के रूप में दी। पू. जयप्रकाश प्रजापतिजी एवं उनकी धर्मपत्नी पू. किरण भाभी ने प.पू. दीदी को श्री राम दरबार और शॉल अर्पण करके अपनी भावना व्यक्त की।

अंत में जगरांव के पू. प्रेम डॅंड्जी की नाती पू. देवांगी ने ‘नचिये ते टपीये, हर वेले हंसीये, करीये दीदार सोणे गुरुजी दा...’ भजन पर गिद्दा करके प.पू. दीदी के प्रति अपनी भक्ति अदा की। तभी पू. ओ.पी. अग्रवालजी की प्रार्थना पर प.पू. दिनकर अंकल ने भी पू. अश्विनभाई के साथ खड़े होकर थोड़ा आनंद करके सबको दिव्य मूर्ति दी। तत्पश्चात् 22 जनवरी 2024 को अयोध्या में प्रतिष्ठित होने जा रही श्री रामलला की मूर्ति का आगाज़ करते हुए पू. रौबिन-पू. शिल्पा अरोड़ाजी की बड़ी बेटी पू. कृष्णा ने ‘मेरी चौखट पर चल कर आज चारों धाम आये हैं...’ भजन पर भावनृत्य किया।

प.पू. दीदी का प्राकट्योत्सव यहीं पूरा नहीं हुआ। लोहड़ी का पर्व होने के कारण मंदिर के प्रांगण में उसका भी छोटा कार्यक्रम था। सो, कल्पवृक्ष हॉल से नीचे आकर सभी ने पवित्रता व पावनता की प्रतीक अग्नि के समक्ष ढोल पर भांगड़ा इत्यादि करके आनंद किया और फिर प्रसाद लेकर रात को करीब 11 बजे अपने गंतव्य स्थान के लिये प्रस्थान किया।

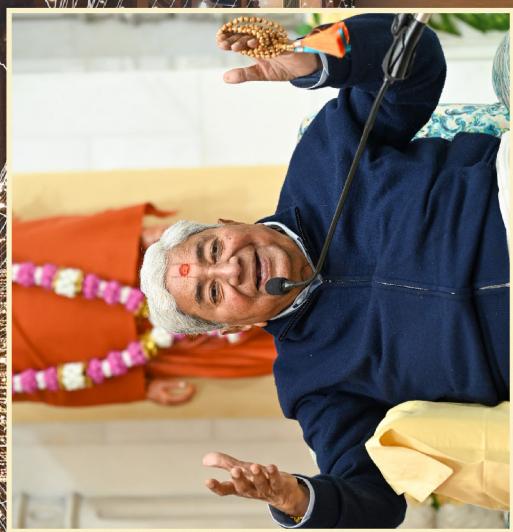
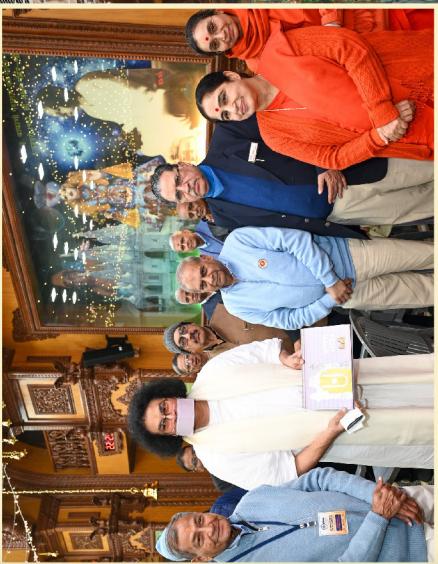


6 जनवरी – नव वर्ष में संतभगवंत साहेबजी का
विदेश के मुक्तों के साथ आगमन...



शारीरों में लिखा है— भगवान या उनके धारक संत के दर्शन ही जायें, वो ही यज्ञ या यात्रा का फल है...

—संतभगवंत साहेबजी





प्रगट प्रभु के सानिध्य में दिव्य स्मृतियाँ...





6 जनवरी 2024—नववर्ष के मंगल प्रारंभ पर संतभगवंत साहेबजी का दिल्ली मंदिर में आगमन...

दिल्ली के मुक्तों का परम सौभाग्य कहा जाये कि विक्रम संवत् 2080 के प्रारंभ अर्थात् अन्नकूट के बाद नूतन वर्ष के आरंभ होते ही प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी पंजाब के विचरण पर जाने से पहले दिल्ली मंदिर में पधारे और फिर... Gregorian calendar के अनुसार नये साल की शुरुआत में ही विदेश के कई मुक्तों को लेकर, संतभगवंत साहेबजी एवं सद्गुरु संत प.पू. अश्विनभाई अयोध्या-छपिया मंदिर के दर्शन करते हुए 4 जनवरी की सायं लखनऊ से दिल्ली पधारे। दिल्ली मंदिर से पू. सरयूविहारीस्वामी, पू. आनंदस्वरूपस्वामी, कुछ सेवक-हरिभक्त, प.पू. आनंदी दीदी एवं कुछ बहनें-भाभियाँ airport पर स्वागत एवं दर्शन हेतु गईं। तब हरिभक्तों ने संतभगवंत साहेबजी को हार अर्पण करके उनका स्वागत किया।

संतभगवंत साहेबजी के साथ बहनें होती हैं, सो स्वाभाविक ही संत दूर खड़े थे। संतों को देख कर सद्गुरु संत प.पू. अश्विनभाई उनके पास गये और जैसे कि गुरुहरि योगीजी महाराज ने उन्हें ‘साधुराम’ कह कर नवाजा, उसका हूबू दर्शन उन्होंने कराया। दोनों संत प.पू. अश्विनभाई को हार अर्पण करने लगे, तो संतभगवंत साहेबजी के प्रति अपना सेवकभाव चूके बिना, उन्होंने संतभगवंत साहेबजी को हार पहनाने के लिये कहा। और तो और... बहुत ही सहजता से संतों का माहात्म्य सबको समझाते हुए वे संतों के पाँव छूने लगे। अचानक ही उनका ऐसा gesture देख कर, उन्हें मना करते हुए पू. आनंदस्वामी तो एकदम नीचे बैठ गये। सांसारिक रीति से देखें तो ये संत प.पू. अश्विनभाई के बेटे नहीं, पोते की उम्र के हैं। लेकिन, प.पू. अश्विनभाई ने सिखाया कि माहात्म्य की दृष्टि आयु का माप तौल नहीं करती, वह तो सिर्फ और सिर्फ माहात्म्य देखती है और सबको समझाती है।

सच, प.पू. अश्विनभाई की इस बेमिसाल साधुता का दर्शन जिन-जिनको हुआ, उन्हें जिंदगीभर के लिये एक सबक मिल गया कि भले ही कितने बड़े हो जायें या हेतवालों द्वारा पूजे जायें, लेकिन यह निशान कभी भी न चूके कि हमें तो साधु-सेवक ही बनना है। फिर जब संतभगवंत साहेबजी संतों के पास गये, तो संतों ने उन्हें हार अर्पण किया। Airport पर सबको दर्शन देकर संतभगवंत साहेबजी मुक्तों के साथ Aerocity के Hotel Lemon Tree गये और वहीं ठहरे।

6 जनवरी सायं करीब साढ़े छः बजे संतभगवंत साहेबजी दिल्ली मंदिर पधारे। तालियाँ की गड़गड़ाहट से सबने स्वागत किया। प.पू. अश्विनभाई के साथ अन्य सभी को आने में देरी थी। सो, चिदाकाश हॉल में प.पू. गुरुजी के साथ वे बैठे। इस दौरान पू. राकेशभाई एवं पू. विश्वासदास ने



भजन प्रस्तुत किये। तब संतभगवंत साहेबजी की पसंदीदा तर्ज—‘दिल में छुपा के प्यार का तूफान ले चले...’ पर आधारित उनका भजन पू. विश्वासदास ने गाया। भजन सुनते हुए संतभगवंत साहेबजी मुखुकुरा रहे थे। सो, भजन पूरा होने के बाद पू. विश्वासदास से बात करते हुए, संतभगवंत साहेबजी इस गाने से जुड़ी अपने स्कूल के समय की घटना सुनाने लगे और वह सुनाते - सुनाते लगभग पौना घंटा उन्होंने अक्षरपुरुषोत्तम की शुद्ध उपासना का ज्ञान वहाँ बैठे मुक्तों को दे दिया। इसी दौरान प.पू. अश्विनभाई एवं तीन बसों में अन्य मुक्त भी आ गये। सो, सभी कल्पवृक्ष हॉल में गये और वहाँ श्री ठाकुरजी के समक्ष संतभगवंत साहेबजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. अश्विनभाई और अतिथि विशेष जैन संप्रदाय के प.पू. लोकेश मुनिजी के सान्निध्य में रात्रि को करीब पौने नौ बजे नववर्ष की स्वागत सभा आरंभ हुई। हार, शाल एवं पुष्प गुच्छ से स्वरूपों व गणमान्य अतिथियों का अभिवादन किया गया। तत्पश्चात् सबने निम्न आशीर्वाद प्राप्त किये...

प.पू. लोकेश मुनिजी

आज दिल्लीवासी परम सौभाग्यशाली हैं कि अशोकविहार स्वामिनारायण मंदिर के पवित्र प्रांगण में अश्विनदादा और साहेबजी पूरे परिवार के साथ तीर्थयात्राओं का परिभ्रमण करते-करते पथारे हैं... चुंबकीय व्यक्तित्व है, हर किसी को अपनी ओर खींचते हैं। कहा गया है—

चार मिले चौंसठ खिले, बीस रहे कर जोड़।

सात करोड़ तृप्त भये, संत मिले जिन ठौड़॥

ज्यों ही मैंने मंदिर के अंदर प्रवेश किया तो **चार मिले**-दो आंखें झधर की और दो आंखें उधर की। **चौंसठ खिले**-32 दांत झधर के और 32 दांत उधर के। **बीस रहे कर जोड़**-अभिवादन की मुद्रा में दोनों ओर हाथ जुड़ गये। **सात करोड़ तृप्त भये**-माना जाता है कि हमारे शरीर में 3.5 करोड़ रोम छिद्र हैं। रोम-रोम पुलकित हो जाता है, जब ऐसे संतों के दर्शन का अवसर मिलता है...

भगवान महावीर ने कहा है—धर्म कहाँ ठहरता है? तो जो सरल, निर्मल व पवित्र हैं वहाँ। इनकी साक्षात् मूर्ति हमारे सामने विद्यमान हैं। महापुरुषों के संदेश का एक ही संदेश है कि हम अपने जीवन को संतुलित करें। हमारी भारतीय संस्कृति में उपनिषद को पढ़ें तो चतुर्थ पुरुषार्थ की कल्पना की गई है—अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष। इन चारों में जब संतुलन होता है, तब स्वरथ समाज का निर्माण-संरचना होती है। समाज में विकृतियाँ कब पनपती हैं, जब केवल अर्थ और काम के पीछे खूब दौड़ रहती है। गीताजी का अंतिम श्लोक है—

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।

तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्धुवा नीतिर्मिर्मम॥



लोकमान्य तिलकजी ने हटकर टिप्पणी करते हुए, योगीराज कृष्ण को अध्यात्म का प्रतीक माना और अर्जुन को भौतिकता का प्रतीक मानते हुए कहा कि जहाँ पर अध्यात्म और भौतिकता के बीच में संतुलन है, वहीं पर विजय, भूति, श्री है और वहीं पर लक्ष्मी है। इसलिये साहेबजी कितना श्रम करते हैं। हम सबके भीतर तीन प्रकार की चेतना हैं। **स्वार्थ की चेतना, परार्थ की चेतना और परमार्थ की चेतना।** मेरा सो मेरा, तेरा सो मेरा ये हैं—**स्वार्थ। परार्थ** का अर्थ है—तेरा सो तेरा, मेरा सो मेरा। किंतु **परमार्थ**—जो तेरा है वो तेरा और मेरा जो है, वो भी तेरा। तो, **साहेबजी** इतना पुरुषार्थ क्यों कर पा रहे हैं, क्योंकि उनके भीतर का स्वार्थ विलिप्त हो गया है। इसलिये निरंतर उनकी परार्थ और परमार्थ की यात्रा जारी है। जब तक स्वार्थ प्रबल होता है, तब तक परार्थ और परमार्थ की बात न सुनाई देती है और न ही दिखाई देती है... साहेबजी का स्वार्थ विलीन हो गया है, इसलिये पूरी दुनिया में भ्रमण करके परार्थ और परमार्थ की राह दिखाते हैं। तो, मैं साहेबजी का दिल्ली मंदिर के प्रांगण में, भारत की राजधानी में जैन धर्म व मेरी संस्था की ओर से आपका खूब-खूब स्वागत-अभिनंदन करता हूँ और साथ-साथ मैं ये भी निवेदन करना चाहता हूँ कि आप पूरी दुनिया में जाकर संदेश दो...

प.पू. अश्विनभाई (सोगरी)

...क्रिसमस-नाताल की छुटियों का सदुपयोग करने लंडन, अमेरिका, कनाडा और आस्ट्रेलिया में जन्मे व पले-बढ़े लगभग 150 लड़के-लड़कियों को भारतीय संस्कृति, भारतीय संस्कारों और भारतीय धर्म तथा मंदिरों का प्रत्यक्ष परिचय कराने की यात्रा गुरुहरि साहेबजी की प्रेरणा से की। पहले सप्ताह में सौराष्ट्र के अपने सभी तीर्थों, विशेषतः सोमनाथ और भालका तीर्थ के दर्शन किये। दूसरे विभाग में भगवान श्री स्वामिनारायण के प्रागट्य स्थान छपिया, भगवान श्री रामचंद्रजी की जन्मभूमि अयोध्या, दिल्ली में अक्षरधाम और प्रधानमंत्री संग्रहालय देख कर, अशोकविहार के श्री स्वामिनारायण अक्षरपुरुषोत्तम मंदिर में प.पू. गुरुजी के सान्निध्य-श्रीचरणों में आज यात्रा की पूर्णाहुति कर रहे हैं... प.पू. गुरुजी के श्रीचरणों में प्रार्थना करें कि हमारी जीवनयात्रा constantly गुरुमुखी बनकर आगे ही आगे चलती रहे और हमारे जीवन में परिवर्तन आता रहे, ऐसे बढ़िया आशीर्वाद आप और आनंदी दीदी बरसाओ—यही नूतन वर्ष की मंगल प्रार्थना करते हैं। 2024 के वर्ष में आपके दर्शन पाकर हम सब सौभाग्यशाली हुए हैं और ऐसी कृपा आप हमेशा बरसाते रहो यही श्री ग्राकुरजी के चरणों में प्रार्थना करते हैं।

प.पू. गुरुजी

पू. अश्विनभाई ने अब यहाँ यात्रा की पूर्णाहुति का संकेत दिया। एक ही बात करनी है कि सभी ने जैसे कहा या इच्छा व्यक्त करी कि शांति के लिये सबकी दौड़ है। तो, यह विरोधाभासी नहीं है। एक



तरफ शांति और दूसरी ओर दौड़। पर, जहाँ साहेबजी जैसी विभूति मौजूद हों, वहाँ ये दोनों बातें एक साथ हो सकती हैं। जैसे पहले भी कहा कि शांति भगवान के चरणार्विद में है और उनके चरणार्विद में संत विराजमान रहते हैं। साहेब अखंड भगवान में मन निमग्न रख कर प्रवृत्ति करने वाली विभूति हैं। तो, हम सब अगर साहेब से चिपके रहेंगे, उन्हें पकड़े रखेंगे तो वो शांति सहज ही हमारे साथ अखंड रहेगी...

संतभगवंत साहेबजी

शास्त्रों में लिखा गया है और संतों द्वारा कहा गया है कि भगवान या भगवान धारक संत के दर्शन हो जायें, वो ही यज्ञ का-यात्रा का फल है। तो, इन संतों के दर्शन करके हमें समग्र यात्रा का फल मिल गया। गुरुजी के सानिध्य में गुरुजी और संतों का दर्शन होना, इसके जैसी कोई प्राप्ति नहीं। योगीजी महाराज ने युवकों में महिमा की लहरें उछालीं। बापा बात करते तो क्रैफ चढ़ जाता। वे वैराग्य की बातें करते, तो युवक साधु बन जाते। उनके हृदय में इतना सारा माहात्म्य था। महात्म्यगान करने वाले बहुत हैं, पर ‘शीधने रहीये कंगाल संतो...’ कीर्तन की पंक्ति है कि अमल सहित वात उचरवी अर्थात् किसी को बात करने से पहले वह खुद अपने वर्तन में होनी चाहिये। तो, बापा जो बातें करते वो उनके वर्तन में थीं।

मक्तों-संतों को देखकर उनका हृदय नाच उठता था, इतनी माहात्म्य की बातें करते। बापा ने जिन-जिनको दीक्षा दी, जिन-जिनको अपनी दृष्टि में लिया, उन सभी को उन्होंने आज गुणातीतभाव में रहता कर दिया। यही बापा की महानता कही जाये। वे खूब छुपे रहे। महंतस्वामी, हरिप्रसादस्वामी, प्रेमरवलपस्वामी, गुरुजी, ये ब्रतधारी संतों जैसे अश्विनभाई, शांतिभाई, रतिभाई, सनंदभाई, वी. एस. इत्यादि को साधु नहीं होना था। पर, केवल बापा के असाधारण प्रेम, काकाजी, पप्पाजी, सोनाबा जैसों के समागम, योग से सब साधु हुए। बापा ने सभी को कहा था कि गुणातीतानंदस्वामी ने जो ब्रह्मविद्या पढ़ाई, उनमें से आप सब हो; गुणातीतभाव को पाये हुए साधु हो...

मुझे इसलिये याद है क्योंकि 1967 में श्रीजी कॉलोनी में भीखाकाका के घर छत पर युवक मंडल की सभा में हमने गुरुजी का विदाई समारोह मनाया था। उस समय गुलजारीलाल नंदा मिनिस्टर थे और भारत साधु समाज में अग्रणी थे। इसलिये गुरुजी जब दिल्ली आये, तो भारत साधु समाज में उनके ठहरने की व्यवस्था थी। उनके साथ प्रेमरवलपस्वामीजी सेवा में आये थे। तब कोई आता ही नहीं था। हमारे वी.एस. पहली बार आये, तो गुरुजी खुश हो गये... पर धन्य है गुरुजी की



गुरुभक्ति, समर्पण और अपने गुरु व इष्टदेव के प्रति परम श्रद्धा को कि वे दिल्ली आते ही रहे। काकाजी से ये नहीं कहा कि वहाँ कोई भक्त नहीं है, फिर भी मुझे दो-दो महीने वहाँ क्यों रखते हो? और आज उनकी तपस्या, साधुता, सर्वदेशीयता और अपने इष्टदेव-गुरु को राजी करने के उनके भाव से कैसा समाज तैयार हो गया! सच में ये गुणातीतभाव को पाये हुए साधु का दर्शन है। ऐसे साधु की प्राप्ति ही जीवन में सर्वश्रेष्ठ प्राप्ति है। ऐसी प्राप्ति का अगर माहात्म्य समझेंगे, तो निरंतर केफ रहेगा। ऐसे गुरुजी के सान्निध्य में संत व युवक, आनंदी दीदी, संत बहनें व सारा मंडल अद्भुत भक्ति कर रहा है...

हमारी अक्षरपुरुषोत्तम उपासना में साधुता यानि सरल, सहज, आडंबररहित, दास का दास होना... अब धर्म की सीमायें मिट रही हैं। चाहे किसी में भी श्रद्धा हो, लेकिन एक-दूजे के प्रति अंतर में प्रेम उमड़ता है। अब रामचंद्रजी विराजमान होने जा रहे हैं, तो सतयुग की निशानी मिल रही है। जिसमें धर्म और धर्म के प्रति आपस में, संतों के प्रति, धर्मगुरुओं के प्रति, अरस-परस भाव प्रगट हो रहा है। हम गोडेल, गढ़ा, सारंगपुर और कल नोएडा के अक्षरधाम में गये थे। संतों ने हम सबका स्वागत किया। ये युवकों-युवतियों के लिये अच्छी व्यवस्था की। यह देख कर एहसास होता है कि सच में ये युग परिवर्तन की निशानी है।

हम यहाँ मंदिर में जब आये तो आंगन में कलश रखा था। मुझे कहा कि इसका पूजन करना है। मैंने कहा—लोकेश मुनि आ रहे हैं और गुरुजी, अश्विनभाई, मनोजभाई और जो सारा यूथ आ रहा है, उनकी हाजिरी में कलश का पूजन करेंगे। इसलिये खाना खाकर जब रवाना होंगे, तब नीचे कलश का पूजन करेंगे। गुरुजी से प्रार्थना है कि देश-विदेश से हमारे सब युवा आये हैं, पढ़े-लिखे हैं और कहुँ तो बड़ी जगहों पर काम करते हैं। पर, उनमें प्रभु को राजी करने का भाव-भूख है। प्रभु का होकर जीवन जीने की अभीप्सा है। उस बात को पूरा पोषण मिले, फूले-फलें और अमेरिका में वहाँ के कायदे-कानून के मुताबिक रह कर भारतीय परंपरा को विशेष उज्ज्वल बनायें, ऐसे बन कर रहें यही आशीर्वाद देना—यही प्रार्थना...

मैं अपनी बात करता हूँ। जब वी.पी. साइंस कॉलेज में पढ़ता था, तो एक बार बापा का खत आया कि हाल में युवकों की सभा करो। तो, हॉल में सभा की। फिर बापा ने दूसरी आज्ञा करी थी कि किसी बुजुर्ग का प्रवचन नहीं रखना, आप सब युवकों का ही बोलने का रखना। तो मेरे हिस्से स्वागत का पहला प्रवचन आया। मैं खड़ा हुआ तो— बोलो स्वामिनारायण भगवान की जय, अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की जय वगैरह बोला। फिर प.पू. योगीजी महाराज बोल कर, अचानक blank हो गया। 5



मिनिट खड़ा रहा, पर मुझसे बोला ही नहीं गया, इसलिये बैठ गया। शांतिभाई, अश्विनभाई वगैरह ने फिर पूरी सभा takeover की।

फिर बापा मेरा हाथ पकड़ कर स्टेज से नीचे उतर रहे थे, तो खड़े रहे और मुझसे पूछा—क्यों कुछ बोले नहीं?

मैंने कहा—बापा एक तो आप विराजमान थे और फिर आपके नाम का दर्शन किया, तो मेरा दिमाग blank हो गया, विचार लक से गये।

यह सुन कर बापा हँस पड़े और फिर दो धब्बे मार कर बोले—आज से खूब बोला जायेगा। जाओ महाराज बोलेंगे।

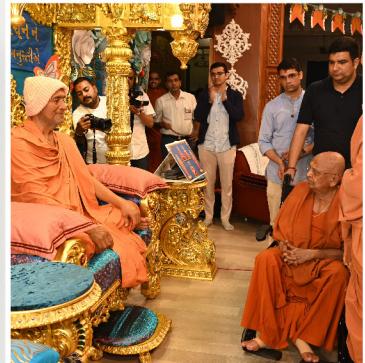
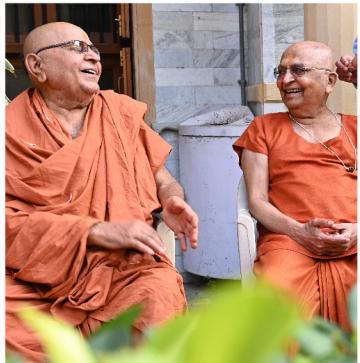
तब से थोड़ा-थोड़ा बोलता हुआ हूँ बाकी तो आता नहीं था, गुरु का आशीर्वाद है।

सभा के अंत में संतभगवंत साहेबजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. अश्विनभाई, प.पू. लोकेश मुनिजी एवं प.पू. मनोजभाई सोनी ने 22 जनवरी को अयोध्या में होने वाली श्री राम ललाजी की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा निमित्त ‘अक्षत कलश’ का पूजन किया।

मंदिर में प्रसाद विदेश से आये मुक्तों की परसंद के अनुसार बनाया था। सभा के बाद रात को करीब साढ़े दस-ज्यारह बजे प्रसाद लेकर सबने प्रस्थान किया। ठंड काफ़ी होने के कारण प.पू. गुरुजी बाहर नहीं आये और ‘जेतलपुर’-शीशे के cabin में बैठ कर सबको दर्शन दे रहे थे।

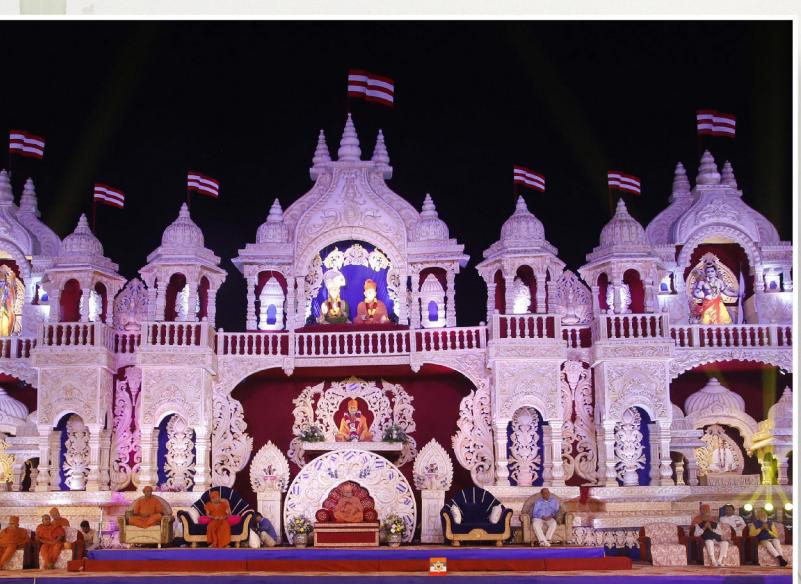
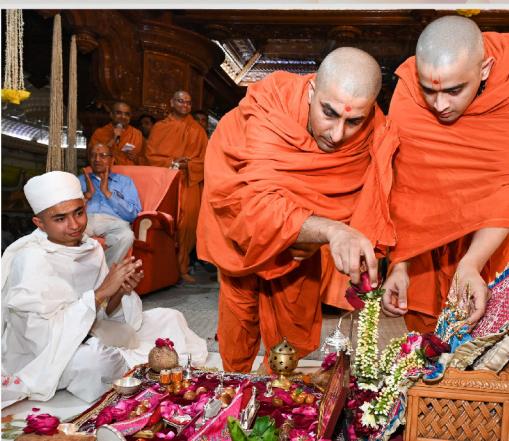
मंदिर से विदा लेते हुए संतभगवंत साहेबजी, प.पू. अश्विनभाई ने पू. सुहृदस्वामीजी एवं गणमान्य अतिथियों के साथ श्री रामजी की कलात्मक झाँकी के पास खड़े रह कर फोटो खिंचवाई। यहाँ पर भी गुरुहरि योगीजी महाराज के साधुराम—प.पू. अश्विनभाई ने संतों के माहात्म्य का दर्शन कराया। फोटो खिंचवाने के लिये जब सब एकत्र हो रहे थे, तो प.पू. गुरुजी के स्थान पर संतभगवंत साहेबजी ने पू. सुहृदस्वामीजी को भी बुलाया। पू. सुहृदस्वामीजी उनके पास आकर खड़े रह गये। लौकिन, जैसे ही प.पू. अश्विनभाई को आता देखा, तो वहाँ से हट कर पू. सुहृदस्वामीजी ने प.पू. अश्विनभाई को जगह दी और पू. सुहृदस्वामीजी का हाथ ज़ोर से पकड़ कर, प.पू. अश्विनभाई तो उन्हें अपने आगे खड़ा रहने का आग्रह करते रहे। पर, गुरुहरि काकाजी के सिद्धांतों पर अडिंग रहने वाले प.पू. गुरुजी का सेवन किये पू. सुहृदस्वामीजी के विनम्र निवेदन को स्वीकार कर प.पू. अश्विनभाई उनकी जगह खड़े हो गये। यूँ दो शिष्यों ने अपने वर्तन से अपने गुरुओं का परिचय भी कराया और वहाँ उपस्थित मुक्तों को इस दिशा में चलने की सीख देकर निहाल किया। इस प्रकार गुणातीत स्वरूपों की दिव्य निशा में आयोजित नववर्ष स्वागत सभा का समापन हुआ।

26 दिसंबर 2023 – प्रगट ब्रह्मस्वरूप ग्रेमस्वरूपस्वामीजी के
79वें प्राक्ट्रयोत्सव की पूर्व संध्या...





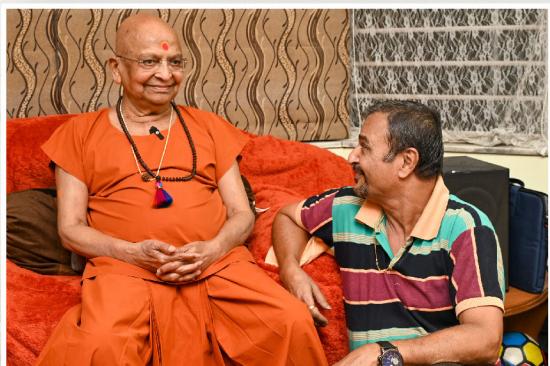
27 दिसंबर 2023 – प्रगट ब्रह्मस्वरूप
प्रेमस्वरूपस्वामीजी के 79वें प्राकट्य दिन की
दिव्य स्मृतियाँ...



28 दिसंबर 2023, सुबह—गुणातीत समाज के केन्द्रों के दर्शनार्थ...



28 दिसंबर 2023, सायं—अमदाबाद के मुक्तों को
य.पू. गुरुजी के दर्शन का लाभ मिला...





27 दिसंबर 2023

प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी का 79वाँ प्राकट्य यर्च

गुरुवर्य योगीजी महाराज के वरद हस्तों से दीक्षित एवं गुरुहरि काकाजी महाराज, गुरुहरि पर्पाजी महाराज एवं ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी के श्रीमुख से प्रवाहित हुए माहात्म्य के गंगासागर में सराबोर संतों को परस्पर अद्भुत महिमा है और... प.पू. गुरुजी भी अपने वर्तन से पल-पल ऐसा दर्शन करा कर मुक्त समाज में माहात्म्य का सिंचन भी कर रहे हैं। 21 दिसंबर 2023 की सायं दुबई से प.पू. गुरुजी दिल्ली मंदिर लौटे कि तुरंत ही गुजरात जाने का कार्यक्रम बना लिया; क्योंकि 27 दिसंबर को हरिधाम में ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी के उत्तराधिकारी एवं प.पू. गुरुजी के सखास्वरूप प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी का 79वाँ प्राकट्य दिन ‘आत्मीय युवा महोत्सव’ के रूप में मनाया जाने वाला था।

25 दिसंबर की दिल्ली से वडोदरा जाने की टिकिट कराई गई, लेकिन वह flight cancel हो गई, सो 26 दिसंबर की दोपहर की flight से प.पू. गुरुजी, पू. सुहृदस्वामीजी एवं प.पू. दीदी तथा कुछ मुक्तों के साथ अमदावाद के लिये रवाना हुए। अमदावाद airport पर वडोदरा से पधारे हरिधाम के दो संत व सेवक एवं दिल्ली मंदिर से जुड़े अमदावाद के मुक्त सबके स्वागत हेतु आये थे। पू. धाराभाभी दोशी एवं पू. उवर्णी बहन ठक्कर सबके लिये बहुत भाव से भोजन और चाय बना कर लायी थीं। थोड़ा प्रसाद लेकर प.पू. गुरुजी, संत व सेवक हरिधाम जाने निकले और प.पू. दीदी बहनों के साथ प.पू. हंसा दीदी के दर्शन हेतु गुणातीत ज्योत - वल्लभ विद्यानगर के लिये रवाना हुईं।

प.पू. गुरुजी के हरिधाम पहुँचने पर, प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी एवं संतों ने हार व पुष्प गुच्छ से उनका स्वागत किया और फिर सबको पौंक का प्रसाद चिरिलाया। तत्पश्चात् ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी के समाधि स्थान पर दर्शन करके, उनके प्रसादिक स्थल अनिर्देश में प्रासादिक वस्तुओं का दर्शन करके ‘योगी प्रार्थना हॉल’ में गये।

इसी प्रकार, वल्लभ विद्यानगर प.पू. हंसा दीदी के दर्शनार्थ गई प.पू. दीदी का गुणातीत ज्योत की बहनों ने सत्कार करके अल्पाहार कराया और फिर प.पू. हंसा दीदी ने अपने कक्ष की बैठक में मातृत्वभाव से आइसक्रीम व वेफर्स का प्रसाद सबको दिया। तत्पश्चात् प.पू. ज्योति बहन के कक्ष में उनकी मूर्ति का दर्शन करके सब अनुपम मिशन गये। ‘पारमिता’ में संतभगवंत साहेबजी विदेश से आये भक्तों को आशीर्वाद दे रहे थे, सो उनके दर्शन हेतु प.पू. दीदी बहनों को साथ लेकर वहीं गईं। पुष्प हार से प.पू. दीदी का स्वागत हुआ। संतभगवंत साहेबजी की आङ्गा से प.पू. दीदी ने सभा में



आशिष याचना की। सभा के बाद मंदिर में दर्शन करके, गुरुहरि काकाजी महाराज, ब्रह्मस्वरूपीणी सोनाबा एवं सद्गुरु संत शांतिदादा के समाधि स्थल पर दर्शन व परिक्रमा करने गये। समाधि स्थल पर संतभगवंत साहेबजी स्वयं प.पू. दीदी को आग्रह करने आये कि रात्रि का प्रसाद लेकर ही जाना है। इससे भी अधिक, प.पू. दीदी व बहनें जब प्रसाद ले रही थीं, तब भी संतभगवंत साहेबजी वहाँ उपस्थित रहे। उनके वात्सल्यभरे प्रसाद से तृप्त होकर सब हरिधाम गये।

ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी के निर्वाण दिन 26 जुलाई की सूर्ति में प्रति माह हरिधाम में 26 तारीख को भजन संध्या होती है। सो, रात को ‘योगी प्रार्थना हॉल’ में प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. निर्मलस्वामीजी, प.पू. दिनकर अंकल, प.पू. भरतभाई, प.पू. दासस्वामीजी एवं वडील संतों के सान्निध्य में भजन संध्या का आयोजन था। ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी की मूर्ति के आसन के समीप प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी के लिये आसन लगाया था। लेकिन, प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी ने खूब आग्रहपूर्वक अपने आसन पर प.पू. गुरुजी को विराजमान किया। तत्पश्चात् भजन संध्या आरंभ हुई। संतों, युवकों, दिल्ली के पू. राकेशभाई शाह एवं पू. विश्वास ने ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी का माहात्म्य प्रकट करते जोशीले एवं हृदयस्पर्शी भजन प्रस्तुत किये। इन भजनों को सुन कर मुंबई के पू. ओ.पी. अग्रवालजी, पू. अनिलभाई माणेक सहित उपस्थित कई भक्तगण आनंद से नाचने लगे। पूरा वातावरण दिव्यता से भरपूर था और स्पष्ट प्रतीति हो रही थी कि ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी आज भी जीवंत हैं और प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी के द्वारा प्रकट रह कर भक्तों को अपनी मूर्ति का वैसा ही सुख दे रहे हैं। रात को करीब ज्यारह बजे भजन संध्या पूरी हुई और सब विश्राम में गये।

अगले दिन यानि 27 दिसंबर 2023 को प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी के 79वें प्राकट्य दिन की मंगलकारी सुबह करीब 10 बजे हरिधाम मंदिर के ‘ज्ञानयज्ञ हॉल’ में महापूजा आरंभ हुई और प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों एवं बड़े संतों के करकमलों से दो मुमुक्षुओं—पू. जाग्रतभाई तथा पू. पार्थभाई ने पार्षदी दीक्षा प्राप्त की। अंत में प.पू. दिनकर अंकल, प.पू. गुरुजी एवं प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी ने निम्न आशीर्वाद से दीक्षा विधि संपन्न की—

प.पू. दिनकरभाई

आज स्वामीजी, काकाजी, पप्पाजी, साहेबजी, गुरुजी, निर्मलस्वामी और सभी संतों के लाडले प्रेमस्वरूपस्वामीजी के 79वें प्रागट्य का उत्तम दिन है। अगले साल उनके 80वें प्रागट्य दिन का हम सब उमंग से झंजार करेंगे और उसे भव्यता से मनायेंगे। इसलिये आज उसके प्रारंभ में स्वामीजी के आशीर्वाद से हम सब इकट्ठे हुए हैं। स्वामीजी ने हमें खूब-खूब सुखी किया है। प्रेमस्वरूपस्वामीजी



को राजी करने के लिये आज दो दिव्य मुक्त जाग्रतभाई और पार्थभाई पार्षदी दीक्षा ले रहे हैं... जाग्रतभाई के दायें हाथ पर अक्षरब्रह्म का बढ़िया मार्क बना है। महापूजा के दौरान मुझे उसका दर्शन हुआ करता था। हम सबको यही बनना है, अक्षरब्रह्म होकर पुरुषोत्तम की उपासना करनी है। आज प्रेमस्वरूपस्वामीजी ने इन दोनों भुलकों को पार्षदी दीक्षा दी और अब जल्दी से उन्हें भगवती दीक्षा भी मिल जाये। अब प्रेमस्वरूपस्वामीजी, त्यागवल्लभस्वामीजी और सब संतों की सेवा में दोनों लग पड़े। अपनी बौद्धिक *expertise* अब आध्यात्मिक *expertise* के काम में लगाना। आप जो कुछ भी जानते, करते या सोचते हो, वो सब अब प्रेमस्वरूपस्वामीजी और संतों की प्रसन्नता के लिये करना और जैसे कि हरिप्रसादस्वामीजी कहते थे, तो तुरंत ही हमारा तंत्र अक्षरब्रह्म का स्वरूप बन जायेगा और हमें उसी स्वरूप से ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म की भक्ति करनी है। मुझे बहुत बातें करनी हैं, मगर संतों, प्रेमस्वामीजी और गुरुजी के भी हम आशीर्वाद लें।

प.पू. गुरुजी

दिनकर अंकल ने आशीर्वाद देने की बात कही। वास्तव में तो महाराज, गुणातीत स्वरूपों, प्रत्यक्ष स्वरूपों के आशीर्वाद हम पर बरस ही रहे हैं। उसका सबूत यह है कि हमें भगवान भजने के रास्ते पर चलने का मन हुआ! वर्ना दुनिया के फेल-फिटूर, जाहो-जलाली को छोड़ कर इस रास्ते चलने का विचार संभव ही नहीं है। प्रेमस्वामीजी जैसे किसी बड़े संत की कृपा हो गई हो, तब ही इस रास्ते चल पायें, जो इन दोनों पार्षदों पर हुई। अब हमें इतना ही करना है कि जिस समूह में हम रहते हैं, महाराज ने हमें जहाँ रखा है, जहाँ हमारे गुरुहरि प्रेमस्वरूपस्वामी हैं, उस समाज में सुहृदभाव और आत्मीयता से रहें कि मैं इस समाज का और ये समाज मेरा। जैसे हम अपने परिवार के लिये मानते थे कि मैं बृहद गुणातीत समाज का! हमें संकुचितता से नहीं जीना है। स्वामिनारायण के संबंध वाला जहाँ कहीं भी हो; कैसा भी हो-जो भी हो, वो मेरा है और मैं उनका हूँ। मुझे उनकी सेवा करनी है; उनका आशीर्वाद लेना है, भले छोटा हो या बड़ा। इस भावना से यदि जीयेंगे, तो सही अर्थ में ब्रह्मज्ञान के सच्चे रास्ते पर हम चले हैं, ऐसा कहा जाये और तब ही ब्रह्म की वो विरासत हमें सनाथ करती है। दूसरी कोई बात करनी नहीं है। प्रेमस्वामी को आगे रखकर हरिधाम के इस समाज में, गुणातीत समाज में ऐसे ओतप्रोत हो जाना कि हमें कोई कसनी महसूस न हो। वर्णा यदि मन के साथ दोस्ती रखेंगे, तो कुछ भी होगा तो तकलीफ लगेगी। परंतु, ऐसे संत के प्रति यदि प्रीति होगी, तो ऐसा होगा कि मुझे ये स्वामी को किसी भी क्रीमत पर राजी कर ही लेना है। सो, जो इस रास्ते पर चलने का सूत्र लेकर लग पड़ेगा, उसे कोई कसनी लगेगी नहीं। हंसते-खेलते हुए कब प्रेमस्वामी रूप बन जायेंगे और आखिर में प्रेमस्वामी स्वरूप बन जायेंगे, वो हमें पता भी नहीं



चलेगा। सभी स्वरूप हम पर ऐसे आशीर्वाद बरसायें कि हम इस रास्ते त्वरित गति से चलते हो जायें और स्वामीजी भी राजी होकर खुले हाथों से हम पर आशीर्वाद बरसायें, यही प्रार्थना।

प.पू. ग्रेमस्वरूपस्वामीजी

गुरुहरि स्वामीजी की हाजिरी में ये दो लड़के त्यागाश्रम के मार्ग पर भुलकूँ की यात्रा करने के लिये बहुत सहजता से तैयार हो गये। दीक्षा का कोई प्रोग्राम नहीं था, लेकिन ये तैयार हुए इसलिये यह प्रोग्राम बनाया। दोनों के माँ-बाप को खूब-खूब धन्यवाद है। शास्त्रों में लिखा गया—**जननी जियो ऐ गोपीचंद की। आज घर-घर में गोपीचंद तैयार हो गये।** एक माँ ने अपने इकलौते बेटे को टीका करके भेजा है, इसके फादर और बड़े भाई बैठे हैं। दूसरे के पिताजी थोड़े समय पहले धाम में सिधारे। पर, महाराज, स्वामी और गुरुहरि की कृपा से अद्भुत समाज हमें बरक्षीश में मिला है। हम अद्भुत भाग्यशाली हैं कि गुणातीत स्वरूपों की गोद मिली-ऐसे संत मिले। पू. दिनकरभाई और पू. गुरुजी ने बहुत अच्छी बात कही। इसके अलावा कुछ करने जैसा है ही नहीं। इतना करेंगे तो महाराज, स्वामी और गुरुहरि हमारी साधना संभाल लेंगे। हमें कुछ करना नहीं पड़ेगा, साधना मात्र की पूर्णाहुति हो जायेगी। पर, जाग्रत रहकर निर्मलस्वामी, दासस्वामी, त्यागस्वामी, संतस्वामी जैसे साधु की गोद में हम पड़े रहें, बस इतना ही करना है। **स्वामीजी, काकाजी, पप्पाजी** एक बात कहते थे—‘पड़े रहना’ मतलब इधर-उधर किसी का देखना नहीं, किसी का नोट करना नहीं, विचार नहीं करना—इसे ‘पड़े रहना’ कहते थे। और योगीबापा के सूत्र—जैसा-तैसा, ऐसा-वैसा, यहाँ-वहाँ को पकड़ कर हमें दौड़ना है और कुछ नहीं करना। दिनकरभाई ने अच्छी बात करी कि हमारी जिन क्राबलियतों का इस्तेमाल घर पर करते थे, उनका अब मंदिर में भवित्वरूप कार्यों में करना। चार बड़े संतों की आङ्गा से जीवन जीना। इस रास्ते चलेंगे, तब बाधायें तो आयेंगी ही। मन-बुद्धि हमारे साथ हैं, इसलिये रास्ते में गड़के तो आने ही वाले हैं, प्रसंग ज़रूर बनेंगे। लेकिन स्वामीजी और गुणातीत स्वरूपों के जीवन के रहस्य रूप पाँच मुद्दों की तरफ हमें नज़र रख करके जी लेना है। वो ये कि प्रसंग बनें, तो *retreat* करना है, भूल जाना है, सहन कर लेना है, झुक जाना है और पिघल जाना है।

गुरुजी की तबियत अच्छी नहीं रहती, फिर भी वे आशीर्वाद देने आये हैं। यह हमारे लिये तो खूब आनंद की बात है, पर थोड़ा दुःख भी होता है। कल रात से उनके चरणों में सूजन आ गई है। पर, इतनी उमंग से वे आये और इससे भी अधिक दो-तीन दिन पहले तो दुबई से लौटे थे। फिर एक flight miss हुई, तो दूसरे दिन की flight से दोपहर का आराम किये बिना पथारे। सच में हमारे लिये बहुत बड़ी बात कही जाये। **दिनकरभाई** इतनी दूर शिकागो से आशीर्वाद देने आये। ऐसे



माँ-बाप धरती पर कहाँ मिलेंगे? सच कहता हूँ कि अपना सगा बाप भी ऐसी तबियत में हमारे पास न आये। सो, हम खूब भाग्यशाली हैं, यही बात करनी है। हम हमारी चिंता गुरुहरि स्वामीजी के चरणों में रख देंगे या इन चार संतों को सौंप देंगे, तो हमें कोई चिंता करनी नहीं पड़ेगी। दोष, स्वभाव, प्रकृति के कारण ही तो महाराज ने हमें जन्म दिया है। लेकिन, वो सोचने की जल्दत नहीं है। इन चार संतों के चरणों में सब छोड़ देंगे, तो महाराज और स्वामीजी के विश्वास से मैं पक्का-यकीन से कहता हूँ कि कभी कोई मायूसी नहीं आयेगी। सिर्फ आनंद और आनंद ही रहेगा। जैसे बंदर बूढ़ा होने पर भी गुलाटी मारना नहीं भूलता, ऐसे जड़ स्वभावों के कारण हम जान-बूझ कर कुरेद-कुरेद कर दुःख उत्पन्न करते हैं। मगर हमें किसी की भी झँझट में पड़ना नहीं है। योगीजी महाराज अकसर कहते— हमें अपनी ही जलती दाढ़ी बुझानी है। योगी बापा ने इतनी सहजता से मस्ती करते-करते हमें उपनिषद और वेदों का ब्रह्मज्ञान दे दिया। सच है ना गुरुजी? स्वामीजी भी पुराने मंदिर में बात करते थे कि हमें दूसरों के कल्याण की चिंता है। तो, हमें किसी की भी झँझट में नहीं पड़ना है, किसी का देखना नहीं है। हमारा साथी-मित्र क्या कर रहा है, वो भी हमें सोचना नहीं है। सिर्फ अपना ही देखना है। गुरुजी, दिनकरभाई, निर्मलस्वामी और ये संतों ने ऐसा ही जीवन जीया है। तो, हमें बस उनकी ओर निगाह रख करके जीना है। भगवान् स्वामिनारायण, गुणातीत स्वरूपों और विशेषतः गुरुहरि स्वामीजी के जीवन में डूब के जीना है और कुछ करना नहीं है। आखिर में महाराज, स्वामी, शालीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी-पप्पाजी, गुरुहरि स्वामीजी, साहेबदादा, गुरुजी, दिनकरभाई और बड़े संतों के चरणों में इतनी ही प्रार्थना करनी है कि गुरुजी और दिनकरभाई दोनों स्वरूपों ने जो आशीर्वाद के रूप में बातें करीं, वो हमारे जीवन में साकार हों। हमें उन्हें पकड़ने का बुद्धियोग मिले। यहाँ से खड़े होने के बाद भूल न जायें। ये कपड़े पहनने के बाद एक जाग्रतता आ जाती है और स्वामीजी तो हमसे कैसा कराना चाहते हैं! वे कहते थे कि हरिधाम के नीम के पेड़ भी हमसे करोड़ों गुण बड़े हैं। माहात्म्य के ये शब्द जब से सुने तब से आज तक कानों में गूंजते हैं। योगी बापा ने हमें जीवन का पहला पाठ पढ़ाते हुए कहा था कि धूल जैसे भक्त का भी अभाव नहीं लेना। ये बात स्मृति के साथ अंदर गूंजती है। हम ये बात पकड़ के चलेंगे, तो कुछ करना शेष नहीं रहेगा। तो महाराज, स्वामी सभी के चरणों में इतनी ही प्रार्थना कि सहजता से ये पकड़ पायें और उस तरफ ही नज़र रहें। देह को केवल-केवल-केवल सेवा में घिस डालना है, इस पर दया नहीं करनी। काकाजी अपनी जाँच पर ज़ोर से मुक्का मारते हुए कहते थे। वह देख कर हम काँप जाते थे। स्वामीजी ने भी पूरा जीवन सेवा करी और बापा की सेवा में खो गये। योगी बापा ने यह बात लिखी है कि स्वामीजी 17 departments संभालते थे, खूब विचारने



की बात है। फिर भी स्वामीजी ने जैसे योगी बापा का सेवन किया था, वैसा ही सेवन उन्होंने दिव्यभाव और सुहृदभाव रख कर उस समय के समाज का किया। इसलिये तो स्वामीजी कहते थे कि हमें दस साल दस दिन जैसे लगे। ऐसा कहना बहुत मुश्किल बात है। गुरुजी और हमने तो उस समाज का दर्शन किया है, कैसा था? और... अब तो कितना महिमा वाला समाज है। योगी बाप की महिमा नहीं थी, ऐसा काकाजी हमें बताते थे। काकाजी तो उससे भी आगे की बात कहते थे— जानवरों में प्रगट हुए योगी महाराज! अभी तो हम कुछ भी कहें, तो हमारे लिये जान देने को तैयार हों, ऐसे कितने भक्त हैं। तो, **त्यागाश्रम** पर चले हुए हम सब साधकों की जिम्मेदारी खूब बढ़ जाती है। सबके पास बस दो हाथ जोड़ कर हम वर्तना सीखें। स्वामीजी कैसा जीये हैं? काकाजी कैसा जीये हैं? ये सब याद करते हैं, तो दिल भर आता है। ओहो! पप्पाजी, साहेब दादा कैसा जीये? **साहेबजी** विद्यानगर अक्षरपुस्तकोत्तम छात्रालय में रात को उठकर *toilet साफ़* करते थे। ये मैं आँखों देखी बात कह रहा हूँ। इन पुरुषों को संबंध वालों की सेवा की कैसी महिमा होगी? हमें इस तरफ नज़र रख कर जीना है। महाराज और स्वामी बस ऐसी नज़र रखवा कर, हमसे ऐसा वर्तन करायें—यही प्रभुचरणों में, गुरुचरणों में प्रार्थना...

दीक्षा विधि निमित्त आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद सबने दोपहर को महाप्रसाद लिया।

सायं 7 बजे हरिधाम मंदिर के सामने के मैदान में प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी का **79वाँ प्राकट्योत्सव** मनाने के लिये सभी एकत्र हुए। सर्वप्रथम संतों के साथ सुर वृंद ने भजनों के माध्यम से ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी एवं प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी की स्तुति की। ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी की आशीषरूपी मूर्ति के नीचे, एक सेवक-साधक की अदा से हस्त जोड़े तथा माला फेरते हुए, कमलासन के रथ पर विराजित होकर प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी ने सभा मंडप में प्रवेश किया। उनके आगमन पर **श्रीहरि प्रदेश** के युवाओं ने ‘लूटो भक्तिनो ल्हावो, हरिप्रेम ने वधावो’ भक्तिनृत्य करके भक्ति अदा करी। मंच पर स्वरूपों एवं गणमान्य अतिथियों के आसीन होने के बाद प्राकट्योत्सव की सभा में कई गणमान्य अतिथियों, महानुभावों एवं संतों ने **22 जनवरी** को **अयोध्या** में होने वाली **श्री रामजी** की मूर्ति स्थापना की बात के साथ-साथ प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी का गुणानुवाद किया। संतभगवंत साहेबजी ने अस्वस्थता ग्रहण करी थी, अतः उनके दर्शन का लाभ नहीं मिला। जिस प्रकार वक्ताओं ने श्री राम मंदिर के विषय में लगातार बात करी, उससे मानो पूरा उत्सव ऐसा रामरूप हो गया कि प.पू. गुरुजी ने भी श्री राम लला की प्राण प्रतिष्ठा के लिये आनंद व्यक्त करते हुए निम्न आशीर्वाद दिया—

...राम जन्मभूमि पर राम मंदिर बनकर रामलला बैठेंगे ही, उसकी तसल्ली कई वक्ताओं ने करवा



कर हम सबको प्रोत्साहित किया। इसके लिये उन सभी का खूब आभार। जहाँ तक मुझे याद है, वहाँ बाबरी मस्जिद थी। उसे गिरा कर, उस जमीन को समतल करके एक टेंट जैसा बना कर, उसमें रामलला की मूर्ति रखी थी। हम 1992 में उसका दर्शन करने गये थे, तब वहाँ सब संतों ने खास धून करके स्वामिनारायण भगवान को प्रार्थना की थी कि इस जन्मभूमि पर रामलला की मूर्ति ही बैठे, राम मंदिर ही बने। वो स्वप्न हमारे लाडले प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी ने साकार किया। इसके लिये भारत उनका खूब-खूब-खूब झण्णी रहेगा। ऐसे नेता, व्यक्ति, समाज के अग्रणी चिरकाल तक इस धरती पर साकार प्रभु की उपासना में अपना योगदान देते रहें यही प्रार्थना।

तत्पश्चात् प.पू. दिनकर अंकल ने आशीष देते हुए कहा—

...आज बहुत ही पवित्र दिन। बड़े-बड़े महान पुरुषों-संतों का आशीर्वाद मिला और प्रेमस्वरूपस्वामी का आशीर्वाद हम सब लेने के लिये अभी तत्पर हैं। आप सब इतनी बड़ी संख्या में आज दर्शन करने के लिये आये हैं, तो प्रेमस्वरूपस्वामीजी के चरणों में यही प्रार्थना करें कि अगले साल इनकी **80वीं जन्मजयंती** में इससे भी अधिक दुगने-तिगुने हरिभक्त इकट्ठे हो सकें और बहुत बड़ा प्रागट्य दिन मना सकें। जैसे कि बताया वैसे प्रेमस्वरूपस्वामीजी दासत्वभक्ति का स्वरूप हैं। जब संतों ने उनसे कहा कि 27 तारीख को उनका प्रागट्य दिन मनाना है तो उन्होंने मना कर दिया। मगर ये प्रेमस्वरूपस्वामीजी का प्रागट्यदिन आज नहीं मना रहे हैं, बल्कि बहुत सालों से मना रहे हैं। काकाजी, पप्पाजी, हरिप्रसादस्वामीजी, अक्षरविहारीस्वामीजी, साहेबजी, गुरुजी, हरिभाई साहेब और सब 27 दिसंबर के आसपास ही उभराट में शिविर रखते थे और तब प्रेमस्वरूपस्वामीजी का प्रागट्य दिन आता ही था। कोठारीस्वामीजी और प्रेमस्वामीजी का वहाँ जो दर्शन करते थे, वो धन्य हो जाते थे। प्रेमस्वरूपस्वामीजी ने आज तक सेवा में अपनी देह को इतना घिस दिया है कि हम उनको इस प्रकार बैठे हुए आज पहली बार देख रहे हैं और वे हम सबको आशीर्वाद दे रहे हैं। अभी अयोध्या में रामचंद्र भगवान के मंदिर का पुर्णनिर्माण हो रहा है। हम सच में देखें, तो 10 हजार साल से पहले रामचंद्र भगवान आये और रामराज्य स्थापित किया और बहुत सालों तक वह चला। लेकिन, *Science* की एक *theory* है जिसे *enthalpy* कहते हैं। *Enthalpy* का अर्थ है *impurity* और *confusion*. तो *Science* भी बताता है कि जैसे *universe* की *progress* होती है, तो *enthalpy is increasing every time*. सो, हमारे रामराज्य की *enthalpy* भी कई अमीचंद्रों से बढ़ गई थी कि जिनके सहयोग से एक छोटे से राजा ने 200 जनों के लश्कर को लेकर सारे हिंदुस्तान को बर्बाद करने की तैयारी करी थी। आज उसी हिंदुस्तान के अंदर हमारी जाग्रतता बढ़ी है, हम सब बहुत जाग्रत, उत्साही हैं और साथ में युवक हैं। आज सारी दुनिया में सबसे बड़ा युवकों



का जो समाज है, वो इंडिया में है। सारी दुनिया के अंदर बड़े-बड़े देशों की बड़ी कंपनियों के CEO भी हमारे इंडिया के हैं। आज हमारी GDP (*Gross domestic product*) भी नंबर 4-5 तक जा पहुँची है। संतों के आशीर्वाद से हमारी बहुत-बहुत *progress* हो रही है और हमारे नरेन्द्रभाई मोदी और उनके समाज का बहुत बड़ा बलिदान और बहुत बड़ा योगदान है। बहुत सालों पहले नरेन्द्र मोदीजी जब गुजरात के भी प्रधान नहीं थे, तब विद्यानगर मोगरी में साहेब दादा के 68वें प्रागट्य दिन पर वे पधारे थे और यहाँ हरिधाम-सोखड़ा में भी पधारे थे। नरेन्द्रभाई मोदी बी.ए.पी.एस., हिन्दू धर्म और अन्य सब संस्थाओं के प्रति सद्भाव रखते हैं। उनका एक ही उद्देश्य है कि हमारे हिन्दुस्तान का एक-एक युवा प्राइम मिनिस्टर बनने के लायक बने। हरेक युवा के अंदर ऐसी शक्ति पैदा हो कि हमारा हिन्दुस्तान दुनियाभर में सबको एक *guidance* दे। आज ऐसे पवित्र दिन पवित्र भूमि पर हम आये हैं। प्रेमस्वरूपस्वामीजी का आशीर्वाद लेना है और उनके आशीर्वाद से हम एक साल में बहुत-बहुत प्रगति करें और हमारा 2024 का साल जनवरी 22 से शुरू हो जाये और 26 जनवरी का गणतंत्र दिन भी बहुत अच्छी तरह से मनायें, यही प्रार्थना...

अंत में प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी ने भी श्री रामचंद्रजी के प्रसंग द्वारा निम्न आशीर्वाद दिया—
आत्मीय पर्व में आप सबके दर्शन पाकर खूब आनंद हुआ। गुरुजी—पू. मुकुंदजीवनस्वामीजी नादुरुस्त तबियत होने के बावजूद दिल्ली से पधारे और दर्शन व आशीर्वाद दिया। दिनकरभाई तो शिकागो से आये। सच में हम इनके बहुत ऋणी हैं। इन पुरुषों के हम क्या गुणगान करेंगे? पर, हम खूब भाग्यशाली हैं कि इस कुनबे में हमें परवरिश मिली, जो बहुत बड़ी बात बनी है... हमें एक बात सीख कर जाना है। 22 जनवरी को अयोध्या में भगवान रामजी बिराजने वाले हैं। वो हमारी सच्ची दिवाली है, तब सब उत्सव करेंगे। रामराज्य भी स्थापित होगा... लेकिन वो तब स्थापित होगा, जब भगवान स्वामिनारायण द्वारा उल्लेखित दो वचनामृत गढ़ा प्रथम 16 व 18 हमारे जीवन में साकार होंगे। हमें उस ओर निगाह रखकर जीना है।

14 वर्ष का वनवास पूरा करके जब भगवान रामजी अयोध्या में पधारे, तब से दिवाली का उत्सव मनाया जाता है। जब वे दरबार में पधारे, तब माँ कौशल्या का दर्शन करने से पहले, वे सीधा माँ कैकेयी के पास गये। हम विचार करें कि उनका सुहृदभाव कैसा होगा? सच, ये पुरुष कल्पनातीत हैं। हमें इनके रास्ते पर चलना है। स्वामीजी ने हमें यह रास्ता दिया है। गुरुहरि योगीजी महाराज ने सदा सदा ही संघ, सुहृदभाव और एकता की ही बात करी है। स्वामीजी, काकाजी, पप्पाजी और गुणातीत स्वल्पों ने वो बात पकड़ी और हम सब में उसका सिंचन किया है। यह हमें कभी भी भुलाना नहीं है। दरबार में आने के बाद, जिनकी कोख से भगवान राम प्रगट हुए थे; उस कौशल्या



माँ के पास वे नहीं गये, उनके दर्शन बाद में किये। पहले माँ कैकेयी का आशीर्वाद लेने गये। क्यों? देखा जाये तो कैकेयी ने तो उन्हें 14 साल का वनवास दिया था। पर, महान पुरुषों-अवतार पुरुषों के यही लक्षण और उनके जीवन का रहस्य है। फिर चाहे भगवान रामजी, भगवान कृष्ण परमात्मा या भगवान ख्यामिनारायण। गुणातीत पुरुष—शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, ख्यामीजी, काकाजी, पप्पाजी और सब गुणातीत स्वरूपों के जीवन का रहस्य पाँच सूत्रों में है। वे भगवान और भक्तों के परम सुहृद बन सके और प्रसंग बने तो भूल जाना, पीछे हट कर देना।

सभी को यह बात पता और याद भी है। पर, जब प्रसंग बनता है तब अपनी क्या हालत होती है, वो हम जानते हैं। आज हमें ये बात पकड़ कर दृढ़ता करनी है। गुरुजी, दिनकरभाई, ख्यामीजी, निर्मलख्यामी हम सबको आशीर्वाद दें कि ये बात हमसे पकड़ी जाये और निरंतर उसका जतन हो पाये।

निर्मलख्यामी को ये बात पता होगी कि एक बार धनुर्मास के दिनों योगीबापा गोडल में विराजमान थे। धनश्याम महाराज की मूर्ति के पास बापा संतों को लेकर पधारे, तब सूत्र लिखने के लिये बापा को संतों ने र्लेट और कलम दी। बापा ने लिखा—ओहो, प्राप्ति बहुत बड़ी हुई है, पर उसमें विघ्न नहीं आने देना। वो विघ्न यानि क्या? तो, हमारी नज़र दूसरों की ओर जाती है, उससे बड़ा कोई विघ्न ही नहीं है। ये बात आज नहीं तो कल, कभी भी पकड़नी ही पड़ेगी। उसके बिना छुटकारा ही नहीं है। यदि सच में भगवान ख्यामिनारायण, ख्यामीजी और गुणातीत पुरुषों को राजी करना है, तो हमें इस बात को जीव का जीवन बनाना पड़ेगा, बार-बार पक्की करनी पड़ेगी।

शास्त्रीजी महाराज के समय का एक प्रसंग सबको पता है कि योगीजी महाराज ने जगजीवनभाई को आशीर्वाद देते हुए कहा था कि—

मेरा यह देह रहने वाला नहीं था। लेकिन, शास्त्रीजी महाराज के संकल्प से आप सेवा में निमित्त बने, इसलिये शास्त्रीजी महाराज ने मेरा देह रखा। तो, अब इस देह से जो सत्कर्म होगा, उसका आधा पुण्य महाराज आपको दे दें।

बापा ने ऐसा अद्भुत आशीर्वाद जगजीवनभाई को दिया। ख्यामीजी ने 5 से 25 बार हमें यह बात करी, पर हमने इस बात की ओर ध्यान नहीं दिया। पूरी दृढ़ता के साथ कह रहा हूँ कि हमें इस बात को पकड़ना है कि जब तक दूसरों की ओर नज़र जाती है, तब तक सत्संग की शुरुआत हुई नहीं है। फिर चाहे आप अंबरीष हो, कार्यकर्ता हो, सत्संगी हो, साधक हो या त्यागी साधु हो, पर सभी को एक ही बात लागू होती है। ख्यामीजी ने क्यों कहा कि योगीजी महाराज की सेवा में वे दस साल रहे, पर उन्हें वे दस साल दस दिन जैसे लगे। कैसा स्वलक्षी और स्वल्पलक्षी जीवन वे जीये? हमें



उसमें झूबना है, यही हमारा काम है। तभी रामराज्य स्थापित होगा, सिफ्र तालियाँ मारने से रामराज्य नहीं आयेगा। रामराज्य तो अक्षरधाम के सुख की बात है। वहाँ केवल-केवल सुहृदभाव और संबंध वाली दृष्टि ही होती है। स्वामिनारायण भगवान और गुणातीत स्वरूपों में सम्यक् प्रकार से झूबेंगे, तो ही ये बात समझ में आयेगी और उसके लिये प्रार्थना करेंगे, तो ही वैसा जीने का बल मिलेगा। उसके लिये ही हमें इन गुणातीत स्वरूपों के जीवन की तरफ निगाह रखनी है। धन्य हैं BAPS के संत कि जिन्होंने 'पुरुषोत्तम बोल्या प्रीते' ग्रन्थ के रूप में हमें भगवान स्वामिनारायण की परावाणी प्रदान की। उसमें अभाव-अवगुण के बारे में जो प्रकरण है, वो बात हमारे लिये मननीय-बहुत चिंतनीय है। हम सबको ये पक्का करना है कि रोज़ उसमें से दो पञ्चे पढ़ने हैं और उसका मनन-चिंतन करके रोज़ 15 मिनट धुन करनी है। जो करने वाले हों वे हाथ खड़ा करें, झूठ-मूठ मत खड़ा करना। ये तो भगवान स्वामिनारायण का दरबार है। सच में ये बात हम पकड़ेंगे, तो मैं पक्का मानता हूँ कि भगवान स्वामिनारायण और हरिप्रसादस्वामीजी हमारा जीवन स्वलक्षी और स्वरूपलक्षी बना ही देंगे। पर ये बात नहीं पकड़ेंगे और ऐसे उत्सव हम कितने भी करेंगे, कितनी भी बातें करेंगे, कितनी भी शिविर करेंगे, कितने भी अनुष्ठान करेंगे पर कोई बरकत नहीं होगी... जिनका प्रसाद लेना बाकी है वो ज़रूर प्रसाद लेकर जायें, रसोई अभी खुली है। हरिप्रकाशस्वामी हमारी अन्नपूर्णा माँ हैं। ओहोहो, सच में उनके जैसा दिल... संतों को इतनी उमंग थी कि इतने साल बाद हम आत्मीय पर्व मना रहे हैं, इसलिये ऐसा करना है- वैसा करना है। पर, हरिप्रकाशस्वामी-संतस्वामी ने किसी बात की 'न' नहीं करी... निर्मलस्वामी ने तो कह ही रखा था कि जब भी बुलाओगे मैं आ जाऊंगा और कहीं भी जाना हो, तो मेरा उपयोग करना। ये दासस्वामी चल नहीं पाते, फिर भी मुझे बोले कि आत्मीय पर्व के लिये मुझे विचरण में जाने दो। सभी संत खूब-खूब लग पड़े थे। एक तरफ हमारे हरिसौरभस्वामी ये सब तैयार कर रहे थे, तो एक तरफ ज्ञानस्वरूपस्वामी सारी जनरल जिम्मेदारियाँ देख रहे थे, धन्यवाद है संतों को! इससे बढ़कर सबको धन्यवाद है कि आत्मीय पर्व में आये...

बातें बहुत हुई, पर अगर बात पकड़ी न जाये तो? अगर पकड़ी जायेगी तो ही सच में भगवान रामजी विराजमान होंगे और रामराज्य स्थापित होगा। 22 तारीख को हम सबको उत्सव करना है। जहाँ भी हों वहाँ खूब सुबह से शाम तक ठाकुरजी के पास बैठ कर भजन प्रार्थना करना। टी.वी. पर प्रोग्राम का दर्शन करना। उस दिन आज जैसे व्यंजन खाये, ऐसे व्यंजन सब खाना और खूब धूमधाम से उत्सव करना। जहाँ-जहाँ हमारे मंदिर-सेन्टर्स हैं, वहाँ भी मेरी विनती है कि सब इकट्ठा होकर करना। हमारी आत्मीयता बढ़ने ही वाली है, क्योंकि भगवान स्वामिनारायण धरती पर निष्काम धर्म



और निर्मानी धर्म स्थापित करने आये। हम सब उस परिवार के ही हैं। तो जब हम ये बात पकड़ेंगे, उस तरफ चलेंगे तो ही भगवान् स्वामिनारायण और स्वामीजी राजी होंगे। 22 तारीख की शाम को सब अपने घरों में दिये जलाना, धूमधाम से करना। यह खर्च आपको बोझ नहीं लगेगा, बहुत सच्ची बात कह रहा हूँ। सब मंडल इकट्ठे होकर आनंद करना। आज ये उत्सव करने के पीछे का हेतु यही कि हमें उत्सव इकट्ठे होकर करने हैं, उसके लिये ये आत्मीय पर्व मना रहे हैं। खूब हृदय की भावना है कि भगवान् रामजी विराजमान होंगे। 1992, 93 और 94 के संत सम्मेलन-आत्मीय महोत्सव में अयोध्या से वृत्यगोपालदासजी पधारे थे। वे राम मंदिर के अध्यक्ष थे। उन्होंने स्वामीजी से कहा था कि आप संतों को लेकर अयोध्या पधारो। तब स्वामीजी संतों को लेकर गये थे, तो अयोध्या में वृत्यगोपालदासजी राम ललाजी का दर्शन कराने ले गये थे। वहाँ स्वामीजी ने संतों को बिठाकर खूब धून करवाई और एक वाक्य कहा था कि यहीं इसी स्थान पर रामलला विराजमान होंगे। देखो, बाबरी मस्तिष्क के विध्वंस के बाद अब रामजी विराजमान हो गये। बड़े पुरुषों का संकल्प हमेशा साकार होता है। हम सब अहम् में से और हवा में से बोलते हैं। ऐसे पुरुष भगवान् में से बोलते हैं। भगवान् को अखंड रखे हुए पुरुष थे। रोम-रोम में भगवान् स्वामिनारायण को प्रगटाये थे। सो, वे जो बोलें वो होता ही है। इसलिये हम सब खूब भाग्यशाली हैं। हमारे जीवनकाल में रामजी विराजमान होंगे। बहुत सालों से ये लड़ाई चलती आ रही थी, उसका अब अंत आया है। हमारे लिये बहुत गौरव की बात है। सनातन हिंदू धर्म हम सभी का धर्म है। हमारी दृष्टि में भेद है इसलिये राम, कृष्ण और स्वामिनारायण अलग-अलग दिखते हैं। पर, वहाँ ऐसा कुछ नहीं है। ये गुणातीत पुरुषों की दृष्टि तो ये है कि ज्याँ जुओ त्यां रामजी बीजुं ना भासे रे। हमें ऐसी दृष्टि प्राप्त करनी है। आखिर में भगवान् कृष्ण, भगवान् राम, भगवान् शिवशक्ति, भगवान् स्वामिनारायण और गुणातीत पुरुषों शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, साहेब, गुरुहरि स्वामीजी, गुरुजी, दिनकरभाई, निर्मलस्वामी, जो स्वामीजी पधारे हैं और सभी के चरणों में इतनी ही प्रार्थना है कि रामराज्य प्रकटे उसके लिये हमारे जीवन में वचनमृत प्रथम प्रकरण 16 और 18 पक्का हो। साथ ही साथ शिक्षापत्री हमारा जीवन बने और जैसे रामजी माँ कौशल्या के बदले माँ कैकेयी के पास गये; वैसे ही विरोध की दृष्टि भुला कर, हमारा विरोध करने वाले के पास हम सामने से जायें और उसे प्रेम करें। ऐसी आत्मीयता हम सबके जीवन में प्रगटे ऐसी आशीष बरसाना यही आपके श्रीचरणों में प्रार्थना के साथ सबको जय स्वामिनारायण।

आदिवासी मुक्तों के भक्तिवृत्य एवं महाआरती से आत्मीय युवा महोत्सव का समापन हुआ। उत्सव की दिव्य स्मृतियाँ सजां कर सभी ने प्रस्थान किया। प.पू. गुरुजी ने हरिधाम में रात्रि निवास किया।



28 दिसंबर की सुबह हरिधाम में नाश्ता करने के बाद सभी अमदावाद के लिये रवाना हुए। प.पू. दीदी के साथ कुछ मुक्त अमदावाद के आधे रास्ते पर पहुँचे, तो उन्हें पता चला कि प.पू. गुरुजी तो प.पू. बापुखामीजी के जन्मदिन निमित्त सांकरदा मंदिर गये और वहाँ संतों से मिल कर, गुणातीत ज्योत-गुरुहरि पप्पाजी के निवास स्थान ‘प्रभुकृपा’ का बाहर से दर्शन करके, संतभगवंत साहेबजी का स्वास्थ्य देख कर, फिर अमदावाद पू. विपुलभाई ठक्कर के घर प्रसाद लेने आयेंगे। परंतु, दोपहर के भोजन का समय होने के कारण संतभगवंत साहेबजी ने प.पू. गुरुजी एवं उनके साथ के सभी मुक्तों को प्रसाद लेकर जाने का आग्रह किया। सो, सबने दोपहर का प्रसाद ब्रह्मज्योति में ही लिया। इधर अमदावाद में प.पू. दीदी के साथ गये कुछ मुक्तों ने पू. विपुलभाई के घर श्री ठाकुरजी का थाल करके प्रसाद लिया और प.पू. गुरुजी के प्रति पू. विपुलभाई के प्रेम का एहसास किया। प.पू. दीदी ने जब पू. विपुलभाई को बताया कि प.पू. गुरुजी व सभी संतभगवंत साहेबजी की आज्ञा से अनुपम मिशन में प्रसाद लेकर आ रहे हैं, तो कोई भी प्रतिक्रिया के बिना सहजता से वे बाले—

दीदी, कोई बात नहीं। गुरुजी को जैसा अनूकूल हो वैसा ही करना है। मेरा तनिक भी आग्रह नहीं है कि गुरुजी मेरे घर आयें। वे अमदावाद आ रहे हैं उतना ही काफी है और अब तो उनकी आयु व तबियत देखते हुए एक छोटे बच्चे की माँति उनकी देखरेख करना हमारा फर्ज़ है।

यह बात करते हुए पू. विपुलभाई, उनकी पत्नी पू. दीपाभाभी और बेटी पू. डेज़ी खूब भावुक थे और इनके ऐसे भाव से उपस्थित मुक्त गद्गद हो रहे थे। सत्पुरुषों के श्रीमुख से अकसर वचनामृत कारियाणी 11 ‘प्रीति का लक्षण’ के बारे में सुना है, लेकिन आज तो उसमें उल्लेखित प्रीति का दर्शन भी हुआ।

गुरुहरि काकाजी महाराज के संबंध वाले और दिल्ली मंदिर से जुड़े पुराने जोगी अक्षरनिवासी पू. पर्कई साहेब की धर्मपत्नी पू. दमयंती आंटी वृद्धावस्था के कारण अपनी बेटी पू. मयूरी बहन-दामाद पू. शैलेषभाई के घर रहती हैं। वे अब ज्यादा चल नहीं पातीं, सो उन्होंने प.पू. गुरुजी के दर्शन करने की इच्छा की। अतः अमदावाद आने के बाद प.पू. गुरुजी सबसे पहले पू. शैलेषभाई शाह के घर गये। यहाँ भजन और अल्पाहार करके, दिल्ली की पू. शोभना भाभी की छोटी बहन पू. भावना बहन-पू. तुषार कुमार त्रिवेदी के घर गये। फिर यहाँ से अमदावाद के पू. दिलीपभाई ठक्कर की भांजी पू. मनीषा-पू. भाविनभाई ठक्कर के घर रात्रि 8 बजे पहुँचे। यूँ तो कार्यक्रम के अनुसार सायं 5 बजे तक प.पू. गुरुजी को यहाँ पहुँच जाना था। लेकिन, जिनका क्षण-क्षण प्रभु प्रेरित है, ऐसे प.पू. गुरुजी हमें अपनी दिव्य लीलाओं से प्रशिक्षण देना चाहते हैं कि सब कुछ ब्रह्मनियंत्रित है और... वाकई मुक्तों के भाव से इसका एहसास भी हुआ। पू. भाविनभाई अपने परिवार एवं सगे-संबंधियों सहित प.पू.



गुरुजी के आगमन की तैयारियों में जोर-शोर से लगे थे और जब संदेश मिला कि प.पू. गुरुजी देर से आयेंगे, तो भी उनके मुख पर कोई मायूसी नहीं थी। बल्कि प.पू. गुरुजी की राह देखते हुए खूब हर्ष से सब फूलों से आंगन की सजावट में जुटे थे। दिल्ली मंदिर से जुड़े नये-पुराने कई हरिभक्त प.पू. गुरुजी के दर्शन हेतु आये थे। हॉल में प.पू. गुरुजी के विराजमान होने के बाद, धुन-भजन का कार्यक्रम हुआ। पू. भाविनभाई ने पुष्प हार से प.पू. गुरुजी से स्वागत करना चाहा, परंतु प.पू. गुरुजी ने उन्हें दूसरे दिन सुबह पूजा में अर्पण करने के लिये कहा। तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी के साथ गये मुंबई के पू. ओ.पी. अग्रवालजी एवं पू. राकेशभाई शाह ने अपने अनुभवों को व्यक्त करते हुए आशिष याचना की और तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी ने आशीर्वान दिया—

राकेशभाई ने एक बहुत सच्ची बात कही कि अमदावाद में स्वामिनारायण का परिचय देना वो बेहुदी बात है। (कोई नई बात नहीं है) क्योंकि हर कोई स्वामिनारायण संप्रदाय को जानता है। अमदावाद यानि स्वामिनारायण के 7 रास्ते यहाँ मिलते हैं। मुक्तिजीवनस्वामी, प्रमुखस्वामी, कालूपुर, योगी डिवाइन सोसाइटी, अनुपम मिशन—स्वामिनारायण संप्रदाय की जितनी भी शाखायें हैं, वो सारी अमदावाद में हैं ही। हम तो केवल इस परिवार के साथ आनंद करने आये हैं। कोई स्वामिनारायण संप्रदाय की बात नहीं करनी है। क्योंकि हम करें, उससे विशेष तो आप लोग जानते होंगे—positive और negative भी। negative में हमें जाना नहीं है; क्योंकि उस बखेड़े के साथ हमारा कुछ लेना-देना नहीं। हमें आनंद करना व आनंद लेना है और वो तभी आयेगा जब महिमा में झूंके रहेंगे कि ओहोहो! साकार स्वरूप में भगवान् खुद अवतरित हुये। वो किसलिये? कल्याण के लिये नहीं। कल्याण तो वे अक्षरधाम में बैठे-बैठे भी कर सकते हैं, मगर अपने भक्तों को लाड़ लड़ाने, आनंद कराने अपनी मूर्ति का सुख देने के लिये वे धरती पर आये हैं। हमें उनका संबंध हुआ। प्रमुखस्वामी महाराज, दादुकाका, हरिप्रसादस्वामीजी, जसभाई साहेब, मतलब किसी भी माध्यम से हुआ। पर, उस संबंध को हम भजन, स्वामिनारायण मंत्र से और जिनके द्वारा हमें ये संबंध हुआ है उनकी स्मृति से संभालें। मैं हर जगह पर एक ही बात करता हूँ कि दिन के 24 घंटों में अगर हम 20 मिनिट भी अपने भगवान के लिये नहीं निकाल सकते, तो बात करनी बेकार है। आज आप सबको भी मैं यही कहने आया हूँ कि जिनके द्वारा हमें स्वामिनारायण की पहचान हुई, वो कोई ज़रूरी नहीं कि मुकुंदजीवनस्वामी से हुई हो। प्रमुखस्वामीजी, महंतस्वामीजी, स्वामीजी जैसे जो सारे मैंने गिनवाये, उनकी स्मृति के साथ 20 मिनिट भजन कर लेना और जब वो भजन करने बैठें हों, तब अन्य कुछ भी ध्यान में नहीं लेना। जिनका भजन करते हैं, वे हमसे ज्यादा अक्कल वाले हैं। इसलिये कुछ भी गड़बड़ हो रही होगी, तो वे संभाल लेंगे और भजन करके जब हम उठेंगे, तब हमें र्ख्याल



आयेगा कि ओहोहो! ये तो मैंने कुछ नहीं संभाला फिर भी सब कुछ set हो गया। इसलिये पूरे दिन में खाली 20 मिनिट इस तरीके से नियमित स्वामिनारायण, स्वामिनारायण करें। दाढ़ुकाका को जिन्होंने भजन करते देखा है, उन्हें ख्याल है कि ऐसे लगता था कि वे प्रभु, शास्रीजी महाराज, योगीजी महाराज के साथ बातें करते-प्रार्थना करते हों। हमारे अश्विनभाई कहते हैं कि काकाजी जब भजन करते थे, तो मुंह में उनकी जीभ उछलती थी, ऐसा श्वासोश्वास-*fast* भजन करें। हरेक श्वास में स्वामिनारायण-स्वामिनारायण, इतनी र्पीड़ से भजन करें। जैसे 2000 घोड़े दौड़ रहे हों और उसमें से गुज़र कर कुछ भी जायेगा, तो पूरा तहस-नहस हो जायेगा। ऐसे ही एक चित्त से, बड़ी आवाज से स्वामिनारायण इसलिये करना जिससे कि हमें अपनी ही आवाज सुनाई दे। बाकी यदि अपना मन अपने आप ही भगवान की मूर्ति में मानसिक तरीके से रहे वह भी है, जिसे अजपाजप कहते हैं।

गणेशपुरी वाले मुक्तानंदबाबा ने कहा था कि मानसिक रूप से भी जो भजन करते हैं, वो एक तरीके से अजपाजप है कि जिससे हम बोले नहीं, पर भीतर में जैसे *automatic* धबक-धबक होता रहता है, वैसे *automatic* भजन हुआ करे। तो, इस तरह हम भजन करते हो जायेंगे, तो हमें उसका अनुभव होगा। अगर ऐसे ही भजन करेंगे, तो भजन करे बिना रहा नहीं जायेगा। भजन करेंगे, तो महाराज अनुभव करायेंगे कि ओहोहो सिर्फ 20 मिनिट के भजन से एक सुरक्षा कवच हमारे साथ 24 घंटे रहता है। ऐसा अनुभव आप सबको भी इस भजन से हो, यही प्रार्थना। सहजानंदस्वामी महाराज की जय...

प.पू. गुरुजी से भजन करने की करामात प्राप्त करके सबने रात को प्रसाद लिया। प.पू. गुरुजी एवं कुछ मुक्त पू. भाविनभाई के घर, कुछ पू. दिलीपभाई ठक्कर, पू. तुषारभाई त्रिवेदी के घर ठहरे। अगले दिन 29 दिसंबर की सुबह प.पू. गुरुजी जब पू. भाविनभाई के घर पूजा कर रहे थे, तब पू. भाविनभाई ने प.पू. गुरुजी का पूजन करके हार अर्पण किया। यहाँ नाश्ता करके, फिर पू. विपुलभाई ठक्कर के घर पर धुन-भजन करके और आइसक्रीम का प्रसाद लेकर airport के लिये रवाना हुए। अमदावाद airport पर प.पू. हंसा दीदी की आज्ञा से विद्यानगर गुणातीत ज्योत से पू. काजु बहन एवं पू. प्रवीणा बहन झास तुवेर की कचौरी देने के लिये आई थीं और तकरीबन पौने घंटे से प्रतीक्षा कर रही थीं। प.पू. दीदी के ऐसे निर्मल प्रेम और बहनों की भक्ति के प्रति दिल नतमस्तक हो गया! flight थोड़ी delay होने के कारण प.पू. गुरुजी एवं सभी waiting lounge में बैठे और इसी दौरान सबने तुवेर की कचौरी का प्रसाद लिया और करीब साढ़े चार बजे दिल्ली के लिये रवाना हुए और रात को साढ़े सात बजे तक दिल्ली मंदिर पहुँच गये।

22 जनवरी – अनुयम मिशन के
सद्गुरु संत बेरिस्टर साहेब की स्थूल विदाई...



6 फरवरी – गुणातीत ज्योति के एक आधार स्तंभ प.पू. देवी बहन की स्थूल विदाई...



गुरुहरि योगी बापा की नारायणी सेना के दो सैनिकों की स्थूल विदाई...

सेवाभाव के प्रतीक सद्गुरु संत बेरिस्टर साहेब (अनुपम मिशन)

करीब पिछले 40 साल से जो मुक्त दिल्ली मंदिर से जुड़े हुए हैं, उन्होंने अकसर ‘भारत साधु समाज’ या दिल्ली के शुरुआती दिनों के प्रसंग दोहराते हुए, प.पू. गुरुजी के स्वमुख से अनुपम मिशन के सद्गुरु संत ‘बेरिस्टर साहेब’ का जिक्र सुना है। इसलिये भले ही प.पू. बेरिस्टर साहेब से नज़दीक का संबंध नहीं था, लेकिन वे संतभगवंत साहेबजी के आठ साखाओं में से एक एवं अनुपम मिशन के एक स्तंभ हैं, इस बात से दिल्ली के मुक्त परिचित हैं। सो, 22 जनवरी 2024, सोमवार की रात को जब समाचार मिला कि 86 वर्षीय प.पू. बेरिस्टर साहेब ने लंबी बीमारी के बाद अक्षरधामगमन किया, तो यह सुन कर सहज ही प.पू. गुरुजी द्वारा बताये उनके भवितरुपी प्रसंग समृतिपट पर छा गये। तब अंतर से प्रार्थना ही नहीं, बल्कि एक सर्वदेशीय केन्द्रों में अद्भुत सेवा से स्वरूपों ऐसे मार्ग पर चल कर हम भी अपना जीवन धन्य करें...

प.पू. बेरिस्टर साहेब का रावजीभाई पटेल’ था और वे सो, बचपन से ही संतभगवंत 1956 में सोखड़ा गाँव में एक योगीजी महाराज का प्रथम दर्शन बिलकुल अपरिचित थे। लेकिन, पूर्व में उनकी निपुणता में आध्यात्मिक रंग



हुई कि इन्होंने केवल अनुपम मिशन में उठाव से गुणातीत समाज के सभी को राजी किया, तो दिव्यता के स्वरूपों की प्रसन्नता पाकर

वास्तविक नाम ‘रमेशभाई सोखड़ा गाँव’ के निवासी थे। साहेबजी के साथ मित्रता थी। पारायण के समय उन्हें गुरुहरि हुआ। वे स्वामिनारायण धर्म से के महामुक्त होंगे इसीलिये चित्रकला भरने के लिये संतभगवंत साहेबजी ने उन्हें

1964 में विद्यानगर के अक्षरपुरुषोत्तम छात्रालय के निर्माण कार्य के निमित्त banners और boards बनाने की सेवा के लिये अपने साथ रहने बुला लिया। इस दौरान उन्हें प.पू. बापा का विशेष परिचय हुआ। छात्रालय के निर्माण कार्य की सेवा के बाद वे सोखड़ा लौट गये। लेकिन, बोचासण में एक बार प.पू. बापा ने उन्हें सूचन किया – ‘तुम यहाँ क्यों बैठे हो? जशुभाई के पास विद्यानगर जाओ।’ सो, प.पू. बापा की इस आझ्ञा की गहनता समझ कर वे विद्यानगर आये और अपना संपूर्ण जीवन प्रभु के श्रीचरणों में समर्पित कर दिया। गुरुहरि काकाजी, गुरुहरि पप्पाजी एवं प.पू. सोनाबा के करकमलों से संतभगवंत साहेबजी के साथ कर्मयोगी साधक का ब्रत लेकर नारायणी सेना के सैनिक



बने। संतभगवंत साहेबजी के प्रति जो मित्रभाव था, वो गुरुभाव में परिवर्तित हो गया। सेवा के प्रति उनकी विचक्षणता और वफादारी को देखते हुए 'बेरिस्टर' नाम से नवाज़ा गया।

उन्होंने अपने जीवन से साधकों के लिये एक आदर्श स्थापित किया कि भले सद्गुरु की पदवी पाकर पूजे जाओ; गुणातीत स्वरूपों का माहात्म्य जान करके कइयों को प्रभु प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर करो, लेकिन अपना सेवक धर्म कभी नहीं भूलना। इसलिये छोटी से छोटी सेवा अहोभाव से करने की क्रायत उन्होंने अपने वर्तन से दी। उन्होंने संतभगवंत साहेबजी का कैसा विश्वास प्राप्त किया होगा कि पहले सौराष्ट्र और गुजरात के गाँवों में हरिभक्तों में प्रगट प्रभु के माहात्म्य का सिंचन किया और फिर अमेरिका के अनुपम मिशन की जिम्मेदारी पाकर, करीब 25 साल तक वहाँ के मुक्तों का आध्यात्मिक जतन करके सत्यंग का विकास किया। अब 86 साल की आयु में अस्वस्थता के कारण भारत लौटे और प्राकृतिक चिकित्सा लेते हुए धुन-भजन-प्रार्थना में ही लीन रहे, लेकिन दिल का दौरा पड़ने के कारण मोगरी में ही 22 जनवरी को स्थूल रूप से विदाई ली। **गुरुहरि योगीजी महाराज** के अंतर्धान होने के मंगलकारी दिन **23 जनवरी** की सुबह उनकी अंत्येष्टि विधि संपन्न की गई। गुणातीत समाज के संतों, संत भाइयों, संत बहनों और देश-विदेश के हरिभक्तों ने अनुपम मिशन की नींव में समाये सेवा के स्वरूप 'बेरिस्टर दादा' को भारी हृदय से **अलविदा** कहा और फिर **4 फरवरी** को इनकी त्रयोदशी की महापूजा में श्रद्धांजलि देकर भक्ति अदा की।

दासत्वमूर्ति य.पू. देवी बहन (गुणातीत ज्योत)

अभी तो प.पू. बेरिस्टर दादा के वियोग से गुणातीत समाज उबरा नहीं था कि **5 फरवरी** की सुबह **गुणातीत ज्योत** से समाचार मिला कि कुछ infection के कारण **परम पूज्य देवी बहन** को

अस्पताल में दाखिल किया गया है।

ज्योत में तो 24 घंटे का जपयज्ञ तीव्रता से धुन-संकल्प करें कि एक ही दिन बीता था कि **6**

करीब **12:15** बजे

बहन की हास्य मूर्ति के

स्वरूप गुरुहरि पप्पाजी

बहन पौष कृष्ण एकादशी,

के शाश्वत स्मृति दिन पर **88**

बजे भगवान स्वामिनारायण एवं

बिराजमान हो गई हैं। यह समाचार

उनके निरामय स्वास्थ्य के लिये गुणातीत जारी ही है और जो जहाँ है, वो वहाँ

वे अच्छी होकर ज्योत में लौटें।

फरवरी की मध्य रात्रि को

whatsapp पर प.पू. देवी

साथ संदेश आया कि **शाश्वत-**

महाराज स्वरूप प.पू. देवी

ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज

वर्ष की आयु में रात को ज्यारह

गुरुहरि पप्पाजी के श्री चरणों में

सुन कर प.पू. आनंदी दीदी को तो





विश्वास ही नहीं हुआ, क्योंकि 6 फरवरी की सायं ही प.पू. देवी बहन की अंतेवासी सेविका पू. गिरा बहन से उनकी तबियत थोड़ी stable होने का पता चला था। पिछले 40 साल से प.पू. दीदी का सभी स्वरूप बहनों के साथ खूब अपनेपन का संबंध रहा है। सो, प.पू. देवी बहन के साथ सारी स्मृतियाँ उनके स्मृति पटल पर छा गईं। दूसरी बात करीब सवा महीने पहले ही प.पू. प्रेमस्वामीजी के प्राकट्य पर्व निमित्त प.पू. दीदी गुजरात गई थीं, तब 26 दिसंबर 2023 की सायं गुणातीत ज्योत में प.पू. हंसा दीदी के दर्शन करने गईं, तब प.पू. देवी बहन का भी केवल दर्शन ही नहीं, बल्कि काफ़ी समय तक उनका सान्निध्य भी मिला और वे स्वस्थ नज़र आ रही थीं। ऐसा तो स्वप्न में भी ख्याल नहीं था कि ये उनके अंतिम दर्शन होंगे।

अगले दिन प.पू. देवी बहन के अंतिम संस्कार के समय इत्यादि की सूचना मिली, तो प.पू. दीदी, पू. स्वाति दीदी, पू. गार्जी दीदी, पू. नित्या दीदी और पू. मौली दीदी तथा भाइयों में पू. प्रकाशभाई ठक्कर व पू. पुनीत मल्होत्रा के साथ 7 फरवरी की देर रात की flight से अमदावाद गये। वहाँ पू. परेशभाई दोशी के घर ठहर कर, सुबह करीब 9 बजे विद्यानगर-गुणातीत ज्योत के लिये रवाना होकर वहाँ पहुँच गये।

गुणातीत ज्योत के मुख्य हॉल में प.पू. देवी बहन का पार्थिव देह दर्शनार्थ रखा था। मंत्र पुष्पांजलि अर्पण करके, पुष्पों से सजे ‘साधुता रथ’ में उनकी देह को पालकी में विराजमान किया गया। भगवान स्वामिनारायण एवं गुणातीत स्वरूपों की मूर्ति सहित उनकी मूर्ति लगाई थी और उनके नीचे प्रार्थना लिखी थी— **माहात्म्यसमाज्ञी लक्ष्मीदेवीने कोटि-कोटि वंदना...**

गुणातीत ज्योत एवं प्रभुकृपा की परिक्रमा करने के बाद रथ जब ‘पण्णजी तीर्थ’ के लिये रवाना हुआ, तो मार्ज में अनुपम मिशन के प्रवेश द्वार पर संतभगवंत साहेबजी, सद्गुरु संत प.पू. अश्विनभाई सभी साधकवृंद और हरिभक्तों के साथ उपस्थित थे। वहाँ बड़े banner पर भगवान स्वामिनारायण एवं गुणातीत स्वरूपों की मूर्ति सहित प.पू. देवी बहन की मूर्ति लगा कर निम्न प्रार्थना लिखी थी— **श्री गुणातीत ज्योत की सद्गुरु संतश्री प.पू. देवी बहन को अक्षरधामगमन की बेला पर कोटि-कोटि वंदन ! अनुपम मिशन, गुणातीत समाज के सभी संतों- भक्तों की ओर से अनंत श्रद्धावंदन सहित जय स्वामिनारायण !**

यहाँ हार एवं पुष्पों द्वारा प.पू. देवी बहन को भावांजलि दी गई और रथ ने प्रस्थान करके ‘पण्णजी तीर्थ’ पर विराम पाया, जहाँ उनकी अंत्येष्टि होनी थी। रथ से उतार कर पालकी शाश्वत धाम के द्वार के समक्ष रखी गई। गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों के मुक्तों एवं हरिभक्तों ने प.पू. देवी बहन के पार्थिव शरीर को हार एवं शॉल अर्पण करके श्रद्धांजलि दी। तत्पश्चात् पालकी को अंत्येष्टि स्थल पर लाया गया। अंतिम विधि की तैयारियों के दौरान प्रार्थना के भजनों से वातावरण दिव्यतापूर्ण था।



तब संतभगवंत साहेबजी ने प्रगट संत की महत्ता बताते हुए आशीर्वाद दिया — ...प्रभुधारक संत की हाजिरी कार्य करती है। इसी प्रकार, हमारे लिये (हंसा) दीदी की हाजिरी काम करने वाली है। दीदी, भले ज्योत से बाहर न जायें, किसी से मिले या न मिले, दर्शन भी न दें, लेकिन उनकी हाजिरी हमारी लिये बड़े से बड़ी प्रभु की कृपा है।

तदोपरांत Audio द्वारा प.पू. देवी बहन का आशीर्वाद प्राप्त किया और प.पू. हंसा दीदी ने आशीर्वाद दिया — देवी बहन के साथ 65 साल का साथ था, इसलिये स्मृति तो है ही। अब उनके वचन स्मृति से जीवन जीकर, उन्हें प्रत्यक्ष रखने का वचन लें...

अंत में Audio द्वारा गुरुहरि पप्पाजी महाराज की परावाणी का लाभ लेने के बाद अंत्येष्टि विधि का आरंभ करते हुए चार मशालों को प.पू. हंसा दीदी एवं सद्गुरु बहनों ने प्रज्वलित करके प.पू. विरेनभाई को दिया। प.पू. विरेनभाई ने वो मशालें केन्द्रों के प्रतिनिधियों एवं गुणातीत ज्योत के चुनिन्दा मुक्तों को दी। जयनाद के साथ इन चारों मशालों से प.पू. देवी बहन को मुखाग्नि दी गई और देखते ही देखते प.पू. देवी बहन पंचभूत में विलीन हो गई। सभी ने प्रदक्षिणा करके अंतर से प्रार्थना की और महाप्रसाद लेकर प्रस्थान किया।

प.पू. देवी बहन ने पाठीदार जाति में पलाणा के श्रीमत कुटुंब में, 18 नवंबर 1936 को मुंबई में विलेपार्ला निवासी पू. चतुरभाई एवं पू. चंचल बहन के यहाँ जन्म लिया। उनका नाम ‘लक्ष्मीदेवी’ रखा गया। विचक्षण प.पू. देवी बहन ने व्यरुक होने पर वकालत की शिक्षा पाई। अधिकतर बुद्धिशाली व्यक्ति तर्कों से युक्त होते हैं। लेकिन, प.पू. देवी बहन अनादि की थी और प्रभु के कार्य में भागीदार बनने पृथ्वी पर आई थीं। सो, सहज ही गुरुहरि योगीजी महाराज और गुरुहरि पप्पाजी प्रति एकनिष्ठा से ऐसी समर्पित हो गई कि अपना अस्तित्व मिटा कर, उनके वचन से मुक्तों की ‘दासी’ बन कर साधकों के लिये एक मिसाल बनी। गुरुहरि काकाजी महाराज ने तो गुणातीत ज्योत की नींव की बहनों को याद करते हुए 26 जनवरी 1986 में गुणातीत समाज को दिये अपने अंतिम संदेश में कहा भी है —

हमें बहुत गौरव है, बहनों ने खूब शोभा बढ़ाई...

धन्यवाद है साथीदारों, हरिभक्तों और बहनों को—

ज्योति बहन, तारा बहन, हंसा बहन, देवी बहन, झमकु बहन-फमकु बहन सभी को वर्ना तो हम दोनों भाइयों (काकाजी-पप्पाजी) को मार डालते...

वाकई, इन सबने बहुत कसनी सह कर हमारे लिये एक राजमार्ग तैयार किया है। अपने ईष्टदेव को अपने वर्तन से गौरवान्वित करके, उनके अंतर की प्रसन्नता पाई। इनके आदर्श प्रसंगों से सच्चे समर्पण और साधक की रीत सीख कर अपने प्रगट प्रभु को राजी करें—ऐसी हृदय से प्रार्थना...



भक्त जहाँ करते हैं निवास, प्रगट प्रभु करें वहाँ प्रवास...

DUBAI

دُبَيْ



11 दिसंबर 2023, सुबह—दुर्बई जाने से पूर्व मंदिर में धुन...



सायं दुर्बई Airport पर...

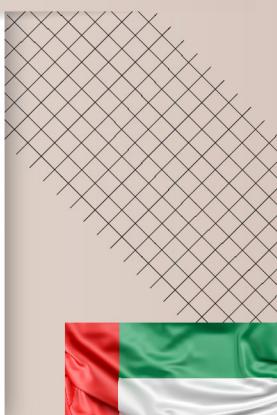


दुर्बई में पू. परिमलभाई के घर...





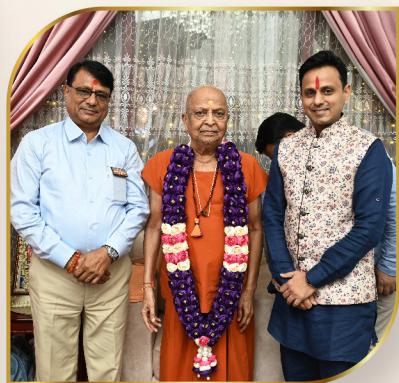
पू. ग्रकाशचंद्र शर्मजी के दामाद पू. आनंद-बेटी पू. योगिता के घर यथरामनी...



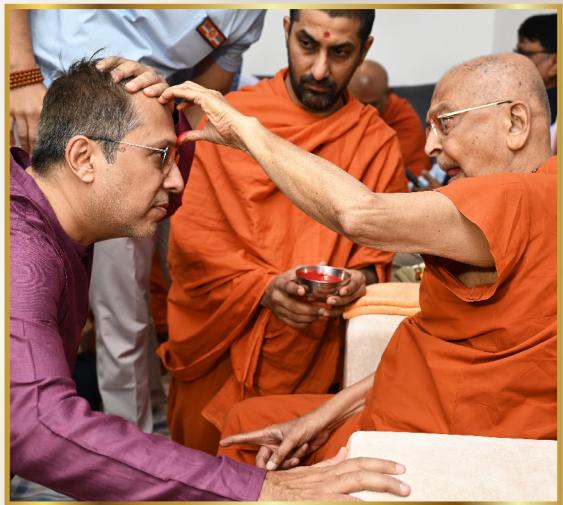
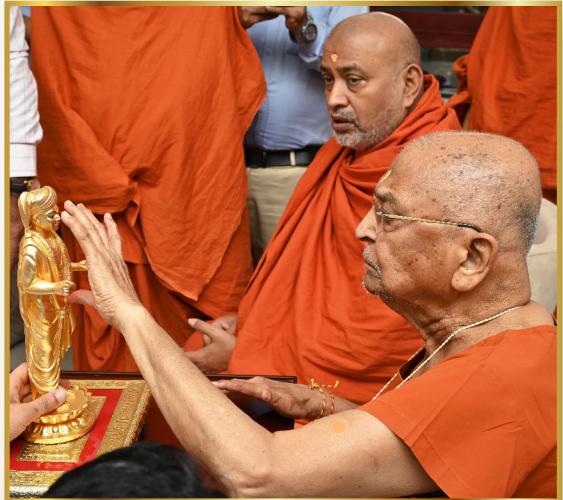
पू. सुरेशभाई-पू. शिल्पा भाभी के घर महापूजा...



पू. यरिमलभाई-पू. सुवास भाभी के विवाह की 25वीं वर्षगांठ निमित्त महापूजा...



इस मंदिर के सामने बैठ कर एक चित्त से स्वामिनारायण धुन करें
तो महाराज बाधा दूर करेंगे... — प.पू. गुरुजी



अमदाबाद के पू. मेहुलभाई-पू. धरती भाभी ठक्कर ने पू. नित्या दीदी को अपनी दिव्य बेटी बनाया...



‘अबू धाबी’ – शेख ज़ायेद ग्रांड मस्जिद

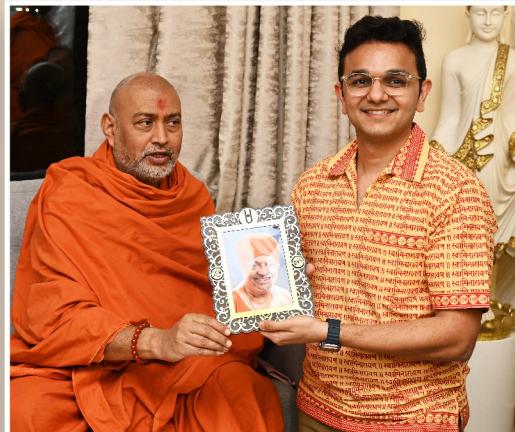


मस्जिद में प्रगट ब्रह्मस्वरूप महंतस्वामीजी की मूर्ति का अद्भुत दर्शन...





‘अबू धाबी’ में पू. तेजस-पू. अदिति शाह के घर...



पू. अनिलजी—पू. यूनम साहोरजी के घर पधरामनी...



दुबई में पू. दिनेशभाई-पू. गीता भाभी के घर यधरामनी...



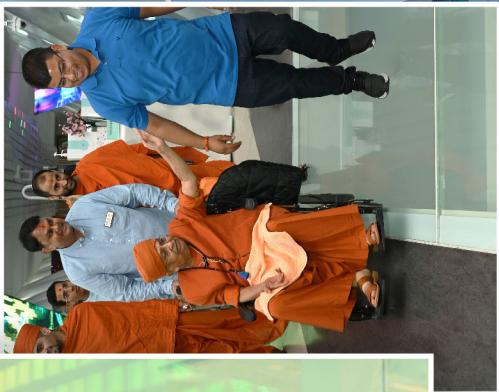
पू. मनीषभाई-पू. दर्शनी भाभी के घर यधरामनी...



पू. कविलभाई-पू. हेमा भाभी ठक्कर के घर महापूजा...



د بی جے فریمے



Dubai Frame – ڈرلنے کی کوشش بات؟ جب سے میتا ہے...

पू. यरिमलभाई - पू. कपिलभाई के Office में धुन...



पू. मनोज शर्माजी के दामाद पू. आशिष - बेटी पू. योशिका के घर वधरामनी...



Harbour Marina – यू. विद्युतभार्ट के
Yacht पर आनंदीब्रह्म....

संतभगवंत साहेबजी के निजी कुटुंब
पू. नयनभाई-पू. राजश्री बहन पटेल के घर...



Miracle Garden की स्मृतियाँ...



य.पू. गुरुजी ने Global Village को पावन किया...



पू. वियुबभाई-पू. पूर्वा भाभी के घर...





प.यू. गुरुजी की निराली स्मृतियाँ..





DUBAI Memories



प.पू. गुरुजी का दुबई विचरण यानि जहाँ प्रगट के आश्रित, वहाँ प्रगट प्रभु का बास...

स्वामिनारायण संप्रदाय से जुड़े अधिकांश मुक्तों को यह प्रसंग ज्ञात है कि श्रीजी महाराज जब बाल घनश्याम के रूप में छपैया में रहते थे, तब एक दिन सखाओं के साथ खेलते हुए पेड़ पर चढ़ कर पश्चिम दिशा की ओर देखने लगे। सखाओं ने उनसे पूछा कि उस ओर क्या देख रहे हो? तब बाल घनश्याम ने कहा कि पश्चिम दिशा की ओर देख रहा हूँ, वहाँ कई मुमुक्षुओं ने जन्म लिया है। श्रीजी महाराज की यह बात याद करते हुए गुरुहरि काकाजी महाराज ने भी एक बार कहा था कि अब उत्तर में कई मुमुक्षुओं ने जन्म लिया है। सो, उत्तर के मुक्तों का कल्याण करने उन्होंने प.पू. गुरुजी को दिल्ली भेजा और... आज गुरुहरि काकाजी महाराज के संकल्प तथा प.पू. गुरुजी की निरंतर आत्मिक परवरिश से कुटुंबभाव से जीता सत्संग समाज दिल्ली मंदिर का अभिन्न अंग बना है। अमदावाद के पू. शैलेषभाई-पू. परिमलभाई आचार्य का परिवार भी दिल्ली मंदिर के आन्मीय कुटुंबों में से एक है। कई वर्षों तक जब-जब प.पू. गुरुजी का अमदावाद जाना हुआ, तो इन्हीं के घर करीब 40-50 मुक्तों के साथ ठहरते। इनका घर मंदिर ही कहा जाये। परंतु, व्यवसाय के कारण प.पू. गुरुजी की आज्ञा लेकर पाँच साल पहले पू. परिमलभाई-पू. सुवास भाभी ने दुबई जाकर स्थायी रूप से निवास किया। विदेश की धरती पर रहते हुए उनका मन तो दिल्ली मंदिर में विराजमान प.पू. गुरुजी के श्रीचरणों में ही निमग्न था। उनकी बहुत भावना थी कि प.पू. गुरुजी संतों, सेवकों, बहनों और भक्तों को लेकर दुबई पधारें। और... प्रभुधारक संत तो अनन्य निष्ठा वाले अपने मुक्तों की इच्छा पूर्ण करने किसी भी चीज़ की परवाह नहीं करते। सो, पू. परिमलभाई आचार्य के विवाह की 25वीं वर्षगांठ निमित्त प.पू. गुरुजी ने मंदिर के staff और कुछ हरिभक्तों के साथ 11 दिसंबर से 21 दिसंबर 2023 तक दुबई का कार्यक्रम बनाया।

11 दिसंबर को flight से दुबई के समय के अनुसार सायं करीब 7:30 बजे पहुँच कर पू. परिमलभाई के घर गये। वचनामृत कारियाणी 11 में लिखा है कि भगवान का भक्त, भगवान की आज्ञा से जहाँ-जहाँ जाता है, वहाँ-वहाँ भगवान की मूर्ति जाती है। सो, जैसे कि प.पू. गुरुजी की आज्ञा से पू. परिमलभाई के परिवार ने दुबई में आप्रवास किया, तो प्रभु की मूर्ति उनके पीछे-पीछे आई और उनके सकारात्मक व्यवहार से उनके सभी करीबी मित्रों को भी प.पू. गुरुजी का दर्शन करने की ललक हुई। अतः उनका मित्रगण भी वहाँ उपस्थित था। घर को रोशनी से ऐसा सजाया था, मानो दिवाली हो और बैंड बाजे व पुष्प वर्षा से प.पू. गुरुजी व सबका स्वागत किया। उनके घर के हॉल में विराजमान होने के बाद प.पू. गुरुजी ने सबको टॉफी का प्रसाद दिया और 2 मिनट धून करवा कर आशीर्वाद दिया—‘इस बार हम खुद आए हैं, पर इतना बड़ा अपना घर हो जाये कि ये हमें फिर सामने से बुलायें।’ रात को प्रसाद लेने के बाद प.पू. गुरुजी, संत और सेवक पू. परिमलभाई के घर ठहरे। बहनें व कुछ



हरिभक्त पू. परिमलभाई के घर के नजदीक ही पू. सुरेशभाई अनडा, पू. कपिलभाई ठक्कर, पू. पियुषभाई एवं Hotel Citymax में ठहरे।

12 दिसंबर की सुबह नाश्ते के बाद, प.पू. गुरुजी, संत, सेवक और बहनें दिल्ली मंदिर से जुड़े पू. प्रकाशचंद्र शर्माजी के दामाद पू. आनंद बालव शर्मा - बेटी पू. योगिता के घर गये। धुन-भजन के पश्चात् प.पू. गुरुजी ने उन्हें स्मृति भेंट दी और प्रसाद लेकर पू. परिमलभाई के घर लौटे। इसी दौरान कुछ हरिभक्त, बच्चे Ski Dubai (Mall of Emirates) गये। शाम को पू. परिमलभाई के घर के सामने रहते पू. सुरेशभाई अनडा के घर महापूजा का आयोजन हुआ। यहाँ संपन्न हुई महापूजा सबके लिये चिरंजीव स्मृति बन गई! संपूर्ण महापूजा में प.पू. गुरुजी ने स्वयं सारे श्लोक गाये, पू. मैत्रीशीलस्वामी तो सिर्फ सहाय कर रहे थे। महापूजा में प्रार्थना करते हुए कहते हैं – **यह महापूजा साक्षात् अक्षरधाम की हो रही है...** प.पू. गुरुजी ने वाकई उसकी अनुभूति भी करा दी, इसके लिए उन्हें कोटि-कोटि नमन!

पू. राकेशभाई शाह ने प्रार्थना करते हुए कहा— ‘प.पू. गुरुजी जैसे गुणातीत संत सुरेशभाई के घर पथारे, अद्भुत स्मृतियाँ दीं। ये स्मृतियाँ अंतर में विशेष बैठी रहें और इस स्मृति के साथ जब भी स्वामिनारायण मंत्र का जाप करेंगे, तो महाराज हमारे सभी शुभ संकल्प पूरे करेंगे। मंत्र तो बहुत हैं, लेकिन यह प्रगट जीवंत मंत्र है। क्योंकि मंत्र को धारण करे विभूति पुरुष प्रत्यक्ष हुए हैं। ऐसे गुणातीत संत की स्मृति के साथ जब हम इस मंत्र का भजन-जाप करेंगे, तो वे कई गुण लाभदायक हो जाता है। जैसे हम सामान्य बोलते हैं, तो आवाज 10-15 फुट तक जाएगी, अगर mike पर बोलेंगे तो दूर तक जाएगी। ऐसा उदाहरण देते हुए गुरुजी ने यह सिद्धांत बताया है कि किस तरह कई गुण (multifold) उसका लाभ मिलता है। ऐसे गुणातीत संत की स्मृति के साथ यदि हम इस मंत्र का जाप करेंगे, तो उसका परिणाम कई गुण बढ़ जाता है। तो, ऐसी अद्भुत स्मृति गुरुजी ने आज हमें दी, उसके साथ स्वामिनारायण मंत्र जपते रहें, तो हमारे सभी काम महाराज अवश्य पूरे करेंगे।’

महापूजा संपन्न होने के बाद, पू. सुरेशभाई को ‘स्वामिनारायण’ नाम की तख्ती देते हुए प.पू. गुरुजी ने आशीर्वाद दिया — ये स्वामिनारायण नाम की तख्ती बाहर main gate पर लगाना। भूत-प्रेत वगैरह के उपद्रव के कारण डरे हुए भक्तों के घर के बाहर शुरुआत में काकाजी महाराज ने स्वामिनारायण की तख्ती लगवाई थी और कहा था कि घर के बाहर लगवा दो ताकि अपने घर में भूत-प्रेत आयें नहीं। हमारे लिए भूत-प्रेत क्या? अंतर में अशांति, आपस के लड़ाई-झगड़े, एक-दूसरे के प्रति चिढ़, गुस्सा—ये भूत-प्रेत। हमारे यहाँ ये रहे नहीं, सुख-शांति, आनंद से हर कोई एक-दूसरे के साथ मिलजुल कर रहे। इसके लिए यह स्मृति भेंट है। साथ ही पादुका की स्मृति भेंट देते हुए कहा— छपिया में महाराज जिस वृक्ष के नीचे बैठते थे, उसके तने की छाल में से ये पादुका बनाई गई हैं, तो अपने घर में जहाँ पूजा होती हो वहाँ रखना।



तत्पश्चात् सबने रात को प्रसाद लिया और अपने ठहरने के स्थान पर गये।

अगले दिन, 13 दिसंबर की सुबह नाश्ते के बाद पू. दीपक सेठजी के साथ प.पू. गुरुजी World of Pen गये। वहाँ से पू. अभिषेक, पू. विश्वास और पू. नक्षत्र को Pen दिलवा कर, पू. कपिलभाई ठक्कर के नये घर पर गये और धुन करके पू. परिमलभाई के घर लौटे। शाम को 13 दिसंबर के अनुसार प.पू. गुरुजी के त्रैमासिक प्राकट्य दिन और 4 दिसंबर को पू. परिमलभाई-पू. सुवास भाभी के विवाह की 25वीं वर्षगांठ थी, उसके उपलक्ष्य में महापूजा का आयोजन किया था। हरिभक्तों ने पू. परिमलभाई और पू. सुवास भाभी को दुल्हा-दुल्हन की तरह तैयार होने का आग्रह किया। प.पू. गुरुजी से मंगल टीका करवा कर पू. परिमलभाई घर के अँगन में आये। यहाँ ढोल पर सब भक्तों ने गरबा किया। फिर जैसे बारात के द्वार पर लड़की माँ इत्यादि दूल्हे का टीका करती है, इस प्रकार घर के द्वार पर प.पू. दीदी ने पू. परिमलभाई का टीका किया। सत्यंग के कुछ मुक्त भाई के रूप में पू. सुवास भाभी को दुपट्टे की छाया में लेकर आये। फिर दोनों ने एक-दूजे को वरमाला पहनाई और महापूजा में बैठे। मुंबई के पू. दीपक-पू. मानसी अग्रवाल की आज शादी की सालगिरह थी, सो वे भी महापूजा में बैठे। सेवक पू. अभिषेक ने महापूजा संपन्न की। इसके बाद आशीर्वाद देते हुए प.पू. गुरुजी ने कहा—

महापूजा में अंतिम श्लोक में महाराज ने स्वयं आशीर्वाद दिये हैं—

सर्वं भवन्तु सुखिनः; सर्वं सन्तु निरामयाः। सर्वं भद्राणि पश्यन्तु; मा कश्चित् दुःखं भाग्भवेत् ॥
इससे बढ़ कर और कोई आशीर्वाद दे भी नहीं सकता। आशीर्वाद तो मिल चुके हैं, तो बस भक्तों के अंदर निर्दोषभाव रखते हुए इस आशीर्वाद को हम आत्मसात् करें, यही प्रार्थना है।

तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी ने पू. परिमलभाई को और प.पू. दीदी ने पू. सुवास भाभी को स्मृति भेंट दी। साथ ही, पू. ओ.पी. अग्रवालजी और पू. दीपक अग्रवाल ने पू. डॉली दीदी द्वारा बनाया हार प.पू. गुरुजी को प्राकट्य दिन निमित्त अर्पण किया। केक अर्पण के बाद पू. परिमलभाई द्वारा घर के लिये बनवाये गये छोटे मंदिर में मूर्ति स्थापना हेतु, प.पू. गुरुजी ने श्री मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम महाराज की मूर्तियों का पूजन, पू. सुहृदस्वामीजी ने स्वरूपों की मूर्तियों का पूजन किया और फिर आरती हुई।

तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा—

स्वास सुहृदस्वामी, आनंदी दीदी वगैरह की निशा में परिमल के घर धाम, धामी और मुक्तों के साथ मूर्ति प्रतिष्ठा हुई है। आज काकाजी से प्रार्थना है कि इस मंदिर के सामने बैठ कर कोई भी एक चित्त से सब स्वरूपों को याद करके स्वामिनारायण की धुन करें, तो उसके मन में जो भी संकल्प या जो कुछ भी बाधा दूर करने की भावना हो, वो महाराज साकार करें और उसे कष्ट से मुक्त करके इसी जीवन में अक्षरधाम का सुख लेता कर दें, यही प्रार्थना...

आरती के बाद अमदावाद के पू. मेहुलभाई-पू. धरती भाभी ठक्कर ने अक्षरज्योति की साधक बहन



पू. नित्या दीदी को अपनी दिव्य बेटी बना कर उनका पूजन किया। तत्पश्चात् सबने प्रसाद लिया और अपने ठहरने के स्थान पर गये।

14 दिसंबर को नाश्ता करने के बाद प.पू. गुरुजी, संत, सेवक, कुछ बहनें व कुछ भक्तों के साथ ‘अबू धाबी’ के ‘शेख जायेद ग्रांड मस्जिद’ देखने गये। गुरुहरि काकाजी के मुख से कई बार एक phrase सुना है—‘When in Rome, Do as the Romans Do.’ सो, प.पू. गुरुजी ने यहाँ अरबी देश का पारंपरिक साफ़ा ‘कुफियेह’ पहन कर अद्भुत स्मृति दी। बहुत ही सुंदर नकाशी, बहुमूल्य पत्थरों से सुसज्जित मस्जिद का वातावरण शांतिमय था। एक स्थान पर वहाँ के **राजनेता शेख नहयान बिन मुबारक** अल नहयान के साथ प्रगट ब्रह्मखलप महंतस्वामीजी महाराज की मूर्ति का दर्शन भी किया।

दिल्ली मंदिर से आत्मीयता से जुड़े मुंबई के पू. सुधीरभाई-पू. नीता बहन शाह के बेटे, पू. प्राची शाह पंडया के भाई पू. तेजस-पू. अदिति शाह के घर दोपहर के प्रसाद के लिये पहुँचना था, लेकिन मस्जिद देखने में काफ़ी समय लगा, सो करीब 4:30 बजे उनके घर पहुँचे और प.पू. गुरुजी के प्रति अतिशय प्रीति का दर्शन यह हुआ कि प.पू. गुरुजी का ऐसा कार्यक्रम जान कर, पू. विश्वास पंडयाजी खास एक दिन के लिये मुंबई से यहाँ आये थे। उनकी भक्ति देखकर सबका हृदय गदगद हो गया। दूसरी ओर, पू. तेजस-पू. अदिति ही केवल प.पू. गुरुजी की प्रतीक्षा नहीं कर रहे थे, वरन् उन्होंने अपने जिन मित्रों को प.पू. गुरुजी के दर्शन हेतु बुलाया था, वे सभी प्रेमभरे धैर्य से राह देख रहे थे, सबकी ऐसी भावना के प्रति सबका दिल नतमस्तक हो गया। यहाँ पर धुन-भजन करके, प्रसाद लेकर प.पू. गुरुजी ने पू. तेजस को एवं प.पू. दीदी ने पू. अदिति को स्मृति भेंट दी और फिर पवई मंदिर से जुड़े पू. अनिल साहोर के घर के लिये प्रस्थान किया। पू. अनिल साहोरजी के घर पहुँचे, तो उन्होंने व उनकी पत्नी पू. पूनमजी तथा परिवार ने प.पू. गुरुजी, संतों, सेवकों व बहनों का ऐसे भाव से सत्कार किया, मानो प.पू. दिनकर अंकल, प.पू. भरतभाई व प.पू. वशीभाई ही आये हों! सहज ही गुरुहरि काकाजी महाराज के सर्वदेशीय सिद्धांत का दर्शन हो गया और अंतर से प्रार्थना हुई कि हे काकाजी, आपने अपने बच्चों से जो अपेक्षा की है—जो भरोसा रखा है, उस पर हम खरे उतरें! यहाँ पर भी प्रसाद के रूप में साहोर परिवार का भाव ग्रहण करके प.पू. गुरुजी ने दुबई-पू. परिमलभाई के घर के लिये प्रस्थान किया। **अबू धाबी** में बन रहे **BAPS मंदिर** का दर्शन करने जाने की प.पू. गुरुजी की बहुत इच्छा थी, लेकिन **14 फरवरी 2024** को उसका उद्घाटन होने के कारण वहाँ ख़बू ज़ोर-शोर से निर्माण कार्य चल रहा था, सो वहाँ नहीं जा पाये।

15 दिसंबर को पू. परिमलभाई के घर से नाश्ता करने के बाद प.पू. गुरुजी मुक्त पू. सुरेशभाई के बड़े भाई पू. दिनेशभाई के घर गये। यहाँ धुन-भजन करके प्रसाद लिया और फिर प.पू. गुरुजी एवं कुछ मुक्त पू. राकेशभाई शाह के भाई पू. मनीषभाई-पू. दर्शिनी भाभी के घर पधरामनी के लिये गये। प.पू. गुरुजी अल्पाहार लेने के पश्चात् पू. परिमलभाई के घर लौटे और थोड़ा आराम



किया। साथं 6:30 बजे पू. कपिलभाई के घर महापूजा का आयोजन था। पू. कपिलभाई की पत्नी पू. हेमा भाभी के साथ अक्षरज्योति की बहनों ने खूब ही भक्तिभाव से फूलों की रंगोली और दीयों से सजावट की थी। उनका पूरा घर रोशनी से जगमगा रहा था। प.पू. गुरुजी के आगमन पर सबने स्वामिनारायण धुन करते हुए पुष्प वर्षा से उनका स्वागत किया। पू. कपिलभाई ने अपने इश्तेदारों एवं मित्रों को भी महापूजा एवं प.पू. गुरुजी के दर्शन का लाभ लेने के लिये आमंत्रित किया था। दिल्ली मंदिर एवं गुरुहरि काकाजी महाराज से जुड़े पुराने सत्यांगी अक्षरनिवासी पू. विजयभाई-पू. ऊषा बहन संपत की बड़ी बेटी पू. अंजू भी अपने पति पू. जयेशभाई के साथ दर्शन करने शारजाह से आई थी। सालों के बाद वे प.पू. दीदी व सबसे मिल कर खूब भावुक हो गईं। महापूजा संपन्न होने के बाद प.पू. गुरुजी ने आशीष वर्षा करी—

...यहाँ जो-जो विराजमान हैं, कपिलभाई का संबंध जगत में जिस-जिस परिवार से हो, वे सब संबंध वाले भी सुखी, समृद्ध और संपत्तिवान हों, यही सबसे बढ़िया आशीर्वद हैं। इससे आगे हम किसी को कोई आशीर्वद दे भी नहीं सकते। हर प्रकार से हमारे जीवन में सुख, जाहोजलाली और आनंदोत्सव बना रहे। प्रभु के संबंध से हम इसे बरकरार रखें, यही आज के दिन प्रार्थना-आशीर्वद हैं।

तदोपरांत प.पू. गुरुजी ने पू. कपिल भाई को एवं प.पू. दीदी ने पू. हेमा भाभी को स्मृति भेंट दी। पू. कपिलभाई द्वारा आयोजित प्रसाद सभी ने लिया। प्रसाद के बाद आनंदविभोर होकर, प.पू. गुरुजी के सम्मुख भाइयों ने एवं प.पू. दीदी के सम्मुख बहनों-भाभियों ने गरबा किया और अपने ठहरने के स्थान पर गये।

प.पू. गुरुजी अकसर कहते हैं कि हम सब पूर्व के मुक्त हैं, इसलिये एक अपनेपन से जुड़ जाते हैं। पू. कपिलभाई ने आज इसी बात का एहसास कराया। प.पू. दीदी के साथ अक्षरज्योति की कुछ बहनें इनके घर ठहरी हुई थीं। महापूजा की तैयारियाँ कराते हुए एक बहन ने सहज ही उनसे कहा—**हमारे यहाँ आपका स्वागत है।**

तो, तुरंत ही हँसते हुए पू. कपिलभाई बोले—**हाँ, हम guest हैं और आप host हो, ये अक्षरज्योति ही है।**

सच, वे जिस भाव से यह कह रहे थे, उससे एहसास होता था कि ये बात मज़ाक में नहीं, दिल से कह रहे हैं। वाकई पूर्व के संबंध के बिना ये संभव ही नहीं है।

16 दिसंबर की सुबह प.पू. गुरुजी पू. परिमलभाई व पू. कपिलभाई के Office गये। वहाँ प.पू. गुरुजी ने धुन करवाई और फिर सहज ही पू. परिमलभाई की सुपुत्री पू. ऋचा को गुरुहरि काकाजी महाराज के हस्ताक्षर वाला चांदी का सिवका आशीर्वाद रूप सेवक से भिजवा कर कहलवाया—

‘कोई भी डर आए तो दीदी को याद करना, वो वहाँ प्रगट हो जायेंगी। तुम्हें पता भी लगेगा कि दीदी आ गई...’



इसी प्रकार, पू. परिमलभाई एवं पू. कपिलभाई को व्यापार की सूझा देते हुए कहा—
‘कभी भी लंबी छलाँग नहीं मारना। जो भी क्रिया करो, वो काकाजी को याद करके दो मिनिट भजन करके आरंभ करो।’

यहाँ से प.पू. गुरुजी पू. परिमलभाई के घर आये, दोपहर का प्रसाद लिया और आराम में गये। साथ 5:00 बजे ‘Dubai Frame’ गये। कुछ भक्त आज 16 तारीख को भारत से दुर्बई आने वाले थे, वे भी यहाँ पहुँच गये थे। सब प.पू. गुरुजी के साथ 150 मीटर की ऊँचाई वाले ‘Dubai Frame’ के Top पर पहुँचे। यहाँ पर glass floor बना हुआ है, जिसके ऊपर खड़े होकर नीचे का नजारा दिखाई देता है। कड़ियों को इतनी ऊँचाई से नीचे देखने में डर लगता है या घबराहट होती है। सो, ऐसे ही पू. परविंदर (पिन्नी) और पू. नक्षत्र को डर लग रहा था। तो, इन दोनों का डर निकालने के लिये प.पू. गुरुजी ने इन्हें glass floor पर चलने के लिये कहा और खयं इनका हाथ थामा। यह दृश्य बहुत ही मार्मिक था, मानो एक गुरु अपने शिष्य को अध्यात्म मार्ग पर या एक पिता अपने एक वर्षीय पुत्र की उंगली पकड़ कर उसे चलना सिखाता है, वैसे ही प.पू. गुरुजी इन दोनों मुक्तों को जीवन की अद्वितीय स्मृति दे रहे थे और साथ ही भजन की इस पंक्ति का एहसास करा रहे थे— **पल पल तेरे साथ मैं रहता हूँ, डरने की क्या बात जब मैं बैठा हूँ...**

बाद में भावविभोर पू. परविंदर ने इस खानुम्रव को याद करते हुए बताया— **गुरुजी से मेरा नजदीक का interaction नहीं हो पाता, लेकिन मुझे यह ख्याल है कि वे मेरी care भी करते हैं।** गुरुजी अपने साथ मुझे दुर्बई ले जाने के लिये बहुत excited भी दिखाई दिये और इस trip दौरान मेरे मन में इच्छा थी कि गुरुजी के साथ की मुझे कोई स्मृति मिले, तो यह मेरे जीवन की सबसे बड़ी स्मृति बन गई!

‘Dubai frame’ से प.पू. गुरुजी कुछ मुक्तों के साथ दिल्ली एवं पवर्झ मंदिर से जुड़े **पू. मनोज - पू. तरुणा (शीनू) शर्मा** के दामाद पू. आशिष-बेठी पू. योशिका के घर पधरामनी के लिये गये और फिर यहीं से ‘Harbour Marina’ पू. पियुषभाई के yacht (नौका) पर गये। सभी हरिभक्त यहाँ इकट्ठे हो गये थे। पू. राकेशभाई-सेवक पू. विश्वास ने भजन गाये। पू. पियुषभाई-पू. पूर्वी भाभी ने सबके लिये Yacht पर ही प्रसाद की बहुत अच्छी व्यवस्था की थी। प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में दुर्बई की रोशनी का नजारा तो देखा, लेकिन अंतर्मन तो यही कहता था कि प्रगट प्रभु के तेज के समक्ष तो सारा जग ही फीका है और प्रार्थना होती थी— हे गुरुजी, रात के अंधकार में कृत्रिम रोशनी से पूरा दुर्बई जगमग दिखता है और आप तो सूर्य समान हैं, तो अपनी किरण छारा हमारे भीतर से वृत्तियों रूपी अंधकार को मिटा कर परब्रह्म के प्रकाश से भर देना। Yacht की ride पूरी होने के बाद सब अपने ठहरने के स्थान पर गये।

17 दिसंबर को सभी नाश्ते के बाद City Mall, Desert safari के लिये गये। इस दौरान प.पू. गुरुजी पू. परिमलभाई के घर ही रहे, दोपहर का प्रसाद लिया और साथ 6:30 बजे के करीब प.पू.



गुरुजी संतभगवंत साहेबजी के अनन्य आश्रित पू. नयनभाई-पू. राजश्री बहन पटेल के घर गये। इस दंपति के जीवन में संतभगवंत साहेबजी ने कैसा निवास किया है, वो उनके वर्तन से झलक रहा था। उन्होंने प.पू. गुरुजी का ऐसा ही सत्कार किया, मानो उनके रूप में संतभगवंत साहेबजी ही आये हों। प.पू. गुरुजी को पू. नयनभाई ने और पू. राजश्री बहन ने प.पू. दीदी को हार आर्पण किया। पू. राकेशभाई एवं सेवक पू. विश्वास ने भजन प्रस्तुत किये। Internet के माध्यम से संतभगवंत साहेबजी ने निम्न आशीर्वाद दिया—

...खूब आनंद हुआ कि हमारे राजश्री बहन और नयन कुमार के घर प.पू. गुरुजी, संतों, प.पू. आनंदी दीदी संत बहनें सब भक्त पधारे। नयन कुमार और राजश्री बहन पूर्व के जबरदस्त प्रभु की कृपा वाली आत्मायें हैं। थोड़े समय से सत्संग हुआ है, मगर उनके हृदय में जो भक्ति है उसका सहज ही दर्शन उनसे मिलने पर होता है। गुरुजी पधारे हैं, उसका नयन कुमार, राजश्री बहन, सिद्धार्थ और साथ में आशीष, धवल और दुबई मंडल के सभी अक्षर मुक्तों को उत्साह है। सच में गुरुजी और संतगण खूब कृपा करके पधारे। गुरुजी से ख्रास प्रार्थना है कि आशीर्वाद देना कि हमारे नयन कुमार की तवियत खूब अच्छी रहे। भक्ति में जितना ओत-प्रोत हैं, उससे विशेष रहें। राजश्री बहन तो सच में खूब भक्तिमय हैं। अगर देखें तो जब भजन-कीर्तन चल रहा हो, तब प्रभु की मूर्ति में लय-लीन होकर पूरा आनंद लेती हैं। कथा-वार्ता का भी उतना ही इश्क है। धुन, सेवा, भक्ति खूब उत्साह और उमंग से दोनों करते हैं। हम जब दुबई आये थे, तब उनकी भक्ति और महिमा खूब स्पर्श हुई। गुरुजी पधारने वाले थे, इसलिये मुंबई से अपना दूर ख्रास कट-शार्ट करके आज सुबह ही वे घर पहुंचे। नयन कुमार, सिद्धार्थ, राजश्री बहन और समग्र दुबई मंडल के भक्तों से भी यही कहना है कि सच में गुरुजी और संतों, आनंदी दीदी और संत बहनें भी अद्भुत साधु-संत हैं, योगी बापा के अनन्य कृपापात्र पुरुष हैं। योगी बापा की अपरंपार कृपा दृष्टि में गुरुजी आ गये। उन्हें साधु नहीं होना था, पर सोनाबा के हेत के वश, दाढ़काका के योग में आकर बापा की आज्ञा आत्मसात् करी और महंतस्वामी के साथ 1961 में गढ़ा में दीक्षा ली। खूब genius और बुद्धिशाली साधु हैं। गुणातीतानंदस्वामी ने कहा है कि हमें बुद्धिशाली खूब पसंद हैं। बुद्धिशाली क्यों? क्योंकि उन्हें अपनी बुद्धि से सत्य-असत्य के विवेक का ख्याल पड़ता है। सच क्या और झूठ क्या? पर, सत्य एक परमात्मा है। योगीजी महाराज साकार परमात्मा का खरूप हैं। यह गुरुजी ने बापा के हाजिरी में ही सार्थक कर लिया और महंतस्वामी के साथ दादर में रहकर संस्कृत पढ़ी। फिर सोखड़ा आये, सांकरदा रहे और फिर दिल्ली आकर निवास किया। जब वे दिल्ली आये, तब कुछ नहीं था। शून्य में से मंदिर और पूरे समाज का सर्जन किया। संतों, सेवकों, संत बहनों और भक्तों का समाज तैयार किया। तो, सच में योगी बापा के कृपा पात्र बनकर प्रभु रूप, काका रूप बने हैं। ऐसे संत आपके यहाँ पधारे, हम सच में धन्य हो गये। नयन कुमार, राजश्री बहन, सिद्धार्थ, धवल, मोनिका सबने गुरुजी के आने का समाचार जब से सुना, तब से उनके दिल में दर्शन, आशीर्वाद लेने और



सेवा करने का इश्क था, वो पूरा हुआ। तो, गुरुजी खूब आशीर्वद बरसाना कि इनकी भक्ति बढ़े। श्रीमंत हैं, समृद्धि तो खूब है। पर, विशेष ये है कि समृद्धि के बावजूद उतनी ही भक्ति भी होना। इसलिये आंतरिक समृद्धि भी उनके पास खूब है। विशेषतः वे बढ़ाते जायें, एकता है पर और बढ़े। योगी बापा हमेशा कहते—संप, सुहृद्भाव, एकता, प्रभु की अपार है प्रसन्नता। तो, राजश्री बहन, नयन कुमार और समग्र दुबई मंडल के भक्तों में संप, सुहृद्भाव एकता से हिल-मिल कर जो सत्संग का कार्य शुरू हुआ है, वो खूब सुंदर रीति से हो। इसी तरह से सेवा का लाभ मिलता रहे, ऐसी गुरुजी के चरणों में प्रार्थना है। राजी रहना, खूब-खूब आशीर्वद बरसाना कि उनका ये घर मंदिर रूप बना रहे और फिर से प्रार्थना कि हमारे नयन कुमार की तबियत खूब अच्छी रहे, ऐसे आशिष बरसाना और प्रार्थना करना। 19 दिसंबर को हमारी राजश्री बहन का जन्मदिन है। सो, advance में उन्हें अश्विनभाई, रतिकाका, सभी व्रतधारी संतों, भाविशा, अमी, सभी बहनों और सभी गृहस्थ भक्तों की ओर से खूब-खूब भावभरे अभिनंदन और जय श्री स्वामिनारायण...

राजश्री बहन को प्रभु खूब बल देते हैं और वे प्रभु के आसरे रहकर खूब भक्ति करते हैं, इसलिये विशेषतः बलवान हुए हो। सदा ताजगी से भरे रह कर दुबई के सत्संग का कार्य संभाला है। तो, global सत्संग के कार्य में प्रभु आपको खूब-खूब बल दें। गुरुजी और आनंदी दीदी ऐसे आशीर्वद दें कि जीवन की धन्यता का पूरा का पूरा आनंद आप सबको हमेशा मिलता रहे। समग्र मंडल तन, मन, धन और आत्मा से खूब-खूब सुखी और भक्तिमय बना रहे, ऐसी प्रभु के चरणों-गुरु के चरणों और गुरुजी व संतों के चरणों में हम सबकी प्रार्थनायें हैं...

तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी ने निम्न आशिष देते हुए कहा—

आधुनिक टेक्नोलॉजी के उपयोग से कितनी दूर से साहेब ने आशीर्वद बरसाये। साहेब यानि महिमा का मूर्तिमान स्वरूप! उन्हें भक्तों की खूब महिमा, इसलिये वे भगवान के अखंड धारक बन गये। साहेब हमारे गुणातीत समाज का एक ध्रुवतारा हैं, जो मोक्ष की दिशा हमेशा दिखाते हैं। तो, नयन कुमार-राजश्री का कुटुंब खूब भाग्यशाली कहा जाये कि साहेब के जोग में है। साहेब इन्हें अपना निजी मानते हैं। इससे विशेष कोई लाभ जीवन में हो नहीं सकता है कि भगवान धारक संत हमें अपना कहें, मानें और हमेशा हमारे साथ-हमारे हृदय में हों और उनकी प्राप्ति हो। भगवान तो हरेक में हैं, पर साक्षी रूप में हैं। वे ही मूर्तिमान आज साहेब हैं, उनका स्वरूप हैं। ऐसा मान के उन्हें अखंड हृदय में याद करते रहें, देखते रहें और उनके मार्गदर्शन के मुताबिक जीवन जीते रहें। नयन कुमार का परिवार भक्तों की सेवा-भक्ति में जिस प्रकार ओतप्रोत रहता है, वो ही भगवान का एक बड़ा तोहफा है। इसलिये इस परिवार का खूब-खूब धन्यवाद। अनंत जन्मों के खूब पुण्य उदय हों, तब ऐसा जोग मिले और उससे विशेष कि ऐसी बुद्धि मिले कि भक्तों की महिमा समझ कर उनकी हम सेवा भक्ति करते रहें। नई कोई बात करनी नहीं है। साहेब के साथ का संबंध दिन



प्रतिदिन एकदम घनिष्ठ होता जाये-बढ़ता जाये, यही आज के दिन पर प्रार्थना। काकाजी योगीजी महाराज के अनमोल कृपापात्र थे। उन्होंने योगीजी महाराज की जो महिमा गाई, उससे पूरा समाज तैयार हुआ। जिस तरह उन्होंने पूरा गुणातीत समाज खड़ा कर दिया, उसी प्रकार दुर्बर्फ के अंदर नयन कुमार के परिवार ने जो शुरुआत करी है, वो दिन प्रतिदिन त्वरित गति से बढ़ता जाये और सत्संग के एकत्र का हरेक को अनुभव होता जाये कि वही जीवन में शांति और आनंद के कारण है। वर्ता तो दुनिया के ज्वार-भाटे में हम कहाँ फंस जायें, उसका ख्याल भी ना पड़े। ऐसे संत मिले हैं, वे हमारा सब संभाल लेंगे, हमें उबार लेंगे और भगवान की गोद में बिठा देंगे। इस मार्ग पर ये परिवार चला है, इसलिये उन्हें खूब-खूब धन्यवाद।

आशीर्वाद के बाद श्री ठाकुरजी के थाल एवं **19 दिसंबर** को पू. राजश्री बहन के जन्मदिन निमित्त केक का प्रसाद लेकर, फिर पू. पियुषभाई के आग्रह पर रात को करीब 9:30 बजे प.पू. गुरुजी भक्तों को उनके घर लेकर गये और धुन-भजन करके सबने आइसक्रीम का प्रसाद लिया। यहाँ से प.पू. गुरुजी ने पू. कपिलभाई के घर जाने के लिये कहा। सो, पू. कपिलभाई के घर रात को 11:30 बजे आलूपोहा और बादाम पिस्ते का दूध बनवा कर स्वयं लिया और सभी को खिला-पिला कर आनंद कराया। यूं देर रात तक प.पू. गुरुजी पथरामनी करके रात को करीब 1:00 बजे पू. परिमलभाई के घर लौट कर आराम में गये।

18 दिसंबर को नाश्ते के बाद प.पू. गुरुजी भक्तों के साथ **Miracle Garden** गये। एक घंटा वहाँ सबको स्मृतियाँ देकर ‘सरवणा भवन’ आये, वहाँ दोपहर का भोजन करके **Global Village** गये। यहाँ भी करीब डेढ़ घंटा भक्तों के साथ आनंद करके पू. परिमलभाई के घर लौटे। भक्तों के लिये प.पू. गुरुजी का ऐसा परिश्रम देख कर आँखों में आसूँ आ जाते हैं कि वे तो हमें लाड़ लड़ाने, स्मृतियाँ देने में अपनी तनिक भी परवाह नहीं करते, लेकिन जब हमारा मन प्रबल होता है, तब उनसे मिली ये सारी स्मृतियाँ गौण हो जाती हैं और जैसे कि गुरुहरि काकाजी महाराज कहते—‘**न्यालकरण कब तेलकरण हो जायें...**’—ऐसी हमारी दशा हो जाती है। तो, हे गुरुजी! Please, Please, Please—कृपा करके, कृपा करके अब हमें हमारे मन के चंगुल से छुड़ा ही दीजिए, ऐसी प्रार्थना।

19 दिसंबर की सुबह पू. परिमलभाई के घर प.पू. गुरुजी पूजा करने विराजमान हुए। आज पू. नवीनभाई शाह के पौत्र, पू. आशीष शाह के सुपुत्र और प.पू. गुरुजी के शब्दों में—**Darling of Satsang** पू. नक्षत्र का 17वाँ जन्मदिन था। समय तो मानो पंख लगा कर उड़ गया, क्योंकि ऐसा लगता है अभी तो पू. नक्षत्र का जन्म हुआ था और... वह इतना सयाना हो गया कि अपने जन्मदिन निमित्त प.पू. गुरुजी के श्रीचरणों में उसने 17 प्रार्थना अर्पित कीं, जिसका मुख्यतः निम्न भाव था—
* मंदिर में दास का भी दास बना कर सेवा कराना और अपने आपको सबसे छोटा मानूँ।
* संत से ऐसा लगाव कर्लूँ कि उनकी हर बात का स्वीकार कर लूँ।
* मुक्तों में अखंड निर्दोषबुद्धि रखूँ और उनको अपने माथे का मुकुट मानूँ।



सच, पू. नक्षत्र की प्रार्थना सबको अंतर्दृष्टि करने के लिये प्रेरित करती है। पू. नक्षत्र जब पाँच दिन का था, तब से प.पू. गुरुजी उसे महापूजा में बुलाते। तब एक बार प.पू. गुरुजी ने बताया भी था कि शब्द से हमारा देह बनता है। सत्यंग की गहरी बातों से युक्त पू. नक्षत्र की प्रार्थनाओं से एहसास होता है कि हम सोचते हैं कि छोटे बच्चे नासमझ होते हैं, पर वे सब कुछ समझते हैं। सच, प.पू. गुरुजी ने बच्चों में कैसा सिंचन किया है, वो इसी से पता चलता है। मुमुक्षु जीव ही छोटी आयु में ऐसी प्रार्थना कर सकता है, क्योंकि ये बातें तो तलवार की धार पर चलने जैसी हैं। पर, ये बात भी सत्य है कि गुणातीत ज्ञान में आयु से कोई छोटा या बड़ा नहीं होता। प्रगट प्रभु के साथ का संबंध और उनकी प्रसन्नता की लगन महत्वपूर्ण होती है। प.पू. आनंदी दीदी मुक्तों को कई बार दृष्टांत देती हैं कि समंदर से पानी भरने के लिये हम ज्लास, मटका या बाल्टी लेकर जायें, तो बर्तन के अनुसार ही उसमें पानी आयेगा। इसी प्रकार, महासागर समान गुणातीत विभूति की सेरेषाया हम पर है, वे तो हमें देने के लिये बैठे ही हैं, लेकिन यह हम पर निर्भर है कि हम उनसे कितना प्राप्त कर पाते हैं! पूजा में धुन करने के बाद, दोपहर को प.पू. गुरुजी कुछ मुक्तों के साथ पू. पियुषभाई के घर श्री लड्डू गोपालजी के दर्शन हेतु गये और फिर प्रसाद लेकर पू. परिमलभाई के घर लौटे। रात को पू. परिमलभाई के घर पर प.पू. गुरुजी की निशा में, 100 से भी अधिक भक्तों की हाज़िरी में पू. नक्षत्र का जन्मदिन मनाते हुए केक का प्रसाद लिया और पू. सुरेशभाई के घर लॉन में विराजमान होकर प.पू. गुरुजी ने आइसक्रीम का प्रसाद सबको दिया। तत्पश्चात् धुन करके प.पू. गुरुजी पू. परिमलभाई के घर आराम में गये।

20 दिसंबर को कई मुक्त खरीदारी के लिये गये। कईयों ने सामान की packing शुरू की, क्योंकि अगले दिन दिल्ली के लिये रवाना होना था। प.पू. गुरुजी पूरे दिन पू. परिमलभाई के घर रहे। रात को पू. परिमलभाई प.पू. गुरुजी को Bluewaters Island दिखाने ले गये और देर रात को घर लौटे।

21 दिसंबर की सुबह पू. परिमलभाई के घर के नज़दीक रहते पू. सुरेशभाई, पू. कपिलभाई, पू. पियुषभाई, पू. दिनेशभाई का परिवार एवं अन्य कई हरिभक्त सहकुटुंब प.पू. गुरुजी के दर्शन हेतु आये। दुबई के इन सभी हरिभक्तों की सेवा, भावना, भक्ति का फल देते हुए प.पू. गुरुजी ने सेवक से भाभियों को ‘अक्षत’ भिजवाते हुए आशीष वर्षा करी—

‘बच्चे बीमार नहीं होंगे, तुम्हारे पति दीर्घयु होंगे, भंडार भरा रहेगा।’

तत्पश्चात् धुन करने के बाद, नाश्ता करके सब एयरपोर्ट की ओर रवाना हुए। दुबई के भक्तों का स्नेह ऐसा था कि Airport के अंदर वे जहाँ तक जा सकते थे, वहाँ तक आये और भावभरे अश्रुओं से विदा किया। सायं करीब 5:00 बजे दुबई से उड़ान भर कर, मातृभूमि भारत के समयानुसार सायं करीब 8:30 बजे दिल्ली पहुँचे। Airport पर कुछ भाइयों ने प.पू. गुरुजी को और कुछ भाभियों ने प.पू. दीदी को हार अर्पण करके स्वागत किया। तत्पश्चात् मंदिर के नज़दीक जब

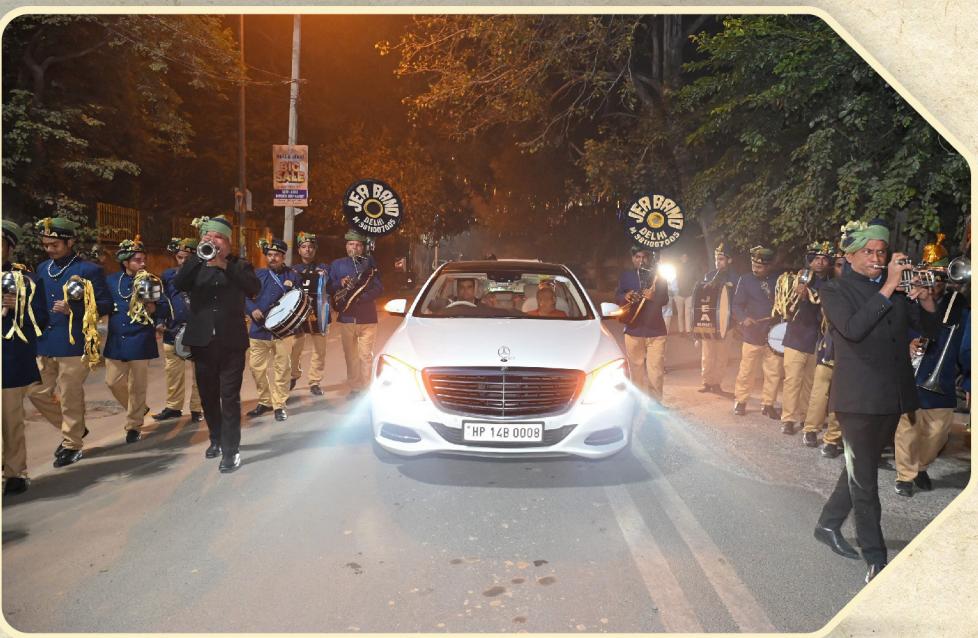


काकाजी लेन पर प.पू. गुरुजी की गाड़ी पहुँची, तो वहाँ बैंड-बाजे वाले धुन बजा रहे थे और सङ्क के दोनों तरफ खड़े हरिभक्त उत्साहपूर्वक सहजानंदस्वामी महाराज की जय बुला कर स्वागत कर रहे थे। फिर मंदिर के द्वार पर पवर्झ से आये हुए पू. राजूभाई ठक्कर ने आरती करके प.पू. गुरुजी का स्वागत करके हार अर्पण किया। पू. निष्ठा दीदी एवं पू. दीक्षा दीदी ने आरती करके प.पू. दीदी को हार अर्पण किया। मंदिर के प्रवेश द्वार से लेकर जेतलपुर cabin की lift तक छोटे-छोटे बल्बों की लड़ियों (fairy lights) की चादर बनाई थी और नीचे red carpet लगाया था। आतिशबाजियों की गूंज से पूरा मंदिर हर्षोल्लास से भरा था। मंदिर को दीयों, कृत्रिम रोशनी एवं फूलों के तोरण से सजाया था। प्रांगण में सुसज्जा करके ‘कुफियेह’ पहने हुए प.पू. गुरुजी की मूर्ति लगाई थी और लिखा था— **We Love Guruji, Welcome Guruji...** बैंड-बाजे की धुन पर नाचते हुए सभी के नेत्रों में खुशी के अश्रु थे, क्योंकि दस दिन के बाद मंदिर के प्राण लौटे थे। प.पू. गुरुजी एवं मुक्तों के स्वागत हेतु पू. विजय शर्मा, पू. गुलशन, पू. अभिषेक मेहरा, पू. गौरव शर्मा के नेतृत्व में जिन-जिन मुक्तों ने सेवा की, वह खूब सराहनीय कही जाये। क्योंकि Decoration की सेवा वाले मुक्त तो दुबई गये थे, फिर भी इन मुक्तों ने सिर्फ प.पू. गुरुजी को राज़ी करने की भावना से कल्पना परे की जो भक्ति अदा की उसके लिये सभी नतमस्तक हुए!

ब्रतोत्सवसूची

- (1) दि. 6.3.'24, बुधवार — एकादशी, ब्रत
- (2) दि. 7.3.'24, गुरुवार — गुरुहरि काकाजी महाराज का स्वधामगमन दिन
- (3) दि. 8.3.'24, शुक्रवार — महाशिवरात्रि, ब्रत
- (4) दि. 11.3.'24, सोमवार — प.पू. गुरुजी की 87वीं प्राकट्य तिथि
- (5) दि. 13.3.'24, बुधवार — प.पू. गुरुजी का 87वाँ प्राकट्य दिन
- (6) दि. 20.3.'24, बुधवार — एकादशी, ब्रत
- (7) दि. 24.3.'24, रविवार — होली, अनादि महामुक्त भगतजी महाराज की जयंती
- (8) दि. 25.3.'24, सोमवार — धुलेन्डी, संतभगवंत साहेबजी की प्राकट्य तिथि
- (9) दि. 5.4.'24, शुक्रवार — एकादशी, ब्रत
- (10) दि. 9.4.'24, मंगलवार — चैत्र नूतन वर्षारंभ, गुड़ी पड़वा
- (11) दि. 13.4.'24, शनिवार — बैसाखी, दिल्ली-अशोकविहार मंदिर का शिलान्यास दिन
- (12) दि. 17.4.'24, बुधवार — रामनौमी, भगवान स्वामिनारायण जयंती
- (13) दि. 19.4.'24, शुक्रवार — एकादशी, ब्रत
- (14) दि. 23.4.'24, मंगलवार — पूर्णिमा, हनुमान जयंती

21 दिसंबर—य.पू. गुरुजी के दुबई से दिल्ली आगमन पर भावविभीर भक्तगण...



लौट आये भक्तों के प्राणाधार...





R.N.I. 28971/77 (Air Mail)

'Bhagwatkripa' Bimonthly Magazine - Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :— Printer, Publisher, Editor : SHRI PRABHAKER RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI

'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281

Printed at : D.K. FINE ART PRESS (P) LTD., A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052